₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

सितम्बर 2013

- इस्लामी परिवार : प्रेम का ख़ज़ाना
  —डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- भौतिकवाद और इस्लाम
  —मौलाना जलालुद्दीन उमरी
- वर्तमान में हज़रत मुहम्मद(स॰) की शिक्षाएं
  —डॉ॰ मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी
- अपराध रोकने में समाज की भूमिका
  —मुहम्मद ख़ुर्शीद आलम

SERVICES OFFERED AT

Prop. : Yacub Shaikh

my Idea
Authorised Centre

PRODUCTS

- Postpaid Connection
- Attractive tariffs on Individual & Group connections
- Prepaid Connection
- Blackberry Connection
- 3G Net Setter
- VAS products & GPRS Packs
- E-Recharges
- Prepaid to Postpaid Migration
- Postpaid to Prepaid Migration

SERVICES

- Postpaid bill payment-Cash/Credit Card/Cheque
- Prepaid Recharge
- Service change requests
- Queries/Request/Complaints Resolution
- Postpaid Bills on E-mail
- Sim Exchange-Postpaid & Prepaid

IMPACT MOBILE SERVICE

E-10, Saldanha Business Towers
Nr. Court Junction, Altinho Mapusa-403 507

Also repairs Mobiles out of Warranty

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 3 सितम्बर 2013

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बचाओ अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर होंगे, जिस पर कठोर स्वभाव के सख़्त पकड़ करने वाले फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो कभी अल्लाह के आदेश की अवहेलना नहीं करते और जो आदेश भी उन्हें दिया जाता है उसका पालन करते हैं । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

अब सीखो करना प्रेम-प्यार

हो चुके बहुत मन-भेद यहां
आओ अब मिलकर बात करें
सब वैर-विरोध भस्म कर दें
ना-समझी पर आघात करें
तुम मुस्लिम हो इस भारत के
मैं हिन्दू हूं इस भारत का
जब रहना हमको साथ-साथ
कुछ कारण नहीं अदावत का
मुस्लिम पुरखे, हिन्दू पूर्वज
दोनों ने जो कुछ किया
अब गये वक़्त से क्या मतलब
वह वक़्त पूर्णतः चला गया
तेरे रसूल अरु पैग़म्बर
मेरे ऋषि-मुनि अवतार सभी
मानव उत्थान, विकास सूत्र
हमको समझाते रहे सभी
पैग़म्बर या अवतार आदि
सबके ही प्रिय, सम्मान्य रहे
इन महत् जनों को क्यों बांटें
दोनों ही ईशावास्य रहे
अपनी विशिष्ट आस्थाओं को
मन-अभ्यासों में रखकर भी
हमको मिलकर चलना ही है
संघर्षों का न अर्थ कुछ भी
यह देश बने सम्पन्न-सबल
पुल एक बना लें मध्यम में
दोनों तट के विकास के हित
हम यत्न करें मिल आपस में
जीवन होता जाता भारी
कठिनाई बढ़ती जाती हैं
सहयोग पूर्ण सम्यक प्रवृत्ति
जीवन को सरल बनाती हैं
देखें न परस्पर के विरोध
पथ चुनें न हम प्रतकारों का
सहकार पूर्ण होकर खोजें
आधार समान विचारों का ।

डॉ० ज्ञानचन्द्र
नयी दिल्ली



कहां क्या है ?

अब सीखो करना प्रेम-प्यार	–डॉ॰ ज्ञानचन्द्र	3
कुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
छोटे राज्यों से अधिक विकास (संपादकीय)		7
स्वाधीनता दिवस का महत्व (आपके पत्र)		9
भौतिकवाद और इस्लाम (आस्था)	–मौलाना जलालुद्दीन उमरी	13
वर्तमान दुनिया और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाएं (जीवन आदर्श)	–डॉ॰ मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी	17
धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे पर...(विचार)	–आलोक खटेड़	19
अपराध रोकने में समाज की भूमिका	–मुहम्मद खुर्शीद आलम	21
बुढ़ापा प्रसन्न रहने का समय (अभिमत)	–राज़ेन्द्र गोयल	23
बच्चों में भय की भावना पैदा न होने दें (घर परिवार)		24
मौलिकता को न छोड़िए (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	25
इस्लामी परिवार : प्रेम का ख़ज़ाना (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	26
लोक परलोक (कहानी)	–डॉ॰ सलीम ख़ां	31
लॉटरी से दूर दहिए (ज्वलंत सामयिक)	–एम॰ अब्दुल हक़	35
क्या उमस भी मोटापा लाती है ? (स्वास्थ्य चर्चा)		37
भूगर्भशास्त्री मुहम्मद इदरीसी (ज्ञान-विज्ञान)	–मौलाना सिराजुद्दीन नदवी	41
अपनाएं पर्यावरण का क्षेत्र (कैरियर)	–प्रभाष झा	43
ग़ैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता (संसाधन)	–विद्या प्रकाश	45
क्या प्रधानमंत्री बनने लायक़ हैं नरेन्द्र मोदी ? (दृष्टिकोण)	–अबरार अहमद	47
मीठा-मीठा कूल-कूल आइसक्रीम (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	49

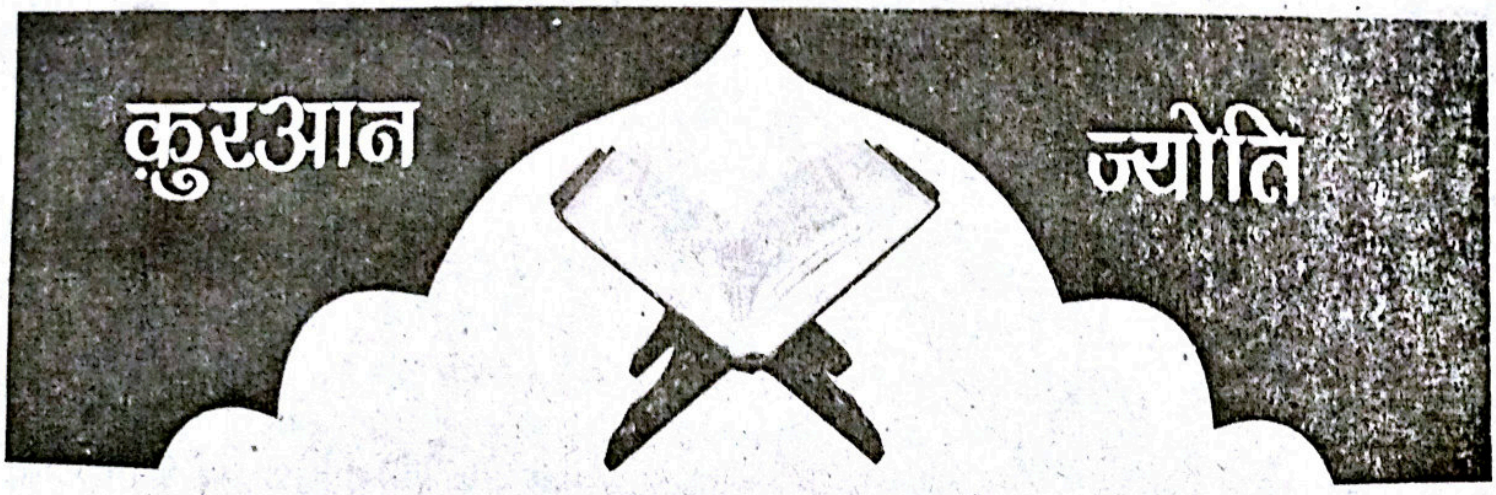

(35) एक दिन आएगा कि इसी सोने-चांदी पर जहन्नम की आग दहकायी जाएगी और फिर इसी से उन लोगों की पेशानियों और पहलुओं और पीठों को दाग़ा जाएगा—यह है वह ख़ज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था, लो अब अपनी समेटी हुई दौलत का मज़ा चखो ।

(36) वास्तविकता यह है कि महीनों की संख्या जब से अल्लाह ने आकाश और धरती को पैदा किया है, अल्लाह के लेख्य में 12 ही है ।[34] और उनमें से चार महीने हराम (आदर के) हैं [34अ], यही ठीक विधान है, इसलिए इन चार महीनों में अपने ऊपर अत्याचार न करो ।[35] और मुशरिकों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं[36], और जान रखो कि अल्लाह डरने वालों ही के साथ है ।

—क़ुरआन, 9 : 35,36

---

34. अर्थात जब से अल्लाह ने चांद, सूरज और धरती को पैदा किया है, उसी समय से यह हिसाब भी चला आ रहा है कि महीने में एक ही बार चांद 'हिलाल' (पहली का चांद) बनकर उदय होता है और इस हिसाब से साल के 12 महीने ही बनते हैं। यह बात इसलिए फ़रमाई गयी है कि अरब के लोग नसी (महीने को हटाने की प्रथा) के लिए महीनों की संख्या 13 या 14 बना लेते थे, ताकि जिस हराम महीने को उन्होंने हलाल कर लिया हो, उसे साल की जंत्री में खपा सकें । इस विषय की व्याख्या आगे आती है ।

34अ. चार हराम महीनों से तात्पर्य हैं ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम हज के लिए और रजब उमरे के लिए ।

35. अर्थात जिन हितों और फ़ायदों के कारण इन महीनों में युद्ध करना वर्जित किया गया है, उनको नष्ट न करो और उन दिनों में अशांति फैलाकर अपने ऊपर अत्याचार न करो ।

36. अर्थात अगर मुशरिक इन महीनों में भी लड़ने से बाज़ न आएं तो जिस तरह वे एक होकर तुमसे लड़ते हैं, तुम भी एक होकर उनसे लड़ो । क़ुरआन की सूरा बक़रा, आयत 194, इस आयत की व्याख्या करती है ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com



अल्लाह का ज़िक्र

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है ! वे कहती हैं **एक** रात मैंने नबी (सल्ल॰) को मौजूद न पाया, तो मैं **आपको** खोजने लगी, तो क्या देखती हूं कि आप रुकूअ की **हालत** में हैं । (अर्थात नमाज़ में अल्लाह के आगे झुके हुए **हैं** ।) –या सजदे में हैं–और कह रहे हैं : "महान है तू और **प्रशंसा** तेरे लिए है, तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं ।"

और एक रिवायत में है : "मेरा हाथ आपके पांव के तलुवे पर पड़ गया । आप सजदे में थे । पांव आपके खड़े थे और आप कह रहे थे : "ऐ अल्लाह, मैं तेरी खुशी की पनाह लेता हूं तेरे क्रोध से बचने के लिए, और तेरी क्षमा की पनाह लेता हूं तेरी यातना से बचने के लिए, तेरे मुक़ाबले में तुझी से पनाह मांगता हूं, मैं तेरी प्रशंसा की गणना नहीं कर सकता, तू ऐसा है जैसा कि तूने अपनी प्रशंसा की है ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "हर प्रातःकाल तुम में से हर व्यक्ति के प्रत्येक जोड़ पर एक सदक़ा (दान एवं सत्कर्म) अनिवार्य होता है सो अल्लाह का हर महिमागान सदक़ा है और उसका हर स्तुतिगान सदक़ा है, और इसका हर निश्चयपूर्वक वर्णन कि 'अल्लाह के सिवा कोई प्रभु पूज्य नहीं' सदक़ा है, और अल्लाह की बड़ाई का हर बयान सदक़ा है, भलाई का हुक्म देना सदक़ा है, और बुराई से रोकना सदक़ा है, और दिन चढ़े की (नमाज़ की) दो रकअतें इन सबका बदल हो सकती हैं ।" –मुस्लिम

● उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया बिन्त अल-हारिस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) उनके पास से प्रातः समय बाहर गये । वे अपनी नमाज़ की जगह थीं । फिर आप दिन चढ़े लौटे, तो वे उसी तरह बैठी हुई थीं । आपने कहा : "जब से मैं तुम्हारे पास से गया हूं तुम इसी हालत में रही हो ?" उन्होंने कहा : हां । इस पर नबी (सल्ल॰) ने कहा : "मैंने तुम्हारे पास से जाकर चार सूत्र-वाक्य तीन-तीन बार उच्चारित किये हैं । यदि उन्हें उनके मुक़ाबले में तौला जाए जो तुमने दिन के आरंभ से अब तक पढ़े हैं, तो उन पर भारी पड़ेंगे जो तुमने पढ़े हैं । (वे हैं) : अल्लाह महान है, प्रशंसा उसी की है उतनी बार जितनी उसकी रचित चीज़ें हैं और उसकी अपनी खुशी के अनुसार, उसके सिंहासन के भार के बराबर और उसके शब्दों की स्याही के बराबर ।" –मुस्लिम

और उन्हीं की एक रिवायत में है : "महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार, महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर ।"

और तिरमिज़ी की रिवायत में है : "क्या मैं तुम्हें वे शब्द न सिखाऊं जिन्हें तुम उच्चारित करो । महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार । महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर ।

('रियाज़ुस्सालिहीन'

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

छोटे राज्यों से अधिक विकास

लोकसभा चुनाव जीतने की तैयारियों में अब हर पार्टी पूरे मनोयोग के साथ लग गयी है । यू॰पी॰ए॰ और कांग्रेस को अब पृथक तेलंगाना के गठन में सियासी फ़ायदा नज़र आ रहा है । कांग्रेस ने इस बाबत फ़ैसला ले लिया है, लेकिन बहुत-से विरोध एवं पेचीदगियां अभी बाक़ी हैं । पृथक तेलंगाना का ऐलान करके कांग्रेस बुरी तरह फंस गयी है । कांग्रेस में सर फुटव्वल की स्थिति बन गयी है । आंध्र प्रदेश से संबंधित कई सांसदों और विधायकों ने इस्तीफ़ा दे दिया है । इस क़दम से लगभग 12 राज्यों के गठन की मांग उठ गयी है । संसद के दोनों सदनों में बोडोलैंड की पुरज़ोर मांग से कांग्रेस के लिए नयी परेशानी खड़ी हो गयी है । इसलिए लगता है कि कांग्रेस प्रस्तावित 29वें राज्य तेलंगाना की 55 से कुछ अधिक सालों से चल रही लड़ाई को मक़ाम तक पहुंचाए बग़ैर इसे थोड़ा और विश्राम दे सकती है । वैसे भी अलग तेलंगाना के लिए विधेयक के इस मानसून सत्र में संसद से पारित होने की दूर-दूर तक कोई संभावना नहीं है । इसमें पांच से छह महीने का वक़्त लगेगा । कैबिनेट के बाद इसे मंत्रियों के समूह के पास भेजा जाएगा, जो नये राज्य के गठन में वित्तीय मसलों पर विचार करेगा । राज्य सरकार से प्रस्ताव मिलने के बाद गृह मंत्रालय कैबिनेट के समक्ष नोट प्रस्तुत करेगा । इसमें कम से कम 40 दिन का समय लगेगा । मंत्रियों के समूह की सिफ़ारिशों और सुझावों के आधार पर गृह मंत्रालय दूसरा नोट भी कैबिनेट के पास भेजेगा । इसके बाद आंध्र प्रदेश विधानसभा में इस पर प्रस्ताव पारित कराना होगा । इसके बाद प्रधानमंत्री विधेयक का मसौदा राष्ट्रपति के पास भेजेंगे । राष्ट्रपति भवन से इसे आंध्र प्रदेश विधानसभा और विधान परिषद को भेजा जाएगा । राज्य सरकार की सिफ़ारिशों के आधार पर क़ानून मंत्रालय इस पर तीसरा नोट तैयार कर कैबिनेट के पास भेजेगा । इसके बाद इसे संसद में पेश किया जाएगा । इस क़दम से सारे देश में छोटे राज्यों का मुद्दा अब उसके लिए बड़ी परेशानी बन सकता है । तेलंगाना पर मुहर के साथ ही पृथक गोरखालैंड के लिए आंदोलन शुरू हो चुका है । वहीं, विदर्भ और हरित प्रदेश के लिए सरकार के अंदर से ही आवाज़ उठने लगी है । आधा दर्जन से ज़्यादा छोटे राज्यों के लिए पहले से ही आवाज़ें उठती रहीं हैं । मायावती ने लगे हाथ अपनी सरकार के पुराने प्रस्ताव यानी उ॰प्र॰ को चार राज्यों में विभक्त करने की मांग फिर दोहरा दी है । उनकी सरकार ने 2011 में प्रदेश को पश्चिमांचल, पूर्वांचल, अवध और बुंदेलखंड में बांटने की पैरवी की थी और इस सिलसिले में एक प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेजा था । उधर तेलंगाना का समर्थन करते हुए रालोद अध्यक्ष व केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री अजित सिंह ने कहा, 'हम तो पहले से ही छोटे राज्यों के पक्ष में हैं । हम भी तो हरित प्रदेश चाहते हैं ।' कांग्रेस के नागपुर सांसद विलास मुत्तेमवार ने विदर्भ गठन की मांग उठा दी । गोरखालैंड को लेकर दार्जिलिंग उग्र हो गया है । गोरखा जनमुक्ति मोर्चा ने आंदोलन तेज़ करने का एलान कर दिया है । माकपा महासचिव प्रकाश करात ने कहा कि राजनीतिक कारणों से यह फ़ैसला लिया गया है, जिसके ख़तरनाक परिणाम होंगे । अब देश के अन्य इलाक़ों से भी ऐसी मांगें उठेंगी ।

बुंदेलखंड राज्य के लिए मुहिम चलाने वाले फ़िल्म अभिनेता से नेता बने राजा बुंदेला तो तेलंगाना राज्य बनाए जाने के फ़ैसले से ख़ासे उत्साहित हैं । नेशनल फेडरेशन फॉर न्यू स्टेट्स से जुड़े राजा बुंदेला ने कहा कि तेलंगाना राज्य के लिए किया गया संघर्ष आख़िरकार रंग लाया और इससे बुंदेलखंड राज्य की मांग करने वालों को भी उम्मीद की रोशनी दिखायी पड़ी है । मध्य प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव में पृथक बुंदेलखंड का मुद्दा ज़ोर-शोर से उठाया जाएगा । बुंदेलखंड को अलग राज्य बनाने की मांग पर केन्द्रीय राज्यमंत्री व क्षेत्रीय सांसद प्रदीप जैन आदित्य ने कांग्रेस के प्रभारी महासचिव मधुसूदन मिस्त्री से मिलकर कांग्रेस पर अलग

बुंदेलखंड राज्य बनाने के लिए दबाव बनाने को कहा । जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्लाह ने कहा कि विरोध प्रदर्शनों के बाद अलग राज्य की घोषणा ख़तरनाक साबित हो सकती है । देश के अन्य हिस्सों में अलग राज्य के लिए आन्दोलन करने वालों के लिए यह फ़ैसला प्रोत्साहन का काम करेगा । इस आशंका को कांग्रेस महासचिव एवं आंध्र प्रदेश के प्रभारी दिग्विजय सिंह ग़लत बताते हुए फ़रमाते हैं कि अन्य राज्यों का मामला तेलंगाना से अलग है । यह फ़ैसला लंबी प्रक्रिया के बाद हुआ है । पृथक तेलंगाना राज्य बनाने के कांग्रेस कार्यसमिति के फ़ैसले का स्वागत करते हुए तेलंगाना राष्ट्र समिति (टी॰आर॰एस॰) के अध्यक्ष के॰ चंद्रशेखर राव ने मांग की है कि सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी को साझी राजधानी बनाए जा रहे हैदराबाद के बारे में स्पष्टीकरण देना चाहिए । राव इस आंदोलन के राजनीतिक चेहरा हैं । राज्य की अर्थव्यवस्था में हैदराबाद कितना महत्वपूर्ण है, उसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि हैदराबाद शहर और उसके पास के इलाक़े से राज्य के राजस्व का 55 प्रतिशत हिस्सा आता है यानी लगभग 40 हज़ार करोड़ रुपये । इसी तरह केन्द्र सरकार को भी आंध्र प्रदेश से मिलने वाले राजस्व का 65 फ़ीसदी हिस्सा यानी तक़रीबन 35 हज़ार करोड़ रुपया इसी शहर से मिलता है । तेलुगू देशम पार्टी ने सवाल उठाया है कि केन्द्र ने तेलंगाना पर श्रीकृष्ण समिति की रिपोर्ट संसद में पेश क्यों नहीं की । सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश बी॰एन॰ श्रीकृष्ण की अध्यक्षता वाली समिति ने पृथक तेलंगाना की मांग की हर पहलू से पड़ताल की थी ।

दस साल के लिए हैदराबाद दोनों राज्यों की साझा राजधानी होगी । सबसे ज़्यादा विवाद हैदराबाद पर ही दावेदारी को लेकर था । इस फार्मूले के आधार पर पहले संप्रग समन्वय समिति और फिर बाद में कांग्रेस कार्यसमिति ने अलग तेलंगाना के रूप में 29वां राज्य बनाने पर मुहर लगा दी । लेकिन प्रकिया इतनी जटिल है कि हरी झंडी मिलने के बाद भी इसे अमलीजामा पहनाने में तमाम पेचीदगियां मौजूद हैं । आंध्र प्रदेश में राजनीतिक ज़मीन खो चुकी कांग्रेस ने अपनी स्थिति सुधारने का यह आख़िरी सियासी हथियार चला है । बहरहाल यह बात सही है कि छोटे राज्यों के गठन से विकास अधिक होता है । पिछले दो लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को सत्ता में लाने के लिए सबसे मददगार आंध्र प्रदेश में इस दफा पार्टी भीषण सियासी संकट से जूझ रही है । मगर इस फ़ैसले के बाद उसे उम्मीद है कि कम से कम तेलंगाना से कुछ राहत मिलेगी । फ़िलहाल, आज की राजनीतिक स्थिति पर नज़र डालने से साफ़ है कि दोनों ही राज्यों में कांग्रेस की सरकारें ही बनेंगी । रायलसीमा के दो ज़िले कुरनूल और अनंतपुर भी तेलंगाना में शामिल किये जाएंगे या नहीं इसको लेकर ख़ासा विवाद है । बहरहाल तेलंगाना में कुल 10 ज़िले रखने का प्रस्ताव है । इनके नाम हैं आदिलाबाद, करीमनगर, मेडंक, निज़ामाबाद, हैदराबाद, खम्मम, नालगोंडा, रंगारेड्डी और महबूबनगर । इनमें लोकसभा की 17 और विधानसभा की 119 सीटें होंगी । आंध्र में 25 संसदीय 175 विधानसभा क्षेत्र बचेंगे । दोनों ही राज्यों में ऊपरी व निचली सदन का गठन किया जाएगा । प्रचुर संभावनाओं और संसाधनों के बावजूद तेलंगाना पिछड़ेपन का शिकार रहा है । इसकी भूमि का बड़ा हिस्सा बंजर है । छत्तीसगढ़ से मिलती सीमा वाले क्षेत्र नक्सलियों का गढ़ माने जाते हैं । इसके अलावा पूरे क्षेत्र में बिजली की गंभीर समस्या है । आंध्र प्रदेश की जनसंख्या में मुसलमानों की संख्या नौ प्रतिशत है, वहीं तेलंगाना में वह बढ़कर 16 प्रतिशत हो जाएगी । यह मुसलमानों के लिए लाभकारी हो सकता है बशर्ते अपने वोटों को न बिखरने दें । 8 फ़रवरी 2010 को जारी जमाअत इस्लामी हिन्द के घोषणापत्र में यह उच्च संकल्प व्यक्त किया गया था कि वह तेलंगाना को एक आम राज्य नहीं, बल्कि एक मॉडल राज्य के रूप में देखना चाहती है, जहां सबको न्याय मिले और सभी के साथ बराबरी का बर्ताव किया जाए । अलग राज्य के समर्थन में जमाअत द्वारा निकाली गयी 'तेलंगाना गर्जना रैली' में क़रीब पचास हज़ार पुरुषों, महिलाओं और छात्रों ने भाग लिया था । इस मौक़े पर जमाअत के अमीरे हल्क़ा मलिक मोअतसिम का कहना था कि जमाअत इस आन्दोलन के साथ इसलिए जुड़ी है, क्योंकि उसका मानना है कि यह लड़ाई बराबरी के अधिकार के लिए है । जमाअत नये राज्य में ज़रूरत पड़ने पर शोषण और नाइन्साफ़ी के भी ख़िलाफ़ लड़ेगी ।

स्वाधीनता दिवस का महत्व

आज हम स्वाधीनता दिवस की 63वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं । हमारे देश को स्वतंत्र कराने हेतु कई महान व्यक्तियों ने त्याग की भावना रखते हुए अपना योगदान दिया । आज हम सभी उन विभूतियों के ऋणी हैं जिन्होंने गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़कर देश को स्वतंत्र कराया ।

सच्चे लोकतंत्र का अर्थ यही है कि वह जनता का जनता द्वारा व जनता के हितों के लिए होता है, परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह परिभाषा सत्ता की पदलोलुपता के कारण विपरीत पड़ती जा रही है । देश के स्वतंत्र होने पर हमें देश विभाजन देखना पड़ा । पाकिस्तान जो आज एक स्वतंत्र देश है, वह हमारे भारतवर्ष का अविभाज्य अंग था । कश्मीर का प्रश्न खड़ा हुआ है इसी प्रकार से तिब्बत का भाग जिसको चीन अपना अंग मान रहा है ।

देश भक्त भारतीयों का कर्तव्य है कि वर्तमान में आज तक जो भी किसी भी राजनैतिक दल से सत्तारूढ़ व्यक्ति चुने गये हैं उनके द्वारा देश व सर्वसाधारण जनता के हित का ध्यान नहीं रखा गया है । ग़रीब और ग़रीब होता रहा है, अमीर और अमीर होता जा रहा है । आये दिन अपराधी बढ़ते जा रहे हैं । रिश्वतख़ोरी, भ्रष्टाचार, बेईमानी, बलात्कार आदि की घटनाएं बढ़ती जा रही है । आये दिन हमें स्थानीय राष्ट्रीय समाचार पत्रों का अध्ययन करने से ज्ञात हो रहा है । हमारी न्याय प्रणाली ठीक नहीं है । गुनहगारों को उचित दंड नहीं दिया जाता है । उनके स्थान पर बेगुनाह मनुष्य पीड़ित होते जा रहे हैं । ज़मानत देने का ऐसा प्रावधान चल रहा है जिससे प्रभावशाली व संपन्न व्यक्ति चाहे वह कितना भी बड़ा अपराध करे वह येनकेन प्रकारेण बच जाता है ।

इसके अभाव में बेगुनाह व्यक्ति को सज़ा भुगतनी पड़ती है । हमें इस प्रक्रिया को परिवर्तित करना होगा । चुनाव प्रणाली का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि जिससे आगे अपराधी प्रवृति के व्यक्ति सत्तारूढ़ नहीं हो सकें, चाहे वह किसी भी राजनैतिक दल का सदस्य क्यों नहीं हो । यह देखा जा रहा है कि बुद्धिजीवी, ईमानदार, सत्यवादी व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति नहीं चुने जाते हैं कारण उन व्यक्तियों में पदलोलुपता का अभाव है । क्या इसलिए देश को स्वतंत्र कराया गया ? हमें अपने आपसे यह प्रश्न पूछना है । राजनैतिक स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली परन्तु अभी तक हमारा देश आर्थिक व सामाजिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है ।

हमारा कर्तव्य है कि हमें ऐसे व्यक्तियों को सत्तारूढ़ करना है जो कि देश को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ा सके । जिससे आगामी वर्षों में देश सोने की चिड़िया कहलाये । आज के दिन हमें यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि देश की स्वाधीनता को बनाए रखें ।

चुनाव की प्रक्रिया ऐसी बने जिसमें सर्वसाधारण उदार हृदय ईमानदार, बुद्धिजीवी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भी सत्ता का भागीदार बन सके । ताकि देश का नाम दुनिया के देशों में विकसित हो सके । तभी हम स्वाधीनता दिवस मनाने का महत्व सुचारू रूप से समझ सकेंगे ।

जुलाई 2013 मासिक पत्रिका 'कान्ति' का अंक प्राप्त हुआ । विचारार्थ के अंतर्गत शीर्षक 'भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति और डॉ॰ अम्बेडकर' का मैंने सरसरी दृष्टिकोण से अध्ययन किया । लेखक डॉ॰ सुरेश जी के भावात्मक विचारों से पूर्णतया सहमत हूं । सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के साथ जो अत्याचार होते हैं डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने महिलाओं के उत्थान के लिए तथा अधिकारों की प्राप्ति के लिए हृदयस्पर्शी सुझाव दिये । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका सारगर्भित महत्व है । महिलाओं को समाज में बराबर का अधिकार दिया जाना अति महत्वपूर्ण है ।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में एक महान परिवार में हुआ । भारतीय संविधान में इन्होंने दलित वर्ग के लिए समान अधिकारों का प्रावधान रखा, परन्तु ये नियम भी बहुत अधिक कारगर साबित नहीं हो सके । डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर को मंत्री होने के बावजूद भी कई बार जातिगत अपमान सहना पड़ा । अंततः सन 1951 में इन्होंने मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया । सन 1990 में इन्हें मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया ।

रामस्वरूप झैवर

9-10 शास्त्रीनगर-विस्तार, भीलवाड़ा (राज॰)

लब्ध पत्रिका

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका 'कान्ति' हिन्दी की एक लब्ध पत्रिका है । मैं विगत दो वर्षों से इस पत्रिका का नियमित पाठक हूं । मई 2013 का अंक मेरे हाथ में है । डॉ॰ सलीम की लिखी कहानी महमूद व अयाज़ मन को छू गयी ।

कहानी की प्रस्तुति रोचक व प्रेरणादायी है । आज के परिदृश्य में कहानी–समीचीन है । इस पत्रिका में अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम राष्ट्रीय तथा समसामयिक समाचारों का एक पन्ना जोड़ना व्यावहारिक तथा उपयोगी हो सकता है । इससे इस मासिक पत्रिका की उपयोगिता बढ़ जाएगी । रोहित यादव की कविता सुन्दर बन पड़ी है । वे प्रशंसा के पात्र हैं ।

कमलेश कुमार मिश्र
हिन्दी शिक्षक
शताब्दी मासिक स्कूल, गया

ज्ञान चक्षु उदय

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका 'कान्ति' के संबंध में स्वउद्‌गार व्यक्त करते हुए मैं स्वयं को गौरवांवित अनुभव कर रहा हूं । विगत दो वर्षों से इस पत्रिका का अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । ख़ासकर इस्लाम धर्म और इससे जुड़ी मानवता का परिदर्शन कराकर इस पत्रिका ने ज्ञानचक्षु उदित करने का अक्षुण्ण प्रभाव दिया है ।

इस्लाम धर्म हो या सनातन सभी मानव कर्मों की ओर ही हमें इंगित करते हैं । सच्चा मानव धर्म के अंत:क्रोड़ में स्वत: स्फूर्त होते हुए इन्सानियत का अवगाहन करता है । वह अंधविश्वास, बाह्याडम्बर, दिखावा, अंधभक्ति के भावों को तिरोहित करते हुए धराधाम पर अमन चैन की पूजा करता है । इस प्रकार की पवित्र सीख 'कान्ति' पत्रिका के आलेखों से मिलती है ।

रमज़ान का पवित्र महीना जहां हर एक मुसलमान को दुख-दर्द पहचानने की क्षमता देता है, वहीं बक़रीद सर्वस्वत्याग, बलिदान, सेवाभावना का पाठ देता है । इस तरह की मानवता से मंडित उज्ज्वल भावनाएं दूसरे धर्मों के समक्ष अनुकरणीय वस्तु बन जाती है ।

पवित्र कुरआन मानव को सच्चे मार्ग की ओर पयान करने का संदेश देते हुए परहित सरिस धरम नहिंभाई जैसी विचारधाराओं से मंडित कराता है ।

'कान्ति' अध्ययन के बाद हृदयस्थ गगरी भर गयी । मुझे यही लगा–

तुच्छ विचारधारा वाले लोग यह अपना है, वह पराया है, इस तरह की बात सोचते हैं । उदार चरित्र वाले लोगों के समक्ष सारी पृथ्वी के जन अपने परिवार के समान हैं ।

अयनिज: परोवेति गणना
लघुचेत साम्
उदार चरिता नांतु बसु धैव कुटुम्बकम्

कौशल किशोर मिश्र
अध्यापक शताब्दी पब्लिक स्कूल, गया

'कान्ति'

कान्ति एक छवि है, सच्ची मार्गदर्शिका है । कान्ति का प्रत्येक विचार उत्कृष्ट एवं आदरणीय है ।

ज़िन्दगी के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर एक तोहफ़ा है 'कान्ति' ।
कुदरत का नूर, इन्सानियत की परिभाषा है 'कान्ति' ।
दिखाये जो हमें अपनी तस्वीर वो आईना है 'कान्ति' ।
युग बदले, बदला है ये ज़माना,
सच्चाई की अडिग और प्रज्जवलित मशाल है 'कान्ति' ।
मुश्किल ही नहीं सागर की लहरों जैसी 'गहरी' ।
अर्न्तआत्मा की गूंज, या शायद 'परछाई' है ये 'कान्ति' ।
क्या कहें, कैसे दें तुम्हें धन्यवाद,
बस आस है एक ही, न थकना, न कभी रुकना ।
चलते रहना सदा ही, कल को बनाना तुम 'कान्ति' ।
आम आदमी की आवाज़ हो तुम, विश्वास हो तुम ।
धुंधले बने अंधकार से भरे गहरे बादलों में,
सूरज की 'किरण' हो तुम ।

दीप्ति सक्सेना
103, ब्लॉक-I, महागणेशनगरी (मुडवा),
पुणे-411036

न रहो किसी पर निर्भर

न रहो किसी पर इतना भी निर्भर
उसके जाने पर ज़िन्दगी बोझ बन जाए
मत करो बहस-विवाद इतना ज़्यादा
नज़रों में आपका सम्मान ही घट जाए ।
दूसरों को दुखी देख मत मुस्कराओ
समय का पता नहीं वह कब तुम्हें रुलाए

मत तोड़ो दिल किसी का बेदर्दी से
कि उसके जीने की लालसा ही मिट जाए ।
बुजुर्गों का अपमान मत करो तनिक भी
आने वाली पीढ़ी उसी पाठ को दोहराए
इतना भी न झगड़ो आपस में मगरूर होकर
जाने कब तुमको उससे ज़रूरत पड़ जाए ।
मत ढूंढ़ो दोष अपनों में कभी भी
कि, अनजाने में नफ़रत की दीवार बन जाए
इतना मत लड़ो धर्म-मज़हब के नाम पर
कि मानवता भी शर्मसार हो जाए ।
न उठाओ दिलों में नफ़रत की दीवार को
भड़के हुए शोले अलाव न बन जाएं
शोध-प्रतिशोध का सिलसिला ही ग़लत है
क्रोध का पागलपन क्या न कर जाए ।

शशिप्रभा शर्मा
1936/3, पन्नापुरी, हापुड़-245101 (उ०प्र०)

कुछ अच्छा करने की सोचें

पत्रिका 'कान्ति' देखते ही मन प्रसन्न हुआ । बड़े दिनों के बाद 'कान्ति' पढ़ने को मिली । जाति भेद मिटाकर मानव-मानव में प्रेम, सद्भाव, मित्रता, समानता एवं ईश्वर में आस्था प्रकट करना–पत्रिका का लक्ष्य प्रतीत हुआ । हम संपादक जी के स्नेह के भी आभारी हैं ।

मैं भी चाहता हूं मानव-मानव से प्यार कर जिये । छल-कपट से सदैव दूर रहकर आपस में सबके दिलों में कान्ति पैदा हो, चेहरे में भी कान्ति आये ।

भाईचारे का पाठ पढ़ाती यह पत्रिका समाज में नयी कान्ति लेकर आयी है । ऐसे सुदृढ़ विचारों से युक्त पत्रिका भेजकर मुझे तो धन्य ही कर दिया । समाज भी आपको अपने दिलों में स्थान देगा । इसी भावना एवं विचारों के साथ ।

वेदप्रकाश सिंह 'प्रकाश'
सिन्धी कैम्प, सतना, मध्य प्रदेश

अल्लाह पर भरोसा

प्राय: लोग धन प्राप्ति के लिए लक्ष्मी की पूजा करते हैं परंतु यह भरोसे लायक़ नहीं है । भरोसे लायक़ तो परमात्मा या अल्लाह है । लक्ष्मी तो चंचला है । आज यहां तो कल वहां । जिस-जिस ने भी इस पर भरोसा किया अंत में वह रोया ही है । जबकि अल्लाह पर भरोसा करने वालों को संतोष धन अपार मिला है क्योंकि भरोसे के क़ाबिल भी यही है ।

रमज़ान का पवित्र महीना है जो हमारा परमात्मा या अल्लाह से निकट का संबंध बनाता है । रमज़ान की पांचों बातों पर भरोसा कीजिए और उस पर चलिए फिर देखिए हम कितने ऊपर उठते हैं । हम ही नहीं हमारा समाज भी ऊपर उठेगा, सुख, शांति और अमनचैन हमारे जीवन में निश्चित रूप से आएगा । एक बार पूर्णरूपेण समर्पण तो कीजिए पूरे भरोसे के साथ फिर देखिए करिश्मा ।

घेवरचन्द गोदीका
639 सिरमौर हाउस, जयपुर-302003

गुटखे पर पाबंदी

राजस्थान, बिहार, केरल, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि में गुटखे पर पाबन्दी लगाकर बहुत ही नेक कार्य किया गया है । अन्य प्रदेशों में भी इस पर पाबन्दी लगायी जानी चाहिए, इससे देश के लाखों लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा होगी ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
494/5, राजापार्क, जयपुर-302004 (राज०)

'वेलेंटाइन डे'

आज अश्लीलता ने अपनी जड़ें बड़ी गहराई में जमा ली हैं । उसके वृक्ष पर नग्नता, अवैध प्रेम और अवैध यौन संबंधों जैसे विषाक्त फल लग रहे हैं । इसी कारण अपराधों में लोग हत्याएं कर रहे हैं, तेज़ाब फेंक रहे हैं तथा बलात्कार के कारण अवैध गर्भधारण हो रहे हैं । सम्मानीय माताओं बहनों, बेटियों और पत्नियों की जबरन इज़्ज़तें/अस्मतें लूटी जा रही हैं ।

इसी के चलते 'वैलेंटाइन डे' को विशेष रूप से मनाया जा रहा है जो अश्लीलता के वृक्ष के साथ यह वृक्ष रही-सही सभ्यता की जड़ काटने में लगा है । वह खुलेआम सभ्य संस्कृति में विष घोल रहा है, सभ्यता को खंडित कर रहा है । इस दिन सुसंस्कारों की धज्जियां उड़ायी जाती हैं । अत: ऐसे 'वेलेंटाइन डे' को संविधान में कहीं भी जगह नहीं मिलनी चाहिए ताकि वह अश्लीलता के समान अपनी जड़ें गहरी न जमा सके ।

मलिक
नागपुर

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाजुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

भौतिकवाद और इस्लाम

■ मौलाना जलालुद्दीन उमरी

अब भौतिकता पर विचार कीजिए । इसका कहना है कि इस ब्रह्माण्ड को किसी विवेकशील हस्ती ने पैदा नहीं किया, बल्कि यह एक ऐसे तत्व से अस्तित्व में आया है जो अपने अन्दर गति रखता था और अपनी उसी गति से स्वयं ही विभिन्न ग्रहों का रूप धारण करता चला गया । इसके परिणामस्वरूप कहीं सूरज, कहीं चांद, कहीं मंगल ग्रह, कहीं हमारी यह ज़मीन और इनके अतिरिक्त अन्य सैकड़ों-हज़ारों ग्रह अस्तित्व में आ गये, और फिर धीरे-धीरे प्रत्येक ग्रह में उसके अनुकूल परिस्थितियां जमा होनी शुरू हो गयीं । इसी निर्जीव तत्व से सजीव और निर्जीव, विवेकशील और विवेकहीन, स्थिर एवं गतिमान हर प्रकार की चीज़ें अस्तित्व में आने लगीं । बिल्कुल उसी प्रकार जैसे किसी जगह एक लम्बे समय तक लगातार कंकड़ और पत्थर फेंके जाते रहें, इससे कहीं पहाड़ तैयार हो जाए, कहीं इमारत बन जाए, कहीं नाला और नहर, कहीं सड़कें और पुल और कहीं सराय और होटल निर्मित हो जाए । उसी कंकड़ और पत्थर के ढेर से इंसानों और जानवरों का सिलसिला भी प्रारंभ होकर धीरे-धीरे वहां एक नियमित और संगठित बस्ती आबाद हो जाए ।

ब्रह्माण्ड की यह व्याख्या इंसान की बुद्धि और उसके अनुभवों के बिल्कुल विपरीत है । इंसान के अतीत का लंबा अनुभव और वर्तमान का अवलोकन बताता है कि आज तक ख़ुद से न कोई देश फ़तह हुआ, न कोई फुलवारी सुसज्जित हुई, न कोई कारख़ाना अस्तित्व में आया यहां तक कि कोई लेख और कोई पत्र अपने आप लिखित रूप में नहीं आया । एक तुच्छ-सा तिनका भी अपनी जगह से हरकत नहीं करता जब तक कि कोई उसे हरकत न दे और जो काम जितना बड़ा हो उसके लिए उतने ही चिन्तन-मनन, परिश्रम, ध्यान और योजना की आवश्यकता पड़ती हैं । एक भव्य भवन और अच्छी मशीन उस समय अस्तित्व में आती है, जबकि श्रेष्ठ योग्यता रखने वाले व्यक्ति अपना मानसिक एवं व्यावहारिक प्रयास इसके लिए करते हैं ।

इंसान अपने अनुभवों के विपरीत कैसे सोच सकता है कि यह विशाल और असीमित ब्रह्माण्ड किसी पैदा करने वाले के बिना ही अस्तित्व में आ गया । यह ब्रह्माण्ड जिसके अन्दर कहीं कोई कमी और कोई टकराव नहीं पाया जाता, जिसकी हर चीज़ अपनी सुन्दरता के लिहाज़ से बढ़ी हुई है और अपनी-अपनी जगह पर इस प्रकार जड़ी हुई है कि यदि उसे वहां से अलग कर दिया जाए तो उसकी सारी व्यवस्था गड्ड-मड्ड हो जाए । यह सूरज, चांद यह हमारी ज़मीन और अनगिनत ग्रह एक विशेष संतुलन के साथ अपने-अपने मण्डल में परिक्रमा कर रहे हैं । इस संतुलन में नाममात्र भी अन्तर हो जाए तो यह ब्रह्माण्ड देखते-देखते समाप्त हो जाए । इंसान यह सोचकर ही हैरान रह जाता है कि क्या कोई अंधा और बहरा हाथ किसी काम में इस प्रकार संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित कर सकता है ?

फिर क्या विवेकहीन तत्व की संयोगवश गति ही ने आग में ऊष्मा, पानी में शीतलता, पत्थर में कठोरता, मोम में नर्मी, अमृत में जीवन और संखिया में मृत्यु रख दी ? क्या इसी से चुम्बक के अन्दर आकर्षण और लोहे के अन्दर आकर्षित होने के गुण पैदा हो गये ? एक ही ज़मीन में क्या संयोगवश ही लोहा और कोयला, सोना और चांदी, नमक एवं दूसरे खनिज एकत्रित हो गये ? क्या यह संयोग ही है कि ब्रह्माण्ड की विभिन्न एवं विपरीत चीज़ें एक-दूसरे की पूरक हैं ? सूरज की गर्मी से समुद्र के पानी का वाष्पीकरण होता है, यह वाष्प ऊपर उठता है हवा उसे वातावरण में फैला देती है । ज़मीन का गुरुत्वाकर्षण उसे अपनी ओर खींचता है और वह पानी बनकर बरसने लगता है । इससे ज़मीन को जीवन और वह शक्ति मिलती है, जो उन सभी चीज़ों के जीवन का ज़रिया बनती है जो ज़मीन पर रहते और बसते हैं । क्या यह सब कुछ संयोगवश ही होता है ?

भौतिकवाद की परिकल्पना न तो इस ब्रह्माण्ड के अन्दर किसी प्रकार फिट बैठती है और न इंसान की बुद्धि और उसके अनुभव इसका समर्थन करते हैं । परन्तु इसे इसलिए स्वीकार कर लिया गया कि इंसान इस ब्रह्माण्ड की कोई भौतिक और स्पष्ट व्याख्या करना चाहता था, क्योंकि उसने

यह पहले तय कर लिया कि इस ब्रह्माण्ड की वास्तविकता इसे दिखने वाले परिदृश्यों के अन्दर सीमित है । इस पर्दे के पीछे कोई चीज़ नहीं पाई जाती, हालांकि यह एक कल्पना मात्र है । इस काल्पनिक धारणा के पक्ष में उसने अब तक कोई निश्चित प्रमाण नहीं पेश किया, यह उसका दुस्साहस है कि अपनी निगाह से परे किसी वस्तु के अस्तित्व से इन्कार कर दिया और अपनी अज्ञानता को ज्ञान एवं विश्वास का नाम देकर ब्रह्माण्ड की ऐसी व्याख्या पर आग्रह करने लगा जिसका वह दो और दो चार की तरह प्रयोग कर सके और जिसकी पुष्टि इंद्रियों के द्वारा उसके लिए सम्भव हो, हालांकि इस ब्रह्माण्ड की किसी स्पष्ट व्याख्या के लिए जिस व्यापक ज्ञान और अवलोकन की ज़रूरत है वह अभी तक उसे प्राप्त नहीं है । यह भू-मंडल जिस पर रहता-बसता है, इसके सम्बन्ध में भी उसका ज्ञान बहुत थोड़ा है और ब्रह्माण्ड का अधिकतर भाग तो उसके लिए एक रहस्य है और जो नयी-नयी जानकारियां खोजी जा रही हैं, वे उसे इस अथाह ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में तुच्छता एवं बेबसी स्वीकार करने पर विवश करती हैं ।

इन थोड़ी-सी जानकारियों को लेकर इंसान इस विस्तृत ब्रह्माण्ड के प्रारम्भ और अंत को मालूम करना चाहता है । वह इनकी बुनियाद पर केवल अटकलें लगा सकता है, उसके पास वास्तविकता को जानने का कोई निश्चित और प्रामाणिक माध्यम नहीं है ।

वास्तविकता का ज्ञान

इस्लाम वास्तविकता का ज्ञान हमें प्रदान करता है । वह ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में ऐसी परिकल्पना प्रस्तुत करता है, जिससे वे सभी प्रश्न हल हो जाते हैं जो शिर्क और भौतिकता ने पैदा किए हैं । इससे निश्चित रूप से मालूम होता है कि यह ब्रह्माण्ड उसके आदेश का पालक है । उसकी इच्छा के बिना न तो किसी पेड़ का पत्ता गिर सकता है और न चींटी रेंग सकती है । सब उसके मुहताज हैं और वही उनकी ज़रूरतें पूरी करता है । उसके अतिरिक्त कोई नहीं जो किसी की कोई मनोकामना पूरी कर सके । वह बुद्धिमान और दूरदर्शी है, और बुद्धिमानी एवं विवेकशीलता के साथ इस ब्रह्माण्ड को चला रहा है । उसके किसी काम में त्रुटि और ख़राबी नहीं दिखाई जा सकती । वह भलाई और ख़ूबियों का स्रोत और ग़लतियों और ख़ामियों से बिल्कुल पाक है ।

इस परिकल्पना की पुष्टि ब्रह्माण्ड में प्रत्येक ओर से होती है । यहां की छोटी-बड़ी प्रत्येक चीज़ चाहे वह सूरज हो या मिट्टी का छोटा-सा कण, एक सर्वोच्च सत्ता का मुहताज है । इसके बिना न तो उसका अस्तित्व ही संभव है और न वह अपना काम कर सकती है । ज़मीन एवं आसमान की हरकत, ग्रहों की परिक्रमा, हवा एवं पानी की व्यवस्था ख़ुद बोल रही है कि इस ब्रह्माण्ड का एक रचयिता है और वही इसे चला रहा है ।

इस परिकल्पना के अतिरिक्त कोई दूसरी परिकल्पना, ब्रह्माण्ड पर न तो पूर्णत: चरितार्थ होती है और न उससे इस ब्रह्माण्ड की पूर्ण व्याख्या होती है । यही परिकल्पना मनुष्य के लिए सबसे अधिक स्वीकार करने योग्य है, क्योंकि यह उसकी बुद्धि और अनुभवों के अनुकूल एवं सदृश्य है । वह किसी अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सकता जब तक कि कोई उसे अस्तित्व में लाने वाला न हो और न कभी उसे इसका अनुभव हुआ है । ब्रह्माण्ड की कोई भौतिकवादी या बहुदेववादी व्याख्या यदि इंसान के समक्ष प्रस्तुत न की जाए तो इसे देखकर तुरन्त यही कहेगा कि इसे एक सर्व शक्तिमान हस्ती ने पैदा किया है और वही इसे चला रही है । इस ब्रह्माण्ड के अध्ययन से इंसान के अन्दर जो एहसास उभरता है, इस्लाम उसकी पुष्टि करता है ।

इस्लाम की ब्रह्माण्ड से संबंधित परिकल्पना ही इंसान की प्रकृति और उसकी भावनाओं एवं अनुभूतियों से पूर्णत: अनुकूल है किसी और परिकल्पना से उसकी भावनाओं की पूर्ति एवं संतुष्टि नहीं होती ।

इंसान इस ब्रह्माण्ड के अन्दर हज़ार तरह के साजोसामान के बावजूद स्वयं को निस्सहाय एवं विवश पाता है । एक ओर उसकी स्वाभाविक मांगे, इच्छाएं और उमंगे हैं और दूसरी ओर उनकी पूर्ति के मार्ग में बाधा डालने वाली रुकावटें । ये रुकावटें पग-पग पर उसकी भावनाओं को चोट पहुंचाती हैं और उसकी अनुभूतियों को सदमा पहुंचाती है । इंसान कभी-कभी इन सदमों को सहन नहीं कर पाता और मायूसी का शिकार होने लगता है । वह अपना भोजन प्राप्त करना चाहे या वस्त्र, कोई भौतिक आवश्यकता पूरी करना चाहे या भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक शांति प्राप्त करना चाहे, उसके लिए जिन कारकों की ज़रूरत होती है, वे उसे हमेशा उपलब्ध नहीं होते । हवा उसकी इच्छा से नहीं चलती; पानी उसके आदेश से नहीं बरसता, आसमान और ज़मीन के भण्डार उसके हाथ में नहीं हैं, सेहत एवं तंदुरुस्ती

पर उसका अधिकार नहीं है, इसलिए वह एक ऐसे सहारे का मुहताज है जिस पर वह हर वक़्त भरोसा कर सके । वह तूफ़ान और आंधी के भंवर में फंस जाए और उसे पुकारे तो वह उसे उस भंवर से निकाल दे, वह जंगल में रास्ता भटक जाए और उसे आवाज़ दे तो उसे मंज़िल तक पहुंचा दे । उसका मासूम और नन्हा बच्चा बीमार हो, रोगी की सेवा करने वाले निराश हो जाएं, डॉक्टर जवाब दे दे ऐसे में यदि वह उसके आगे हाथ फैलाए तो उसकी मनोकामना पूरी हो जाए । तात्पर्य यह कि जिसके संबंध में उसे विश्वास हो कि वह उसकी हर मुश्किल में काम आ सकता है और उसकी हर मांग को पूरी कर सकता है ।

इंसान को एक ऐसी ही हस्ती की तलाश है और उसकी प्रकृति कहती है कि इस ब्रह्माण्ड में उसे ज़रूर होना चाहिए । यह असंभव है कि जिस ब्रह्माण्ड में वे तमाम चीज़ें मौजूद हों जिनका इंसान अपने अस्तित्व एवं विकास के लिए मुहताज है वहां उसकी एक ऐसी इच्छा की पूर्ति को कोई व्यवस्था ही न हो जो हर पल उसके अन्दर जन्म लेती रहती है । जो ब्रह्माण्ड हवा और पानी से लेकर ज़िंदगी की हर छोटी-बड़ी ज़रूरत पूरी करता हो, क्या वह इंसान की वही ज़रूरत पूरी नहीं करेगा जो यदि पूरी न हो तो ये सारी चीज़ें उसके लिए बेकार हैं । इस्लाम इसके पक्ष में जवाब देता है । वह कहता है कि मनुष्य की प्रकृति की यह तलाश, निराधार नहीं है, बल्कि इस ब्रह्माण्ड में ऐसी सामर्थ्यवान शक्ति है जिसके दामन में इंसान पनाह ले सकता है और वह सामर्थ्यवान अल्लाह है । इसकी पुष्टि हज़ारों, लाखों नेक और महान लोग करते हैं । ऐसे लोग ज़मीन के हर क्षेत्र में और हर काल में मिलते हैं । उन्होंने एक ऐसी हस्ती पर अपना ईमान एवं आस्था ज़ाहिर की है, जो उनकी दुआएं सुनता है जिससे वे मांगते हैं तो उनकी मुरादें पूरी हो जाती हैं । वे उसके सामने अपने सिरों को झुकाते हैं तो उससे निकटता महसूस करते हैं, वे उसकी महानता एवं प्रताप का हर समय अवलोकन करते हैं और उन्हें हर ओर उसकी सामर्थ्य एवं शक्ति का चमत्कार नज़र आता है ।

हम नहीं कह सकते कि इन सारे इन्सानों ने झूठ कहा है, जबकि हम उनकी ज़िन्दगी में झूठ और धोखे का कोई चिन्ह नहीं देखते और न यह कह सकते हैं कि वे धोखा खा गये या उन पर जादू चल गया, क्योंकि वे समय के सबसे बुद्धिमान, दूरदर्शी एवं होशियार इन्सान नज़र आते हैं । उनकी एक-एक अदा बताती है कि उन्होंने न तो धोखा खाया और न उन पर जादू किया गया ।

इन्सान की परीक्षा

जब इस ब्रह्माण्ड में एक ऐसी सामर्थ्यवान हस्ती है जिसका आदेश हर चीज़ पर चल रहा है, तो इन्सान को भी उसका आज्ञापालक होना चाहिए । आसमान एवं ज़मीन, सूरज एवं चांद जिसके आदेश के अधीन कार्यरत हैं अनिवार्य है कि इन्सान भी उसकी सत्ता के अधीन हो, परन्तु इन्सान आज़ाद है । वह अपने और इस ब्रह्माण्ड के रचयिता को स्वीकार भी करता है और इन्कार भी करता है, उसकी आज्ञा का पालक भी है और उसकी अवज्ञा की भी छूट उसे है । यह क्यों ?

इसका जवाब इस्लाम ने यह दिया है कि यहां इन्सान की मूल हैसियत (प्रकृति की परीक्षा हो रही है कि वह इस पर बाक़ी रहता है या इससे भटकता है ? अपने रचयिता एवं प्रभु की गुलामी करता है या उसका बाग़ी और नाफ़रमान बनता है ? इस उद्देश्य के लिए आवश्यक था कि उसे किसी पत्थर की भांति गाड़ न दिया जाता और न हरकत करने वाली मशीन बना दिया जाता बल्कि उसे अपेक्षित और अनपेक्षित दोनों प्रकार के आचरण के लिए समान रूप से स्वतंत्रता दी जाती, क्योंकि स्वतंत्रता ही वह माध्यम है, जिससे किसी चीज़ की परीक्षा हो सकती है । इन्सान के अतिरिक्त इस ब्रह्माण्ड की अन्य सभी चीज़ें अपने रचयिता के आदेश के अधीन हैं और उसके आदेश से नाममात्र को भी विचलित नहीं हो सकतीं, इसलिए उनकी परीक्षा भी नहीं है । इस उद्देश्य के लिए संपूर्ण ब्रह्माण्ड को इन्सान के परीक्षा-स्थल में बदल दिया गया है । उसे इस प्रकार बनाया गया है कि इन्सान अपनी इच्छा के अनुसार इसका उपयोग कर सकता है । ज़मीन पर उगने वाले अनाज से ऊर्जा एवं शक्ति प्राप्त कर वह अपने प्रभु एवं मालिक का आज्ञापालक एवं गुलाम बन सकता है और उसी ऊर्जा एवं शक्ति को उसकी बग़ावत में भी लगा सकता है । सूरज की गर्मी से अल्लाह के नेक बन्दे भी लाभांवित होते हैं और बुरे भी । इस दुनिया में जो कारक एवं संसाधन फैलाये गये हैं उनका उपयोग कर एक अपराधी भी सफल हो सक... है और वह भी जिसने कोई अपराध न किया हो । ऐसा नहीं है कि सही मक़सद ही के लिए वे काम आएं और ग़लत मक़सद के लिए काम न आएं ।

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करो ।"

(क़ुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

वर्तमान दुनिया और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाएं

■ डॉ० मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी

दुनिया ने बहुत विकास किया है । हमारा देश भी इसमें शामिल है । गगनचुंबी इमारतें, चमचमाती सड़कें, ध्वनि की रफ़्तार से भी तेज़ विमान, गंभीर रोगों का इलाज, मोबाइल फ़ोन और इंटरनेट । दुनिया सिमट कर छोटी हो गयी है, जिसे वैश्विक गांव कहा जाने लगा है । इस विकास के बावजूद कमज़ोर वर्गों पर अत्याचार होते हैं, शक्ति संपन्न देश संसार के सारे संसाधनों पर एकाधिकार के लिए कमज़ोर देशों पर हमले करते हैं, कभी सैन्य, कभी आर्थिक, कभी सांस्कृतिक । मनुष्य से जीने का अधिकार छीन लिया गया है । नग्नता को सभ्यता और प्रगति का प्रतीक समझा जाने लगा है । नारी की गरिमा और अस्मिता को तार-तार कर दिया गया है । बेटियों को पैदा होने से पहले मां की कोख में ही मार दिया जाता है । शराब आम हो रही है । ब्याज के चक्रव्यूह ने अर्थव्यवस्था को इस प्रकार जकड़ रखा है कि उसके बिना आर्थिक विनिमय संभव नहीं लगता ।

छोड़ी हैं जड़ें ज़ंजीरों ने,
इनमें से किसी को नोचें तो,
आज़ादी से कुछ सोचें तो,
आसाब (नसें) तड़खने लगते हैं,
अंदाम (शरीर) चटखने लगते हैं ।

इन हालात में ज़रूरत है एक ऐसे मार्गदर्शक व व्यक्तित्व की, जो जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करें और आदर्श भी प्रस्तुत कर सकें । मानवता के संपूर्ण इतिहास से निकल कर केवल एक नाम सामने आता है, हज़रत मुहम्मद (उन पर ईश्वर की असीम कृपा एवं शांति हो)।

1443 वर्ष पूर्व अरब के मक्का शहर में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म हुआ.। आपके जन्म से पहले ही पिता अब्दुल्लाह का देहांत हो गया । चार वर्ष के हुए तो माता आमिना और आठ वर्ष की उम्र में दादा का साया सिर से उठ गया । चाचा अबू तालिब की छत्रछाया में पले । आप में असाधारण रूप से बुद्धिमत्ता, सदाचरण और नम्रता थी । 40 वर्ष की आयु में ईश्वर ने एक फ़रिश्ते जिबरील के माध्यम से आपको नबी यानी ईशदूत होने की ख़बर दी । यह फ़रिश्ता आपके पास आता और ईश्वर का संदेश थोड़ा-थोड़ा कर पहुंचाता रहा । इसी मार्गदर्शन को हम पवित्र कुरआन के नाम से जानते हैं । इस ग्रंथ के आधार पर जो जीवन व्यवस्था अस्तित्व में आती है, उसे इस्लाम (ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, शांति) कहते हैं और इसके अनुसार आचरण करने वाले को मुस्लिम ।

कुरआन के अनुसार ईश्वर ने मनुष्य को पैदा कर भटकने के लिए नहीं छोड़ा बल्कि उसकी ज़रूरत की वस्तुएं पैदा कीं, उसके मार्गदर्शन की व्यवस्था की । पहले मनुष्य हज़रत आदम (अलैहि०) को नबी बनाया । हर युग में, हर उस स्थान पर जहां मानव बसते थे, दूत भेजता रहा । मनुष्य ज्ञान सुरक्षित रखना और उसके अगली पीढ़ियों तक पहुंचाना सीख गया तब ईश्वर ने अपने अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजा और उन पर अंतिम ग्रंथ कुरआन अवतरित किया । कुरआन से पहले के सभी ग्रंथों में समय के साथ फेर-बदल हो गया । कुरआन अवतरित हुआ, उसी समय लिखा गया । इसलिए यह पूर्णत: सुरक्षित है, इसमें परिवर्तन असंभव है ।

जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पैदा हुए, संसार बहुदेववाद के अंधेरों में डूबा था । लोगों ने कई उपास्य बना रखे थे । व्यभिचार, शराब, जुआ जैसी बीमारियों ने मानव समाज को जकड़ रखा था । छोटी-छोटी बातों पर युद्ध होना, उसका

पीढ़ियों तक जारी रहना, रंग, वंश और कुल के आधार पर मनुष्यों में अन्तर आम था । दासों से अमानवीय व्यवहार किया जाता था । अधिक शक्ति वाले का साम्राज्य चलता था । नारी उपभोग की वस्तु मानी जाती थी, उसके अधिकार नहीं थे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने एकेश्वरवाद का प्रकाश दिया । मनुष्य को मनुष्य का गरिमापूर्ण संबोधन दिया । वंश, कुल और रंग का भेद मिटा कर मानव एकता स्थापित की ।

लोगों ! तुम्हारा पालनहार (ईश्वर) एक है, तुम्हारा पिता एक है, तुम सब आदम की संतान हो और आदम मिट्टी से बने थे । तुम में से ईश्वर की निगाह में सबसे श्रेष्ठ वह है, जो उससे अधिक डरता है । किसी अरबी को किसी ग़ैर-अरबी पर और किसी ग़ैर-अरबी को किसी अरबी पर, किसी काले को किसी गोरे पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई श्रेष्ठता नहीं सिवाय ईश-भय के (अंतिम हज के अवसर पर) मनुष्य के लिए जीने का अधिकार दिया जो उसे ईश्वर ने दिया है । जिसने किसी एक मनुष्य की अकारण हत्या की, उसने मानो सारी मानवता की हत्या कर दी । और जिसने किसी एक व्यक्ति की जान बचाई उसने मानो सारी मानवता को बचा लिया ।

(कुरआन, अल-माइदा : 23)

आपने समानतापूर्ण न्याय व्यवस्था दी, जिसमें शासक भी न्याय के समक्ष उत्तरदायी है । ज़कात की व्यवस्था दी जिससे धनवानों से धन वसूल कर निर्धनों की आवश्यकताओं की पूर्ति की गयी । ब्याज को निषेध किया, जो सरासर शोषण का साधन है । नारी को गरिमा प्रदान की । माता के चरणों के नीचे स्वर्ग बताया, बेटी की पैदाइश व लालन-पालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना दी । नवजात बेटी की हत्या को महापाप ठहराया । नारी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार ही नहीं, बल्कि स्त्री-पुरुष दोनों के लिए शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य किया । स्त्री को पिता और पति की सम्पत्ति में हिस्सा दिया ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस जीवन के बाद एक और जीवन की सूचना दी, जिसमें प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर के समक्ष उपस्थित होकर अपने कर्मों का हिसाब देना होगा । वास्तव में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) सारी मानवता के लिए आदर्श हैं । उनके जीवन में बड़े, छोटे, युवा, बूढ़े, स्त्री, पुरुष, निर्धन, धनवान, अशिक्षित, अल्पशिक्षित, उच्च शिक्षित, सभी तबक़े के लोगों के लिए सम्पूर्ण मार्गदर्शन है ।

अपने घर को
इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए
स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

हिन्दी भाषियों के मासिक पत्र
कान्ति
www.kanti.in
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

दावत साप्ताहिक
دعوت
نئی دہلی
www.dawatonline.com
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि
वार्षिक
स्वदेश में
: Rs. 220/-
विदेशों में
30 अमेरिकी
डॉलर
आजीवन
: Rs. 5,000/-

ماہنامہ
زندگی نو
نئی دہلی
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे पर सर्वदलीय बहस ज़रूरी

■ आलोक खटेड़

विगत वर्षों में देश में धर्मनिरपेक्षता का प्रश्न राजनीति का आधार बिन्दु बनकर उभरा है । संसद से लेकर सड़क तक धर्मनिरपेक्षता के सवाल पर व्यापक बहस होती रहती है । यह किसी भी नागरिक के लिए अचरज की बात है कि जब सब राजनैतिक दल धर्मनिरपेक्षता को इतना बड़ा और महत्वपूर्ण सवाल मानकर चल रहे हैं तो वे इसे सर्वदलीय बहस का विषय बनाने में क्यों झिझक रहे हैं ? वे झिझक इसलिए रहे हैं क्योंकि आज की तारीख़ में हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता का महत्वपूर्ण मुद्दा वोटों के गणित में उलझकर रह गया है । जिस विषय पर गंभीर चिन्तन और स्वस्थ संवाद होना चाहिए, वह विषय सतही आरोपों-प्रत्यारोपों, नकारात्मक बहसों व वोटोत्पादक दावों की आड़ में अपना महत्व खोता जा रहा है ।

विडम्बना यह है कि हमारे नेतागण धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे को सर्वदलीय चिन्ता की बनिस्बत राजनैतिक चुनौती के रूप में प्रस्तुत करते हैं । कांग्रेस और ज़र्जर तीसरे मोर्चे के नेता जो स्वयं को असली धर्मनिरपेक्ष मानकर चलते हैं, वे राजनैतिक धरातल पर साम्प्रदायिक तत्वों यानी भाजपा को चित्त करना चाहते हैं । जिस धरातल पर ये धर्मनिरपेक्ष पार्टियां धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे को उठा रही हैं, उसी मोर्चे पर भाजपा उनसे मोर्चे लेने को तैयार है । भाजपा लम्बे समय से धर्मनिरपेक्षता की हिन्दूवादी व्याख्या पर बल देती रही है ।

अब सचमुच समय आ गया है कि इस विषय पर स्वस्थ, सकारात्मक, बहुकोणीय बहस हो और देश धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा के आधारभूत प्रयासों की नये सिरे से समीक्षा करे । लोकतंत्र के लिए धार्मिक कट्टरता और जातिवादी कट्टरता समान रूप से घातक हैं, इसलिए राजनीतिक दृष्टि से मुक़ाबला करना बेहद ज़रूरी ठहरता है ।

विगत वर्षों में राजनीति की सर्वोच्च संस्था हमारी संसद में धर्मनिरपेक्ष पार्टियों के नेताओं ने भाजपा को धर्मनिरपेक्षता की दुश्मन और साम्प्रदायिक बताकर अच्छा किया, पर अपने दामन की पड़ताल करने की ज़हमत कभी नहीं उठायी । एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने में पारंगत राजनेताओं में से एक ने भी धर्मनिरपेक्षता के सवाल पर सार्थक, सकारात्मक और सर्वदलीय बहस छेड़ने की सच्ची और ईमानदार पहल नहीं की । यदि यह बहस सर्वदलीय मंच पर छिड़ गयी तो कई दलों के चेहरे बेनक़ाब हो जाएंगे और कुछ पार्टियों के तो आधार ही खिसक जाएंगे ।

आज की तारीख़ में राजनेताओं के लिए धर्मनिरपेक्षता का कुल अर्थ यह रह गया है कि अल्पसंख्यकों के वोट उन्हें मिलें और उनके प्रतिपक्षियों के चांस को नष्ट किया जा सके । यदि अपने को धर्मनिरपेक्षता मानने वाली पार्टियां देश को साम्प्रदायिकता के अभिशाप से सचमुच मुक्त कराने की अभिलाषी है तो उन्हें अपने स्वार्थ और पूर्वाग्रह तजकर एक-दूसरे के प्रति सहयोग और उदारता का रुख़ अपनाना चाहिए जबकि हमारे देश में धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाली पार्टियों का आचरण इससे एकदम उल्टा है । वे उक़-दूसरे की टांग खींचने मे मसरूफ़ रहती हैं ।

राजनीति में धार्मिक कट्टरता का विरोध जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी जातीय कट्टरता का विरोध भी है । 90 के दशक से ही राजनीति में जाति-बिरादरी सरीखी अस्मिताएं अकस्मात अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई ।

यद्यपि राजनीति और जाति का संबंध कोई नयी बात नहीं है । स्वतंत्र भारत में चुनाव प्रक्रिया जब से प्रारंभ हुई है, लोकतंत्र पर जातियों का प्रभाव तब से रहा है लेकिन अब उस प्रभाव का स्वरूप सिरे से बदल चुका है । अब जातिगत समीकरणों का दायरा राज्य स्तर तक विस्थापित हो चुका है । पहले पार्टियां चुनावों में स्थानीय स्तर पर कुछ जातियों का समर्थन पाती थीं पर अब हालत यह हो चुकी है कि राजनीतिक पार्टियां सीधे कुछ विशेष जातियों या वर्गों की प्रतिनिधि के रूप में पहचानी जा रही हैं । इन पार्टियों का एकसूत्री एजेंडा अपनी समर्थक बल्कि पोषक जातियों के हित-स्वार्थों की रक्षा करना रह गया है ।

विडम्बना यह है कि राजनीतिक पार्टियों के अंतर्मन में अपनी इतनी संकीर्ण पहचान बनने का कोई ग्लानिबोध भी

नहीं उपजता बल्कि वे इसे लोकतंत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का प्रबल माध्यम मानकर चलते हैं और अपनी संकीर्ण निष्ठाओं का दामन छोड़ने को क़तई तैयार नहीं। राजनीतिक पार्टियों की यह जातिगत पहचान वोटों के गणित के लिहाज़ से अल्पकालिक रूप से उनके लिए बेशक लाभदायक हो, अंतत: भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के लिए यह अशुभ ही है।

देश में पहले राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और फिर वी॰पी॰ सिंह ने सामाजिक न्याय को प्रमुख चुनावी मुद्दे के रूप में उठाया तो देश की जनता ने इसका पुरज़ोर स्वागत किया। सामाजिक न्याय के मुद्दे के प्रति जनमन में जो रचनात्मक उत्साह उत्पन्न हुआ, उस अद्‌भुत उत्साह का उपयोग जातिवादी राजनीति के विनाश के लिए किया जाना चाहिए था। भूमि के समतापूर्ण आवंटन, साक्षरता प्रसार, महिला उत्थान और दफ़्तरशाही की अराजकता व कुटिलता की काट जैसे सार्थक-समयानुकूल उद्देश्य हल किये जा सकते थे मगर यह न हो सका क्योंकि कुर्सीकामी नेताओं ने सामाजिक न्याय के नितांत सामयिक मुद्दे को वोटों के चलताऊ धरातल पर उतार कर जनता के उत्साह की लहरों को राजनैतिक मरुस्थल पर सूख जाने के लिए बिखेर दिया।

उस समय सामाजिक और आर्थिक विषमता के ख़िलाफ़ जो स्वर उठे थे, उन स्वरों का चतुराई से जातीयकरण कर इन नेताओं ने समाज में विभेद व अलगाव की खाई को और अधिक चौड़ा कर दिया। समाज के पिछड़े और दलित वर्गों के हितों की रक्षा के लिए नये-नये दल कुकुरमुत्तों की तर्ज पर उगते-उपजते गए। ये दल सामाजिक न्याय की नयी मनमानी, वोटोन्मुखी परिभाषाएं गढ़ते रहे। इन दलों ने जनता को उसकी ज़मीनी ज़रूरतों से विमुख कर अपने लिए विविध जातीय वोट बैंक निर्मित करने का काम किया।

आरक्षण के आत्मघाती प्रयोगों से अगड़ी-पिछड़ी जातियों के बीच विभेद, अलगाव और वैमनस्य तो बढ़ा ही बल्कि योग्य, सक्षम और प्रतिभाशाली लोग अपने नैसर्गिक अधिकारों से वंचित रह गये। राजनेता अपनी जात-बिरादरी के लोगों को कलेक्टर, एस॰पी॰, थानेदार सरीखे महत्वपूर्ण ओहदों पर बिठाकर सरकारी अमलों की मार्फ़त ही सामाजिक न्याय की बहाली के जतन करते रहे। नतीजतन सामाजिक न्याय तो न आ सका बल्कि अल्पसंख्यकों और पिछड़ी जातियों की स्थिति और अधिक बदतर हो गयी।

आज कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों को धर्मनिरपेक्षता व जातिवाद पर एक सार्थक सर्वदलीय बहस को नहीं टालना चाहिए। दरअस्ल यह बहस इन दलों के अस्तित्व की रक्षा के लिए ज़रूरी हो चली है। इससे उन्हें साम्प्रदायिक पार्टियों को रोकने में बल मिलेगा। राजनीतिक पार्टियों को वोट के लालच में जातीय विद्वेष और कटुता फैलाने के बजाय आत्मानुशासन की नयी शैली का ईजाद कर सिर्फ़ कुछ जातियों के बजाय वृहत्तर भारत के हर नागरिक के हित की रक्षा का वचन देना होगा, तभी देश में लोकतंत्र सतत् गतिमान रह सकेगा।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

अपराध रोकने में समाज की भूमिका

❖ मुहम्मद ख़ुर्शीद आलम
(दरभंगा, बिहार)

अपराध रोकने में समाज की भूमिका को स्पष्ट करने से पहले अपराध क्या है ?'' इसे स्पष्ट करना आवश्यक प्रतीत होता है । सरल शब्दों में अपराध, क़ानून का उल्लंघन है । चाहे कोई कार्य कितना भी अनैतिक अथवा ग़लत क्यों न हो किन्तु वह कार्य तब तक अपराध नहीं कहलाता जब तक क़ानून में उसे अपराध न माना गया हो । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि क़ानून का उल्लंघन अपराध कहलाता है । क़ानूनी दृष्टि में अपराध वह कार्य है जो कि सार्वजनिक हित के लिए हानिकारक होता है । अपराध को सामाजिक दृष्टिकोण से भी समझने का प्रयास किया गया है । सामाजिक रूप में अपराध हमेशा हानिकारक होता है इसलिए अपराध की अवहेलना करना दंडनीय है ।

अपराध सभी युगों में मानव के सम्मुख एक चुनौती रहा है तथा इस चुनौती को हल करने में मानव असफल रहा है । सभी महापुरुष एवं समाज सुधारक मानव के आधारभूत स्वभाव को बदलने में असफल रहे हैं । सदियों में कोई एक अतिमानव अगर पैदा हो भी जाए तो मानव का स्वभाव तो वही काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहं से पीड़ित रहा है । जहां एक ओर सभ्यता बढ़ी है, मशीनें बढ़ी हैं, विज्ञान के चमत्कारिक आविष्कार हुए हैं, शिक्षालय व शिक्षित बढ़े हैं, धन बढ़ा है, समुद्रों, पर्वतों, रेगिस्तानों की दूरियां कम हो गयी हैं, व्यक्ति चांद पर जा पहुंचे हैं, वहीं दूसरी ओर संगठन, पैमाने, विस्तार व भयानकता आदि की भी दृष्टियों से समाज की व्याधियां, झगड़े, युद्ध व अपराध भी और अधिक बढ़ गये हैं । ऐसा क्यों होता है ? क्या अपराध कभी समाप्त नहीं हो सकते ? क्या अपराधी प्रवृत्ति को पनपने से पहले ही समाप्त नहीं किया जा सकता ? क्या मानव समाज के शरीर में चिरकाल से रिसता हुआ यह फोड़ा कभी समाप्त नहीं हो सकता ?

कुछ विद्वान कहते हैं कि अपराध समाज के लिए कुछ अच्छे प्रकार्य भी करता है । यह हमें समाज में परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव कराता है । परन्तु क्या इसके अलावा परिवर्तन की दशा आंकने का और कोई रचनात्मक व मानवीय ढंग नहीं हो सकता ? क्या समाज और अपराध अभिन्न हैं ? ये कुछ मौलिक प्रश्न हैं जो हर युग में चिंतकों के सम्मुख रहे हैं और वे इनके उत्तर संभावित हल के रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं । वास्तव में ये प्रश्न अपराध निरोध या अपराध की रोकथाम से संबंधित हैं । अपराध निरोध का अर्थ ही अपराधों को कम करना या रोकना है ।

अपराध निरोध में हम केवल अपराधियों को अपराध करने से पूर्व रोकने के उपायों की विवेचना नहीं करते अपितु इसमें उपचार या चिकित्सा को भी सम्मिलित किया जाता है । उपचार के महत्व के कारण ही आज अधिकांश समाजों में अपराधियों को दिये जाने वाले पाशविक दंड के प्रकारों को न अपनाकर मानवतावादी वैयक्तिक दंड के उपचार की विधि अपनायी जाने लगी है । अन्य शब्दों में आज अपराधी के स्वास्थ्य उपचार तथा सामाजिक पुनर्वास की ओर ध्यान दिया जाना भी अपराध निरोध का ही परिणाम है क्योंकि इससे अपराध की पुनरावृत्ति या अपराध व्यसन की संभावना कम हो जाती है । प्रारंभ में ही हम यह कह देना अपना कर्तव्य समझते हैं कि हम अपराध निरोध को असंभव नहीं मानते, हां, कठिन अवश्य मानते हैं । आइए, विचार करें कि अपराध निरोध की वास्तविक समस्या क्या है और इसके हल के लिए हम क्या और कैसे कर सकते हैं ?

अपराध निरोध की समस्या को यदि अच्छी तरह स्पष्ट कर लिया जाए तो उसका निराकरण भी सरल हो जाएगा, क्योंकि प्रसिद्ध कहावत है कि एक समस्या, जो स्पष्ट हो जाती है, आधी हल हो जाती है । अपराध निरोध एक विस्तृत एवं बहुआयाम वाली समस्या है, इससे संबंधित मौलिक प्रश्न निम्नलिखित है–

अपराध भी अन्य सामाजिक व्यवहारों की भांति एक सीखा हुआ व्यवहार है । अत: सीखने की क्रिया से संबंधित दोनों पक्ष समाज और व्यक्ति इसमें भी मूल तथ्य हैं । पैतृकता से प्राप्त अपनी जन्मज़ात क्षमताओं के आधार पर

व्यक्ति पर्यावरण के साथ अन्तर्क्रिया करता हुआ ही अपने व्यवहार प्रतिमान अर्जित करता है । इसीलिए यदि अपराध निरोध या अपराध उन्मूलन करना है तो सामाजिक व्यवस्था में भी उचित परिवर्तन करने होंगे और व्यक्तित्व के निर्माण की प्रक्रिया को भी सही दिशा से निर्देशित करना होगा । इससे व्यक्ति अपराधी वृत्तियां नहीं सीखेंगे ।

अपराध निरोध से दो तात्पर्य हो सकते हैं–प्रथम, एक बार व्यक्ति ने यदि अपराध कर दिया तो उसका उपचार या सुधार इस प्रकार किया जाए कि वह पुन: अपराध की ओर न जाए, और दूसरे, सामाजिक व्यवस्था ऐसी हो जो कि नये अपराधी उत्पन्न ही न करे । अन्य शब्दों में, अपराध निरोध की समस्या द्विपक्षीय है–(क) अपराधी को अपराध पुनरावृत्ति या अपराध व्यसन से रोकना तथा (ख) नये अपराधों की रोकथाम करना ।

स्पष्टत: अपराध हमें अपराधी में सुधार व पुनर्वास के प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा देता है और उन समूहों और प्रतिक्रियाओं के मूल्यांकन करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है जो अपराधी के साथ व्यवहार में आते हैं । नये अपराधों की रोकथाम में हमें सामाजीकरण और व्यक्तित्व की प्रक्रिया पर ध्यान देना होगा और इस प्रक्रिया में सहयोग देने वाले समूहों (जैसे परिवार, स्कूल, समुदाय आदि) के बारे में भी सोचना होगा ।

अपराध निरोध के क्षेत्र में विश्व के अनेक देशों में अनेक प्रयोग किये गये हैं । उन प्रयोगों के अनुभवों को सामने रखते हुए और मौलिक चिंतन के परिणामस्वरूप अपराध निरोध के उपायों को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटकर अध्ययन किया जा सकता है–

- सामान्य सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन ।
- अपराधी से व्यवहार व उपचार ।
- अपराधी का पुनर्वास व अपराधी की पुनरावृत्ति पर रोक, तथा
- नये अपराधों की रोकथाम में विशिष्ट उपचार ।

उपर्युक्त प्रथम तीन उपाय अपराध के उपचार एवं पुनरावृत्ति की रोकथाम से संबंधित हैं, जबकि अंतिम उपाय अपराध होने से पूर्व की स्थिति पर नियंत्रण करके इसकी संभावना को कम करने से संबंधित है ।

संक्षेप में हम इस बात का उल्लेख अवश्य करना चाहेंगे कि अपराध को रोकने में समाज अपना दायित्व पूरी ईमानदारी से निभा रहा है अथवा नहीं ? यदि समाज चाहे तो संकटपूर्ण स्थिति में भी जन सहयोग बहिष्कार, पश्चाताप एवं सामाजिक उपचार के माध्यम से अपराध के बढ़ते हुए दर को कम किया जा सकता है ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. IQRA PUBLIC SCHOOL : Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.

2. MILLAT HOSPITAL : Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.

3. ISLAMIC INFORMATION CENTRE : Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

बुढ़ापा प्रसन्न रहने का समय है

अपने-अपने समय पर सभी वस्तुएं सुन्दर लगती हैं । बच्चों का भोलापन, किशोरों का उठन, तरुणों का उत्साह, प्रौढ़ों की परिपक्वता सुन्दर लगती है । इसी प्रकार बुढ़ापा भी अपने समय में अपनी विशिष्टता का परिचय देता है । इन आयु खंडों की अपनी-अपनी विशेषता तो है, पर तुलना नहीं की जा सकती और न किसी को श्रेष्ठ या निकृष्ट ठहराया जा सकता है । बचपन अपनी जगह सुहाता है और तरुणाई की अपनी छटा है । दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं । कोपलें उगती हैं, पत्ते बढ़ते हैं, फूल खिलते और फल आते हैं । सभी अपनी-अपनी जगह शोभायमान होते हैं, किंतु परस्पर तुलना करने का कोई अर्थ नहीं । नमक अच्छा है या मीठी ? इस प्रशन का सीधा उत्तर नहीं दिया जा सकता । दाल में डालने के लिए नमक की ज़रूरत पड़ती है और दूध में शक्कर मिलायी जाती है, दोनों की अपनी-अपनी जगह उपयोगिता है और आवश्यकता भी ।

पौधों की टहनियों की लकड़ी गीली होती है । उन्हें मोड़ा-मरोड़ा और टोकरी जैसे ढांचे में ढाला जा सकता है, पर तने की विशेषता अपनी अनोखी ही है । मज़बूत शहतीर उसी से बनते हैं । टहनियां कितनी ही लचीली एवं सुन्दर क्यों न हों, पर वे लट्ठे का काम नहीं दे सकतीं ।

बुढ़ापा कुरूप है या सुन्दर ? इसे समझने का अपना-अपना दृष्टिकोण है । तरुणाई जैसी अठखेलियां, उमंगें और मुस्कानें बुढ़ापे में नहीं होती और न चेहरे पर ही वैसी गुलाई, लालिमा और चमक रहती है, पर उसके स्थान पर जो नया भाव उभरता है, उसे अपनी जगह महिमा और गरिमा से भरा-पूरा समझा जा सकता है । चेहरे की झुर्रियां, सफ़ेदी, बेदांती मुख यह बताता है कि इस व्यक्तित्व पर परिपक्वता आ गयी । ज्ञान, अनुभव अब ऊंचाई तक पहुंच गया है । यह वरिष्ठता की निशानी है । समाज में उनकी प्रतिष्ठा और गरिमा समझी जाती है, इसलिए लोग महत्वपूर्ण प्रसंगों में उनके परामर्श लेने पहुंचते हैं । उनके निर्णय-निर्धारणों को महत्व देते हैं । उनका नमन-वंदन किया जाता है । देखते ही श्रद्धा के अंकुर उठते हैं और उन्हें सम्मानपूर्वक ऊंचे स्थान पर बिठाया जाता है । यह गरिमा अनायास ही मिली हुई नहीं होती । उसके पीछे बहुमूल्य अनुभूतियां होती हैं ।

कच्चे आम भारी होते हैं । गोल और खट्टे महकदार भी । पकने पर वह स्थिति नहीं रहती, पिलपिलापन आ जाता है, मिठास बढ़ जाती है, वज़न भी हल्का होता है । इतने पर भी पके आम अधिक दाम के बिकते हैं । काले बालों को भौंरे से उपमा दी जाती है, पर सफ़ेद बाल तो हंस जैसे होते हैं, मानो चांदी के तारों से उन्हें बनाया गया हो । बच्चे का बिना दांत का मुंह हंसते समय कितना सुन्दर लगता है । बूढ़े के पोपले मुंह की भी वही स्थिति होती है । यूं कामुकता, विलासिता की दृष्टि से वे फिसड्डी हो जाते हैं, फिर भी युवकों की अपेक्षा, उनकी बातों में वज़न होता है । समझदारी की दृष्टि से अनुभवगम्य ज्ञान ऐसे निर्णायक निष्कर्षों तक पहुंचता है कि उस वृद्धावस्था पर जवानी निछावर करने को मन करता है ।

जार्ज वर्नार्डशा कहते थे–"बुढ़ापा एक सिद्धि है, पूर्णता की मंज़िल है और समय की धरोहर ।" व्यक्ति और समाज की स्थिति का अन्वय करने वाली उसे दूरबीन या खुर्दबीन कह सकते हैं । बुढ़ापा श्रद्धा-सम्मान से लदा हुआ वटवृक्ष है, जिसकी छाया में बैठकर नयी पीढ़ी बहुत कुछ सीख सकती है और सांत्वना पा सकती है ।

बुढ़ापे में खीझते वे हैं, जिन्होंने बुढ़ापे का पूर्वाभास नहीं किया और उसके स्वागत की समुचित तैयारी नहीं की । जवानी की उच्छृंखलता बुढ़ापे में लौट नहीं सकती और न उतनी स्फूर्ति रहती है, फिर भी जो कुछ रहता है या बढ़ता है, वह ऐसा होंता है, जिस पर संतोष किया जा सके और गर्व भी । जिसने अपने बुढ़ापे को स्वयं सम्मानीय बनाया, उसका अंयत्र भी अभिनंदन होता है । बुढ़ापा शरमाने की नहीं, वरन प्रफुल्लता बिखेरने तथा बटोरने की वय है ।

राजेन्द्र गोयल
D-2201, भूमिराज हर्मिटेज,
सेक्टर-8, सेंपद, नवी मुंबई-5

बच्चों में भय की भावना पैदा न होने दें

बच्चों के साथ अपने दैनिक व्यवहार में हम बहुत-सी भूलें कर बैठते हैं और उनका बच्चों के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है । बहुत से मां-बाप अपने लाभ के लिए बच्चों को सुधारने के लिए उन्हें तरह-तरह के भय दिखाया करते हैं । अबोध बच्चों को अक्सर 'हौवा' एक काल्पनिक जीव से डराया जाता है । ''जल्दी सो जा, दुबक जा, नहीं तो हौवा आ जाएगा ।'' अबोध बालक समझने लगता है कि 'हौवा' नाम की कोई भयानक वस्तु है जो उसे खा जाएगी या पकड़ ले जाएगी ।

कुछ बड़ा हो जाने पर जब वह चलने-फिरने लगता है तो कुत्ता, शेर, पकड़ ले जाने वाले साधु बाबा का डर दिखाया जाता है । प्रत्यक्ष डर दिखाने के साथ-साथ ही घर में कहे जाने वाले क़िस्से-कहानी, जिसमें राक्षस, भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि की प्रधानता रहती है, बच्चों में कुछ कम भय पैदा नहीं करते । बहुत से घर वाले तो अमुक स्थान, पीपल का पेड़, मरघट, क़ब्र आदि को भूत-प्रेत का निवास बताकर बच्चों को वहां जाने, चौराहा लांघने से रोकते हैं ।

किसी भी रूप में बच्चे को डराने की प्रवृति बहुत हानिकारक सिद्ध होती है । इन बातों से बालक के कोमल मन पर भय की भावना इतनी दृढ़ता से जम जाती है कि वह जीवन भर नहीं छूट पाती । वह अंधेरे में, अकेले में डर महसूस करता है । अंधेरे में कोई कपड़ा या वस्तु हवा में हिलती-डुलती देखकर उसकी घिग्घी बंध जाती है । जिन वस्तुओं का नाम लेकर डराया जाता है यथा कुत्ता, बिल्ली, बंदर, भालू, सांप, छिपकली इनके सपने में आते ही बालक होश हवास खो बैठता है । भयावही कहानियां उसकी विचारधारा और कल्पना को उसी दिशा में मोड़ दती है जिससे बालक अकारण ही भयभीत होता रहता है ।

एक-दूसरे ढंग से भी मां-बाप बच्चों में भय की भावना पैदा करते हैं । बातचीत में, व्यवहार में, बच्चों के साथ सख़्ती से पेश आना, उन्हें झिड़क देना भी बच्चों को दूसरे ढंग से भयभीत बना देता है । ऐसा बालक बात-बात में दूसरों से डरने लगता है । कुछ करने से पूर्व झिझकता है । धीरे-धीरे यह एहसास इतना बढ़ जाता है कि वह कुछ नहीं कर पाता ।

कई बार किसी पराजय अथवा कटु अनुभव होने पर बालक को चिढ़ाना, धिक्कारना, उस पर व्यंग्य कसना भी उसके साहस को कमज़ोर करना है । किसी भी रूप में क्यों न हो बच्चों में भय के संस्कार पैदा कर देना उनके स्वाभाविक विकास में अवरोध पैदा करना है । निर्द्वन्द, निर्भर बालक जल्दी प्रगति करता है, बजाय एक भयभीत मन स्थिति के बच्चे के, जो बालक कुत्ते, बिल्ली, छिपकली, हौवा, भूत, चुड़ैली के नाम से घिघियाते हैं, अकेले में रहने से परेशान हो जाते हैं, जो नाना प्रकार की भयप्रद कल्पनाओं में डूबते रहते हैं, उनसे क्या आशा की जा सकती है कि वे जीवन में कोई महत्वपूर्ण काम कर सकेंगे ?

आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों में भय की भावनाओं को पैदा ही नहीं होने देना चाहिए । कदाचित किसी रूप में भय पैदा हो ही जाए तो माता-पिता का कर्तव्य है कि वे बालक की स्थिति को मनोवैज्ञानिक अध्ययन करके तुरन्त उसके मन से भय को दूर करें ।

कोई नुक़सान हो जाए, वस्तु टूट-फूट जाए, बालक को कोई असफलता मिल जाए तो उसे आप न तो टोकें, न कोई दोष दें, न मीन-मेख निकालें, गिरे हुए बालक को कोसने के बजाय उसे उठने के लिए प्रेरित करें, असफल हो जाने पर सफलता के लिए प्रोत्साहित करें । ख़तरों, दुर्घटनाओं के लिए उसे डांट-फटकार देने की अपेक्षा उसका हौसला बढ़ाएं । तभी उसका जीवन आने वाली बहुत-सी असफलता, दुर्घटना, कठिनाइयों को झेल सकेगा । बच्चों से जो नुक़सान हो गया वह तो पूरा होने वाला नहीं । व्यर्थ ही उन्हें भयभीत करना, डांटना, फटकारना उनके मनोबल को क्षीण कर देना है । अत: बच्चों को उनकी भूलों पर असफलता पर, असावधानी पर शर्मिन्दा न करें, उन्हें न कोसें ।

बाल विशेषज्ञों का कहना है कि बच्चों को सहज रूप से खेलने-कूदने देना चाहिए । उनको बात-बात पर टोकना डिक्टेटर का सा हुक्म चलाना, दंड देना अनुपयुक्त है । इससे बालक का मनोबल क्षीण होता है और वह सहमा-सहमा रहने लगता है । झिझकता है । दब्बूपन की भावना उसमें घर कर लेती है । बच्चे को उसकी सहज स्थिति में रखकर विकसित होने देना चाहिए ।

मौलिकता को न छोड़िए

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मानव का मौलिक स्वभाव मानव-जीवन की बड़ी सच्चाई है, जिसकी प्रेरणा हमें धर्मग्रंथों में मिलती है । मूल स्वभाव और प्रकृति पर जीने से मनुष्य बुराइयों एवं विकारों से बहुत ही सुरक्षित रहता है । वह अपने को उत्कर्षगामी बनाये रखता है । वह सामने के हर बंधन को काटता है और आगे बढ़ता जाता है । इसके लिए उसे मन, बुद्धि और इन्द्रिय-संयम की आवश्यकता पड़ती है, अन्यथा समाज की भेड़चाल उसे पतन की ओर ही ले जाती है । आज का भौतिकवादी समाज कुछ ऐसा ही है । मनुष्य के मूल स्वभाव पर न जीने से समस्याओं का अंबार लगा हुआ है । हम सचेष्ठ और सावधान नहीं रहें, तो दानव बनने में कितनी देर है ?!

अत: नकारात्मक बाह्य प्रभावों से अपने को बचाने अर्थात मूल स्वभाव पर बने रहने की बहुत ज़रूरत है ।

परमात्मा ने मनुष्य को भी एक मूल स्वभाव दिया है--वह है दया का, करुणा का, क्षमा का, शील का, आपसी प्रेम व भाईचारे का । परंतु अफ़सोस, अधिकांश लोग अपने मूल स्वभाव से कटकर रह गये हैं । उन्होंने समाज में अशांति फैला रखी है । वे अपने ऊपर एक झूठा आवरण चढ़ा चुके हैं । भौतिकता का ऐसा रंग चढ़ा हुआ है कि मनेच्छाएं ही प्रमुख हो गयी हैं, जिसके कारण भी प्रेम एवं सहिष्णुता घट गयी है । दूसरे के रंग के प्रभावाधीन होकर स्वयं को भूल जाना, भला व्यक्ति का मूल स्वभाव कैसे हो सकता है ?

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का एक शेअर है--

यक लहज़ा ज़शहूते कि दारी बरख़ेज़
ताबनशीनद हज़ार शाहिद पेश्त ।

अर्थात, पल भर के लिए ही अपनी इच्छाओं का त्याग करो, ताकि हज़ारों प्रियतम तुम्हारे सामने बैठ जाए ।

आज हमारी हर गतिविधि दिखावे में बदल गयी है, हमारा हर क्रिया-कलाप हमें स्वयं से दूर ले जा रहा है । कारण साफ़ है, हम जो कर रहे हैं ऊपर से कर रहे हैं । प्राणों से नहीं, हृदय से नहीं, मन से नहीं । एक स्वभाव संत का भी है, भले इंसान का भी है । मूल स्वभाव पर बने रहने के लिए मन, बुद्धि और इन्द्रियों के संयम की अतीव आवश्यकता है । श्रीमद भगवद गीता में है--

यततो ह्यीय कौन्तेय पुरुषस्य विपश्यित:,
इन्द्रियाणि प्रमथिनि हरन्ति प्रसभं मन: । (2:60)

अर्थात, हे अर्जुन, जिससे कि यत्न करते हुए बुद्धिमान पुरुष के भी मन को ये प्रमथन करने वाली इन्द्रियां बलात्कार से हर लेती हैं ।

अत: यह बड़ा कठिन कार्य हुआ । इसलिए भी नकारात्मक प्रभावों को हटाने और मूल स्वभाव बहाल की नितांत आवश्यकता है । इसलिए गीता में भी उपाय बताये गये हैं । कहा गया है कि मूल स्वभाव पर आने के लिए प्रथम वाणी आदि इन्द्रियों का, फिर मन का संयम करना चाहिए (गीता 3:41-43, 2:93, 2:99, मनुस्मृति 2:93, 2:99, 2:88, 2:94, 2:100) अन्य धर्मग्रंथों में भी इसी प्रकार की बातें हैं और मनुष्य को मूल स्वभाव पर जमे रहने का उपदेश दिया गया है । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया है कि हर मनुष्य अपने मूल स्वभाव (इस्लाम) पर पैदा होता है, लेकिन उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई या अग्निपूजक बना देते हैं ।

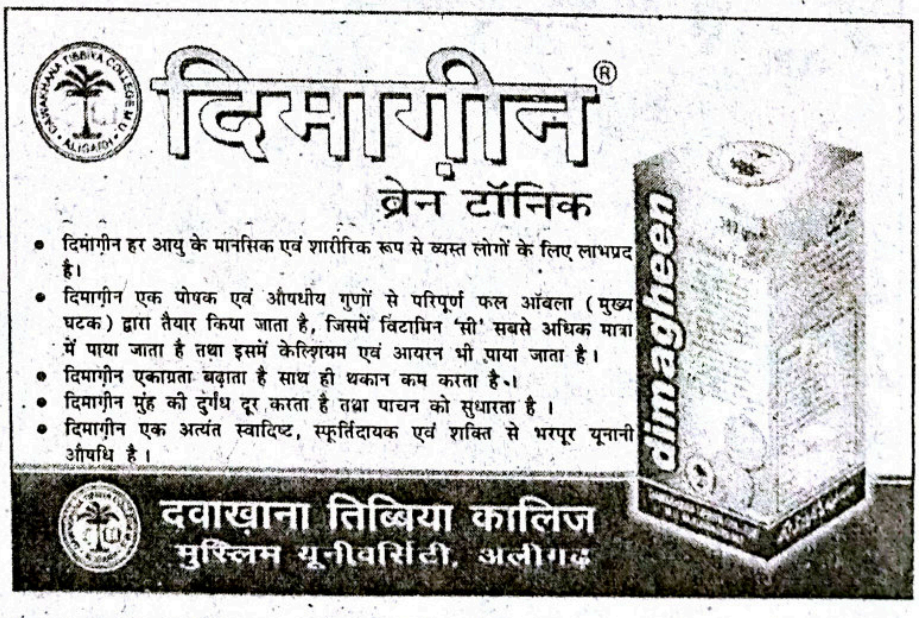

इस्लामी परिवार : प्रेम का ख़ज़ाना

□ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है । इस शृंखला की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी या इकाई है 'परिवार'। पारिवारिक व्यवस्था जितनी सुदृढ़ और गुणवान होगी, समाज़ और राष्ट्र उतने ही सभ्य एवं शक्तिशाली होंगे । इसलिए इस्लाम व्यक्ति एवं परिवार को मानवीय गुणों तथा नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर शिखर तक पहुंचाने का प्रबंध करता है । सुखद दाम्पत्य जीवन, संस्कारी सन्तान जो माता-पिता के योगदान को पहचाने, ज़िम्मेदार माता-पिता जो औलाद का दयाभाव व प्रेम के साथ पालन-पोषण करे, परिवार के सदस्य एक-दूसरे के शुभचिन्तक और हमदर्द हों तथा समाज और देश के लिए उचित योगदान देते हुए लोक और परलोक में कल्याण के भागीदार बनें ।

पति-पत्नी

परिवार स्त्री-पुरुष के वैध संबंधों से बनता है, इसे कुरआन में ईश्वर की निशानी बताया गया है--

"और उसकी निशानियों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे लिए खुद तुम्हीं में से जोड़े बनाए हैं, ताकि तुम उनके पास सुकून पाओ, और उसने तुम्हारे बीच प्रेम-भाव तथा दयालुता पैदा की ।" (कुरआन, 30:21)

दाम्पत्य-जीवन से परिवार रूपी संस्था अस्तित्व में आती है जिससे तीन लाभ प्राप्त होते हैं, प्रथम पति और पत्नी दोनों सुख-शान्ति प्राप्त करते हैं, दूसरे उनके बीच प्रेम और मुहब्बत पैदा होती है तथा तीसरे रहमत, दयालुता तथा कृपाशीलता का वातावरण बनता है ।

वासनात्मक लगाव तो, हर जीवधारी में नस्ल की बढ़ोत्तरी के लिए प्रकृतिप्रदत्त है, मगर अल्लाह ने मनुष्यों के स्वभाव में ही पारिवारिक आवश्यकता रख दी है । वह इस तरह कि स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के प्रति जो लगाव और आकर्षण रखते हैं वह सदैव बना रहता है, इसलिए वे एक साथ घर बनाकर रहना पसन्द करते हैं । फिर इन्सानी बच्चे को अन्य जीवधारियों के बच्चे की तुलना में अधिक समय तक देख-रेख और पालन-पोषण की आवश्यकता होती है,

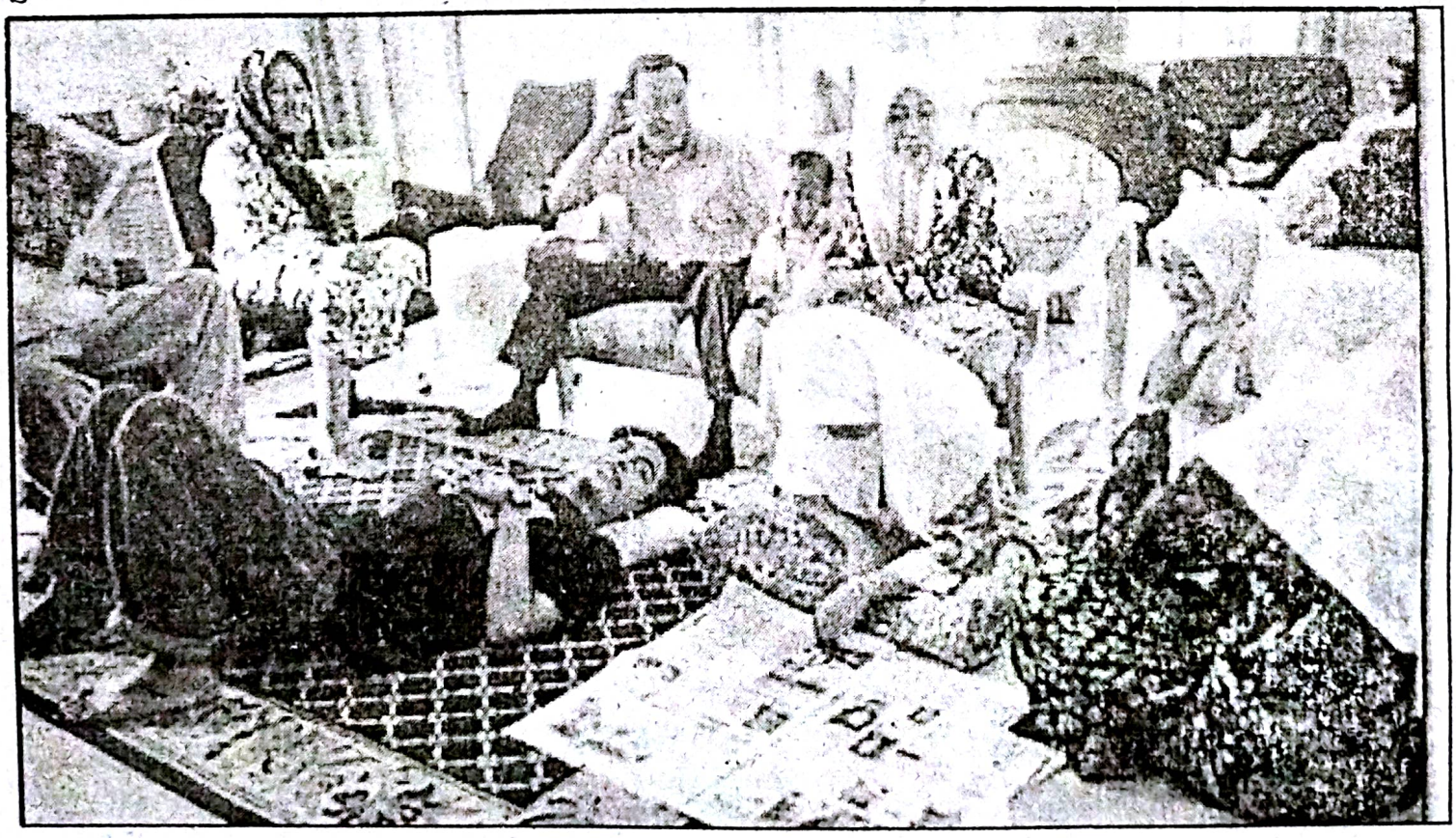

इस्लामी परिवार की विशेषताएं

जिसके लिए ईश्वर ने बच्चे के प्रति स्नेह रख दिया है जो सबसे अधिक मां के मन में होता है, फिर पिता तथा उसके अन्य संबंधियों यहां तक कि अपरिचित लोगों के मन में भी बच्चे के प्रति लगाव रखा गया । परिवार की इस इकाई को दयाभाव और प्रेम-भाव के उच्च स्तर पर बनाए रखने के लिए इस्लाम ने पति-पत्नी दोनों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए जिनका सार प्रस्तुत हैं–

● स्त्री-पुरुष के रिश्ते विधिवत विवाह से स्थापित हों–

''उन (विवाहिता) औरतों के अतिरिक्त जो औरतें हैं, तुम्हारे लिए वैध किया गया कि महर (विवाह धन) के बदले विधिवत संबंध स्थापित करो, न कि अवैध संबंध बनाओ ।'' (कुरआन, 4:24)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

''तुमको विवाह करना चाहिए, वह बदनिगाही से रोकने तथा कामेच्छा पर नियंत्रण रखने की सर्वोत्तम रीति है ।'' (हदीस : बुख़ारी)

● अवैध संबंधों से क्षणिक आनन्द तो प्राप्त हो सकता है, मगर यह समाज के लिए अत्यन्त हानिप्रद तथा घातक है । इसलिए इस्लाम इसे अस्वीकार करता है और साथ ही कड़ी सज़ा का प्रावधान भी करता है–

''व्यभिचार के निकट भी न जाओ क्योंकि यह अश्लीलता है, और बुरा रास्ता है।'' (कुरआन, 17:32)

पति-पत्नी के बीच कभी पसन्द-नापसन्द में अन्तर हो सकता है । इसका हल बताया गया–

''उनके (अपने दम्पति के) साथ भले तरीक़े से रहो-सहो । अगर वे तुम्हें पसन्द न हों तो संभव है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो और अल्लाह ने उसमें बहुत कुछ भलाई रख दी हो ।'' (कुरआन, 4:19)

● पति-पत्नी के रिश्ते को अलंकारिक भाषा में व्यक्त किया गया–

''वे तुम्हारे लिए वस्त्र (लिबास) हैं और तुम उनके लिए वस्त्र हो ।'' (कुरआन, 2:187)

यहां पति-पत्नी को वस्त्र की उपमा दी गयी है । वस्त्र इन्सान के शरीर से लिपटा रहता है और सुन्दरता में वृद्धि के

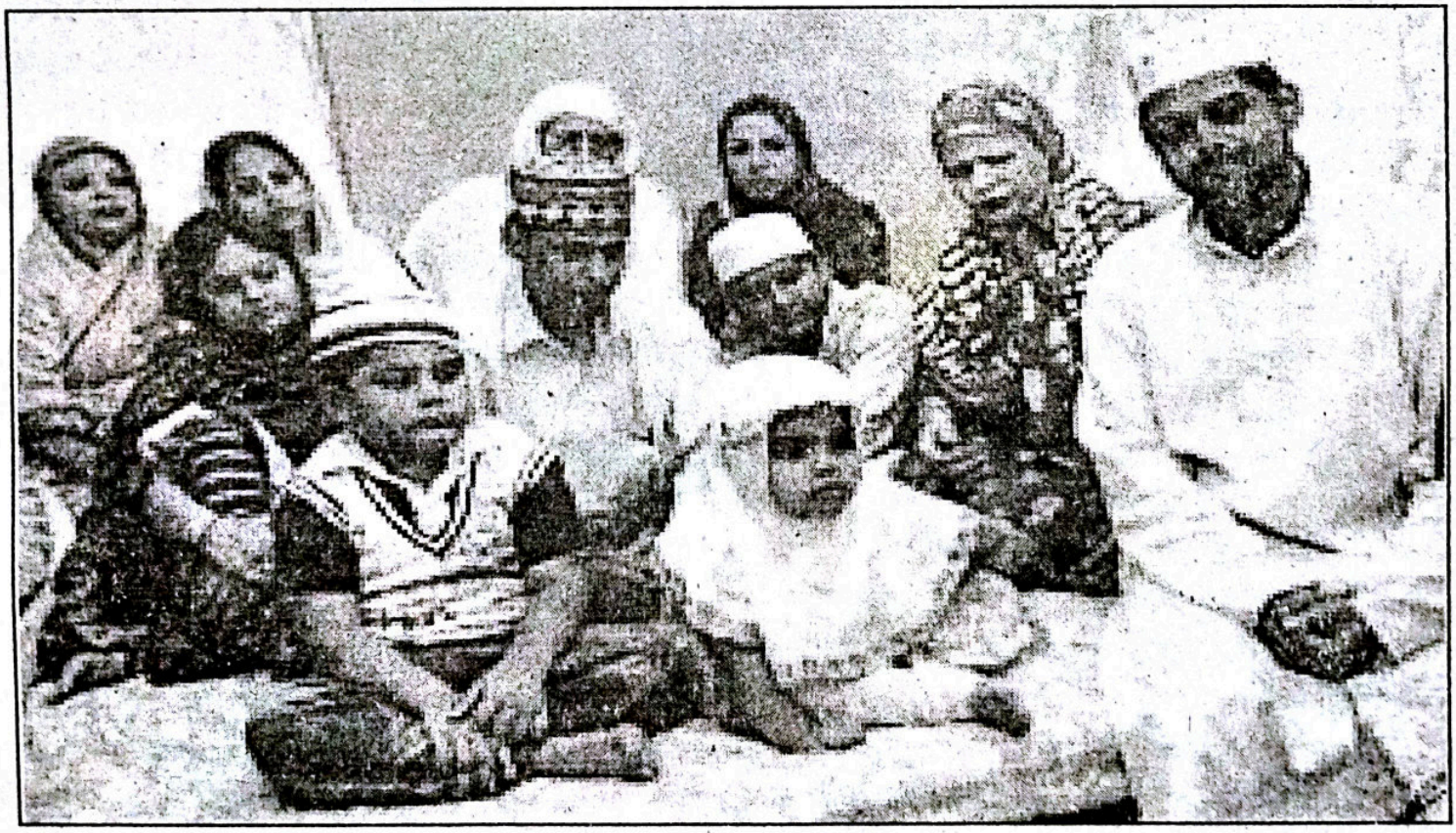

साथ-साथ मौसम के दुष्प्रभाव से बचाता भी है । यही तीनों लाभ दाम्पत्य जीवन में बंध जाने के बाद पति-पत्नी को प्राप्त होते हैं । उनके दिल आपस में जुड़े होते हैं, वे एक-दूसरे के लिए शोभा होते हैं । चारित्रिक बिगाड़ के वातावरण के दुष्प्रभाव से दोनों सुरक्षित रहते हैं ।

पति को निर्देशित किया गया कि–

1. दाम्पत्य जीवन भले तरीक़े से व्यतीत करो ।
(कुरआन, 4:19)

2. पत्नियों के महर (विवाह धन) प्रसन्नतापूर्वक अदा करो । (कुरआन, 4:4)

3. ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

''पत्नियों से अच्छा व्यवहार करो, औरत पसली से पैदा की गयी है जो टेढ़ी होती है, उसे सीधा करोगे तो टूट जाएगी ।'' (हदीस : बुख़ारी)

4. अपना धन अपने परिवार वालों पर ख़र्च करने को प्रोत्साहित किया गया । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''जो माल अपने घर वालों पर ख़र्च किया जाए, उस पर ईश्वर सबसे अधिक पुण्य देता है ।''



5. पत्नी और बच्चों में अच्छे संस्कार हों इसके लिए शिक्षा-दीक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है–

''ऐ ईमान वालो ! अपने आपको और अपने घर वालों को (नरक की) आग से बचाओ ।'' (कुरआन, 66:6)

''और अपने घर वालों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उस पर जमे रहो ।'' (कुरआन, 20:132)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

''मर्द अपने घर वालों का ज़िम्मेदार है, उसे अल्लाह के यहां जवाबदेही करनी होगी ।''

पत्नी के लिए ध्यान देने योग्य बातें–

1. पति का ख़याल रखो उसकी अकारण अवज्ञा न करो ।

2. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हिदायत की कि औरतों को चाहिए कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को घर में प्रवेश न करने दें, जिसे पति नापसन्द करता हो ।

3. अपने चरित्र की रक्षा करो । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''जो औरत नमाज़ पढ़े और अपनी आबरू की रक्षा करे और अपने पति का कहा माने वह स्वर्ग में किसी भी द्वार से प्रवेश कर सकती है ।''

4. पति अपनी आवश्यकतावश बुलाए तो अकारण इन्कार न करना चाहिए ।

5. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''नेक पत्नी ईश्वर का आशीष है कि जब पति उससे किसी काम को कहे तो प्रसन्नतापूर्वक करे, जब उसे देखे तो ख़ुश कर दे, जब बाहर हो तो अपनी इज़्ज़त और पति के माल की निगरानी करे।'' (हदीस : इब्ने-माजा)

इन शिक्षाओं और निर्देशों का पालन करने पर हमारे घर जन्नत का नमूना और दयाभाव का असीम भंडार साबित हो सकते हैं ।

माता-पिता

ईश्वर के बाद यदि किसी का उपकार हमारे ऊपर है तो वे हैं हमारे मां-बाप । जिन्हें ख़ुदा ने प्रेम, त्याग, करुणा और दया की मूर्ति बनाया है । इन्सान अपने मां-बाप के ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकता । इस तथ्य को पवित्र कुरआन में बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया गया है–

''तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो । यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो, न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टाचारपूर्वक बात करो और उनके आगे नम्रता और दयालुता से बिछे रहो और कहो–'मेरे रब ! जिस प्रकार उन्होंने बाल्यकाल में मुझे स्नेह दिया था तू भी उनपर दया कर ।'' (कुरआन, 17:23-24)

कुरआन के इस अंश में ईश्वर में विश्वास, उसके प्रति कृतज्ञता और केवल उसी की दासता स्वीकार करने के आदेश के बाद विस्तार से बूढ़े माता-पिता के बारे में निर्देश दिये गये हैं । वर्तमान में बूढ़े माता-पिता को महत्व न देने

और उन्हें 'ओल्ड एज होम' में पहुंचा देने की पृष्ठभूमि में उपरोक्त आदेश की सार्थकता सरलता से समझी जा सकती है । माता-पिता पर अपना धन ख़र्च करने पर उभारा गया तथा उसे नेकी का कार्य बताया गया जिस पर अच्छा बदला मिलेगा । एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से एक व्यक्ति ने अपने बाप की शिकायत की कि जब चाहते हैं मेरा माल ले लेते हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उसके बाप को बुलवा भेजा । लाठी टेकता हुआ एक बूढ़ा कमज़ोर आदमी उपस्थित हुआ । पूछने पर वह बोला–"ऐ अल्लाह के रसूल ! एक समय था जब यह (मेरा बेटा) कमज़ोर और बेबस था और मुझ में शक्ति थी । मैं मालदार था और यह ख़ाली हाथ था । मैंने कभी इसको अपनी चीज़ लेने से नहीं रोका । आज मैं कमज़ोर हूं और यह शक्तिशाली है, मैं ख़ाली हाथ हूं और यह मालदार है । अब यह अपना माल मुझ से बचा-बचाकर रखता है ।" बूढ़े का यह बयान सुनकर ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की आंखों में आंसू आ गये और बूढ़े के लड़के को सम्बोधित करके कहा–"तू और तेरा माल तेरे बाप का है ।"

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के एक कथन के अनुसार मां-बाप की ओर प्रेम भाव से देखना भी इबादत है–

"जो नेक सन्तान भी अपने माता-पिता पर मुहब्बत भरी एक दृष्टि डालती है, उसके बदले में ईश्वर उसको एक हज का पुण्य प्रदान कर देता है ।" (हदीस : मुस्लिम)

मां

माता-पिता की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मां का योगदान अधिक है । इस तथ्य को क़ुरआन बड़े सशक्त ढंग से प्रस्तुत करता है–

"और हमने इन्सान को उसके माता-पिता के बारे में ताकीद की है । उसकी मां ने कष्ट पर कष्ट उठाकर उसे गर्भ में रखा और दूध छूटने में दो वर्ष लगे । तुम मेरा (अल्लाह का) एहसान मानो और अपने माता-पिता का भी एहसान मानो ।" (क़ुरआन, 31:14)

स्पष्ट है अल्लाह का कृतज्ञ होना ही चाहिए जिसने माता-पिता के मन में ममत्व का भाव कूट-कूटकर भर दिया । पिता सन्तान के पालन-पालन के लिए धनोपार्जन में परिश्रम करता है, उनके भविष्य की चिन्ता करता है तो दूसरी ओर मां बच्चों पर अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है । जन्म देने की तकलीफ़ सहती है, दूध पिलाती है और हर प्रकार की सेवा करती है, इसलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मां की सेवा को प्राथमिकता दी है ।

"एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा कि मेरे अच्छे बर्ताव का सबसे अधिक हक़दार कौन है ? आप (सल्ल०) ने उत्तर दिया, "तुम्हारी मां ।" उसने कहा फिर ? आपने कहा, "तुम्हारी मां ।" उसने पूछा उसके बाद कौन ? आपने कहा, "तुम्हारी मां ।" जब उस व्यक्ति ने चौथी बार भी यही प्रश्न किया तो आपने उत्तर में कहा, "तुम्हारे पिता ।" (हदीस : बुख़ारी)

अर्थात सेवा और अच्छे व्यवहार के अधिकार के मामले में माता का हिस्सा 75 प्रतिशत तथा पिता का 25 प्रतिशत है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के एक अन्य कथन के अनुसार–"जन्नत मां के पैरों तले है ।" अर्थात मां की सेवा करके स्वर्ग प्राप्त किया जा सकता है ।

सन्तान

परिवार के तीसरे महत्वपूर्ण अंग को लीजिए जो ईश्वर का बहुमूल्य उपहार है । बच्चे की किलकारी माता-पिता के ही नहीं अन्य लोगों के दिल को भी गुदगुदाती है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बच्चों को 'स्वर्ग के पुष्प' की संज्ञा दी । सन्तान के संबंध में महत्वपूर्ण इस्लामी शिक्षाएं संक्षेप में प्रस्तुत हैं–

1. सुरक्षा

"अपनी सन्तान को ग़रीबी के डर से मार न डालो, हम उन्हें भी और तुम्हें भी जीविका प्रदान करते हैं ।"

(क़ुरआन, 17:31)

ध्यान रहे कि उपरोक्त आदेश की परिधि में भ्रूण-हत्या भी आती है ।

2. स्वयं अच्छा नमूना बनें और बच्चों में भी अच्छे संस्कार डाले जाएं, (क़ुरआन, 66:6)। उन्हें ईश-भक्ति (नमाज़) का आदेश दिया जाए, (क़ुरआन 20:132)।

3. इस्लामी शिक्षा यह है कि बच्चों स मुहब्बत से पेश आओ । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) बच्चों से बहुत प्यार करते थे । बच्चों को गोद में उठाकर चूमते थे । जो बच्चे संपर्क

में रहते उनको अच्छी बातें सिखाते थे । बच्चों की बचकानी हरकतों पर कभी गुस्सा न करते । आपके नाती हज़रत हसन (रज़ि॰) और हज़रत हुसैन (रज़ि॰) नमाज़ पढ़ने के बीच भी आपकी पीठ पर चढ़ जाते थे । आजकल घर के लोगों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है, इसलिए वे अवसाद का शिकार हो जाते हैं ।

4. बच्चों को बुरी संगत में कभी बैठने न दिया जाए । हदीस में इसको एक सुन्दर उदाहरण से इस प्रकार समझाया गया है–"अच्छे और बुरे दोस्त का उदाहरण ऐसा ही है जैसे इत्र (सुगंध) बेचने वाला और भट्टी फूंकने वाला लुहार । इत्र वाले से इत्र न भी लोगे तो सुगंध पाओगे और यदि भट्टी फूंकने वाले के पास जाओगे तो तुम्हारे कपड़े जलेंगे या दुर्गंध पाओगे ।"

5. पुत्र-पुत्रियों के बीच भेदभाव रखना इस्लाम में वर्जित है, आगे की चर्चा में यह और स्पष्ट हो जाएगा ।

बेटी है अनमोल

अत्यन्त खेद का विषय है कि कन्या का जन्म आज भी शोक और चिन्ता का कारण बनता है, जिसका चित्रण 1450 वर्ष पूर्व किया गया था–

"जब उनमें से किसी को बेटी के जन्म की शुभ सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है ।"

(कुरआन, 16:58)

अरब में अज्ञानकाल के लोग बेटियों को ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ देते थे–

"और जब जीवित गाड़ी गयी कन्या से पूछा जाएगा कि उसकी हत्या किस अपराध में की गयी ।"

(कुरआन, 81:8-9)

इस्लाम की क्रान्तिकारी शिक्षाओं एवं हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के प्रयासों से लोगों में लड़कियों के प्रति सोच बदल गयी और तिरस्कार के स्थान पर उन्हें प्रेम और स्नेह प्राप्त होने लगा ।

1. कुरआन में बेटी के जन्म की सूचना को 'बुशरा' कहा गया जिसका अर्थ है शुभ-सूचना ।

2. सन्तान-वध अपराध घोषित किया गया तथा कन्या-वध अत्यन्त क्रूर और जघन्य अपराध माना गया ।

(कुरआन, 81:8-9)

3. ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"जो व्यक्ति दो लड़कियों का पालन-पोषण करे यहां तक कि वे जवान हो जाएं, तो क़ियामत (प्रलय) के दिन मेरा और उनका साथ इस प्रकार होगा (आपने ऊंगलियों को मिलाकर दिखाया) ।" (हदीस : बुख़ारी)

"बेटियां माता-पिता के लिए नरक की आड़ बन जाएंगी ।" (हदीस : इब्ने-माजा)

"जब किसी के यहां लड़की पैदा होती है तो ईश्वर उसके यहां फ़रिश्ते भेजता है जो आकर कहते हैं–ऐ घर वालों तुम पर शान्ति हो । वे लड़की को अपने परों की छाया में ले लेते हैं और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं–"यह अबला है जो अबला से जन्मी है, जो इस बच्ची की देखभाल और पालन-पोषण करेगा, प्रलय तक ईश्वर की सहायता उसको प्राप्त होती रहेगी ।" (हदीस : तबरानी)

"लड़कियों से नफ़रत न करो, वे तो हमदर्द और मूल्यवान हैं ।" (हदीस : मुसनद अहमद)

एक व्यक्ति, जो पश्चाताप की आग में जल रहा था, हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पास आया और बोला : हम अज्ञानकाल में मूर्तिपूजा करते और औलाद को मार डालते थे । मेरी एक बेटी थी, जब मैं उसे बुलाता तो वह दौड़कर मेरे पास चली आती थी । एक दिन मैंने उसको बुलाया तो वह ख़ुशी-ख़ुशी चली आयी और मेरे पीछे-पीछे चल पड़ी । जब मैं एक कुएं के पास पहुंचा तो मैंने उसे कुएं में डाल दिया, वह अब्बा-अब्बा कहकर पुकारने लगी, यह उसकी आख़िरी आवाज़ थी।" यह घटना सुनकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के आंख से आंसू जारी हो गये यहां तक कि आपकी मुबारक दाढ़ी भीग गयी ।

इस प्रकार अज्ञानकाल की कन्या-वध की क्रूरतम प्रथा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने पूर्ण रूप से समाप्त कर दी और बेटों को बेटियों पर प्राथमिकता देना समाप्त हो गया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और इस्लाम कन्या वर्ग के लिए वरदान और सम्पूर्ण दयालुता हैं ।

आज फिर विज्ञान के सहारे लिंग परीक्षण कराकर कन्या को संसार में आने से रोका जा रहा है । यह भी उसी प्रकार की क्रूरता है, इसे भी इस्लामी शिक्षाओं के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है ।

लोक परलोक

■ डॉ॰ सलीम ख़ान

मलंग बाबा के दरबार में हमेशा की तरह मेला लगा हुआ था । ज़्यादातर मठों और दरगाहों पर सालाना मेलों का रिवाज है । साल में एक बार हफ़्ता दस दिन के लिए झूले लगते हैं, होटल सजते हैं, मनोरंजन की विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं और लोग वहां मौज-मस्ती के लिए जाते हैं । लेकिन मलंग बाबा का मामला उनसे अलग था । यहां लोग अपने दुख दूर करने के लिए आते थे । यहां उनके ज़ख़्मों पर मरहम रखा जाता था, इसलिए यहां हर शाम को अच्छी ख़ासी भीड़ लग जाती थी और रात गये तक यह महफ़िल सजी रहती थी ।

दुनिया के सारे दुखियारे एक समुदाय होते हैं । इसलिए मलंग बाबा के दरबार में आने वालों के बीच कोई भेदभाव नहीं था...कोई हिन्दू होता तो कोई मुसलमान...सिख और ईसाई भी जब ग़मों में घिर जाते तो वे भी यहां हाज़िर हो जाते थे । बच्चा, बूढ़ा, जवान पुरुष, स्त्री, अमीर, ग़रीब हर तरह के लोग यहां दिखायी देते थे क्योंकि परेशानियों का शिकार हर कोई होता है ।

इस भीड़ में अशोक चन्द्र भी अपनी बीवी शकुन्तला और अपने बेटे आकाश चन्द्र के साथ बैठा अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा था । आकाश के जन्म के पश्चात वे दोनों पहली बार यहां आये थे । इसलिए कि इस बीच उन्हें आवश्यकता ही नहीं पड़ी थी । कई बार अशोक ने शकुन्तला से कहा था कि बाबा के चरणों में एक बार आकाश को डालकर उनका आशीर्वाद ले लिया जाए । हर बार निर्णय भी लिया गया मगर कोई न कोई ज़रूरी काम निकल आता था और बात टाल दी जाती थी । यहां तक कि आकाश पांच साल का हो गया ।

परंतु अब की बार वे तीनों एक ऐसी मुसीबत में फंस गये कि उनको बाबा मलंग के दर्शन को आना ही पड़ा । इससे पहले कि उनका नम्बर आता, 'हटो बचो' का शोर सुनायी दिया और वहां उपस्थित श्रद्धालु आने वाले को रास्ता देने लगे । ये चार-पांच लोग थे जिन्होंने एक नवयुवक को गोद में उठा रखा था । नवयुवक बिल्कुल हड्डी का पिंजर था । गालों के पिचकने से चेहरे की हड्डियां उभर आयी थीं । आंखें ऐसी निकली हुई थीं जैसे उबल पड़ेंगी । दाढ़ी बढ़ी हुई, बाल बिखरे हुए, उस इन्सान की हालत एक तरह से ज़िन्दा लाश के समान थी । वे कुछ लोग जिनमें पुरुष और स्त्री दोनों शामिल थे, भीड़ को चीरते हुए अन्दर आये । किसी ने उनसे ये नहीं कहा कि उनकी बारी नहीं है । सब दुखियारे थे इसलिए दूसरों के दुख दर्द का उन्हें एहसास था । "लेकिन यहां आने से क्या फ़ायदा ?" शकुन्तला बोली । अशोक ने जवाब दिया, "ये दुनिया दुकानदारी नहीं है, जहां सिर्फ़ फ़ायदे या नुक़सान के आधार पर व्यापार होता हो । यहां तो बिना लाभ और घाटे के भी बहुत कुछ किया जाता है ।"

अशोक और शकुन्तला की बातचीत चल ही रही थी कि वे लोग वापस होने लगे । नवयुवक की शारीरिक अवस्था में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा था परंतु उसकी आंखों में एक चमक ज़रूर पैदा हो गयी थी, ज़िन्दगी की चमक । साथ वालों की आंखें भी भीगी हुई नहीं थीं, कुछेक के चेहरों पर मुस्कुराहट भी थी ।

"अरे ये क्या ?" शकुन्तला ने आश्चर्यचकित होकर पूछा । अशोक बोला, "ये चमत्कार है, इसी के लिए लोग यहां आते हैं । मैं भी एक बार इसी तरह यहां लाया गया था. ..और तुम जानती हो मलंग बाबा ने मुझसे क्या कहा था ?"

शकुन्तला ने कहा, "मैं कैसे जान सकती हूं ? न मैं तुम्हारे साथ और न तुमने मुझे कभी बताया ।"

"हां...मैंने तुम्हें नहीं बताया । लेकिन मुझे अब भी उनके शब्द याद हैं । उन्होंने कहा था, बेटे अशोक, मृत्यु और उसका समय निर्धारित है, न वह अपने समय से पहले आएगी और न अपने वक़्त से टलेगी । इसलिए मृत्यु का भय अपने मन से निकाल दो । मौत के डर से जीने वाला ज़िन्दा लाश होता है ।" उनके शब्दों ने मेरा इलाज कर दिया था और मैं स्वस्थ हो गया था ।"

"लेकिन तुम्हें हुआ क्या था ?" शकुन्तला ने आश्चर्य

से पूछा । "बहुत पुरानी बात है ।" अशोक बोला, "उस वक़्त मैं दसवीं कक्षा का विद्यार्थी था । मैं अचानक बीमार हो गया । न जाने कैसा बुख़ार था, हर तरह के इलाज के बावजूद बुख़ार कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रहा था । यहां तक कि मैं अचानक बेहोश हो गया । फिर मैंने एक भयानक सपना देखा । मैंने देखा कि मेरे शरीर से आत्मा बाहर आ गयी है और मेरे सामने खड़ी मुस्कुरा रही है । उसे देखकर मेरी आंखें पथरा गयी हैं । मेरे पास खड़े घर वाले दहाड़ें मार-मार रोने लगे हैं । वे मेरी आंखें बंद करते हैं और मैं उन्हें फिर खोल देता हूं । वे फिर उन्हें बंद करते हैं और मैं फिर खोल देता हूं । वे घबरा जाते हैं और साहस करके फिर पलकों को गिरा देते हैं ।"

अब मैं चीख़ने लगता हूं । "तुम लोग मेरी आंखें बंद क्यों कर देते हो ? ये देखो मेरी आत्मा मेरे सामने खड़ी है । मैं मरा नहीं हूं ।"

सारे रिश्तेदार भयभीत होकर थरथर कांपने लगते हैं । कोई कहता है, "इसका क्रियाकर्म तुरंत करो । इसके अन्दर किसी प्रेत आत्मा ने घर कर लिया हैं ।"

ये सुनकर मेरा पारा चढ़ जाता और मैं ज़ोर-ज़ोर से चीख़ने लगता हूं, "क्या बकते हो ? कैसी प्रेत आत्मा ? किसी और की नहीं, ये तो मेरी अपनी आत्मा है । देखो, मुझे देखकर ये मुस्कुरा रही है ।"

इसी चीख़-पुकार में मेरी आंख खुल जाती है और मैं अपने आपको मलंग बाबा के समक्ष पाता हूं । मैं देखता हूं मेरे परिवार वाले, जिन्हें मैं अपनी अर्थी के पास खड़ा देख रहा था, मेरे पास खड़े हैं लेकिन वे नहीं जानते कि मैंने क्या स्वप्न देखा है । वे तो बस यह अनुभव कर रहे थे कि मैं बुख़ार के कारण अनाप-शनाप बक रहा हूं और मेरा अंतिम क्षण पास आ लगा है । ऐसे में जब तमाम दवाइयां बेअसर हो गयी और सारे डॉक्टर बेबस हो गये तो मुझे मलंग बाबा के पास ले आया गया । जैसे ही मैंने आंख खोली, बाबा ने मेरे माथै पर हाथ रखा और कहा कि तुम मरना नहीं चाहते और हम भी नहीं चाहते कि तुम मरो, बल्कि हम में से कोई भी मरना नहीं चाहता । परंतु बेटे, हमारे चाहने या न चाहने से क्या होता है ? हम सबकी मौत का क्षण सुनिश्चित है और उस समय हमें अपने परमात्मा की शरण में जाना ही होगा । मृत्यु को जीवन उसी ने प्रदान किया है और ज़िन्दगी को मौत भी वही देता है । एक दिन ऐसा आएगा जब वह मौत को मौत दे देगा, लेकिन उस दिन से पहले हर जानदार को मौत से गले मिलना ही होगा । मलंग बाबा का हर शब्द मुझे प्रभावित कर रहा था । जब मैं यहां से लौटा तो बुख़ार अवश्य था परंतु वह कम होना शुरू हो गया था ।"

अशोक की बातों पर विश्वास करना शकुन्तला के लिए असंभव था । अशोक फिर एक बार अपने अतीत में लौट गया, जब वह ख़ुद इंजीनियरिंग में ज़बरदस्त कामयाबी के बाद नौकरी के लिए दर-दर की ठोकर खा रहा था । बड़े दिनों में नौकरी की एक दो कॉल आती और उसमें भी विफलता हाथ लगती । वह निराश होने लगा था । मानो अब जीवन भर बेरोज़गार ही रहना पड़ेगा । उस संकटकाल में फिर एक बार उसे मलंग बाबा की याद आयी । वह उनकी सेवा में हाज़िर हुआ और अपनी मायूस झोली फैला दी । मलंग बाबा ने उसकी कथा सुनी और कहा ।

"अशोक, इस दुनिया में कोई सदैव बेकार नहीं रहता । लेकिन याद रखो, समय से पहले और भाग्य से ज़्यादा किसी को नहीं मिलता, और जब समय आता है तो कोई भी उसके भाग्य से कुछ छीन नहीं सकता और उससे पूर्व कोई किसी को कुछ दे भी नहीं सकता ।" बाबा ने उसे आशीर्वाद दिया । उसके पश्चात एक नयी चेतना और विश्वास के साथ उसने पुन: नौकरी की तलाश शुरू कर दी । जल्दी ही उसे नौकरी मिल गयी और उसकी मां ने उसके विवाह की तैयारी शुरू कर दी । अशोक ज़िला अधीक्षक के कार्यालय में कार्यरत था, परंतु उसकी माता ने अपने आपको कलेक्टर की मां समझना शुरू कर दिया था । उसने जब अपने बेटे के लिए लड़की की तलाश शुरू की तो कोई लड़की उसे अच्छी ही नहीं लगती थी । इसी बीच शकुन्तला का रिश्ता आया । इससे पहले कि शकुन्तला को वह रिजेक्ट करतीं, शकुन्तला के घर वालों ने रिश्ता करने से इन्कार कर दिया। अशोक की मां के लिए ये बहुत बड़ा अपमान था । उसके मन को ठेस पहुंची और फिर उसने ठान ली कि वह हर क़ीमत पर शकुन्तला को अपनी बहू बनाकर रहेगी ।

समस्या विवाह से अधिक अहंकार की थी । वह लड़के की मां थीं । अपने स्तर से गिरना नहीं चाहती थीं, इसलिए परेशान होकर मलंग बाबा की सेवा में हाज़िर हुईं । बाबा मलंग आये दिन इस प्रकार की समस्याएं सुनते थे । उन्होंने सुझाव दिया, "तुम्हारी समस्या का एकमात्र समाधान यह है कि तुम ये मामला अशोक के हवाले कर दो, वह

शकुन्तला को तैयार कर लेगा और शकुन्तला अपने माता-पिता को राज़ी कर लेगी और अगर वे न भी मानें तो क्या फ़र्क़ पड़ता है ? प्रसिद्ध कहावत भी तो है...मियां बीवी राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी ।''

अशोक की मां ने कहा, ''वह तो ठीक है लेकिन मैं अपने बेटे से यह कैसे कह सकती हूं ?''

''इस समस्या का भी समाधान है ।'' बाबा बोले, ''तुम अशोक को मेरे पास भेज दो, मैं उसे समझा दूंगा ।''

अशोक की मां खुशी-खुशी वापस आ गयी । बाबा का उपाय कारगर सिद्ध हुआ । अशोक बड़ी आसानी से शकुन्तला को शादी के लिए राज़ी करने में सफल हो गया और उसके मां-बाप अपनी बेटी की मर्ज़ी के आगे मजबूर हो गये ।

विवाह के बाद अशोक, शकुन्तला और उसकी मां, सब मलंग बाबा को भूल गये । लेकिन जब तीन साल बीत जाने के बाद भी संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ तो पहली बार शकुन्तला अशोक के साथ यहां आयी । बाबा ने अशोक को देखा तो मुस्कुराये । अशोक ने अपनी समस्या उनके समक्ष रखी तो वे बोले, ''अशोक, तुम मौत और ज़िन्दगी, दोनों को अपने नियंत्रण में करना चाहते हो । तुम अपनी मर्ज़ी से जीना चाहते हो और अपनी मर्ज़ी से अपना वारिस पैदा करना चाहते हो । हालांकि ऐसा नहीं हो सकता । जन्म की तारीख़ भी मरने की तिथि की भांति निर्धारित है । धीरज रखो, अगर तुम्हारे कुल को बाक़ी रहना है तो तुम्हें संतान सुख अवश्य प्राप्त होगा ।''

शकुन्तला ने पूछा, ''लेकिन स्वामी जी, ऐसा कब होगा ?'' बाबा ने कहा, ''बेटी ये बात तो मैं भी उसी प्रकार नहीं जानता जैसे तुम नहीं जानतीं । ईश्वर के सिवा किसी इन्सान के पास यह ज्ञान नहीं है ।''

शकुन्तला बोली, ''लेकिन स्वामी जी, आप सर्वशक्तिमान ईश्वर से हमारे लिए प्रार्थना तो कर सकते हैं ?''

''क्यों नहीं ।'' बाबा बोले, ''मैं अवश्य तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा ।'' मलंग बाबा की बात में इतना आत्मविश्वास था कि शकुन्तला को महसूस हुआ कि वह गर्भवती हो गयी है । तीन महीने बाद वह वास्तव में गर्भवती हो गंयी थी और एक साल बाद उसने आकाश को जन्म दे दिया था ।

इस बात को पांच साल का लंबा समय बीत चुका था । इस बीच उन्हें मलंग बाबा की याद कम ही आयी लेकिन जब उन्हें लगा कि आकाश बावला हो गया है तो वे फ़ौरन उसे लेकर बाबा की ख़िदमत में हाज़िर हो गये ।

आकाश की समस्या बड़ी गंभीर थी । उसने एक बार आसमान में एक विमान देखा और बचपन की जिज्ञासा के अंतर्गत प्रश्न किया, ''पापा...वह क्या है ?''

अशोक ने कहा, ''वह हवाई जहाज़ है ।''

''अच्छा, हवाई जहाज़ क्या होता है ?''

अशोक ने झुंझलाकर कहा, ''अपनी मम्मी से पूछो ।''

आकाश ने झट शकुन्तला से पूछा, ''मम्मी, ये हवाई जहाज़ क्या होता है ?''

शकुन्तला बोली, ''बेटी ये सवारी होती है जो हवा में उड़ती है, लोग इसमें बैठकर आकाश की सैर करते हैं ।''

आकाश ने ये सुना तो उसकी चंचल आंखों में चमक पैदा हुई । उसने कहा, ''अच्छा, ऐसा है तो मुझे भी हवाई जहाज़ चाहिए । मैं भी आकाश में तैरूंगा ।''

शकुन्तला परेशान हो गयी, इसलिए कि आकाश ने ज़िद पकड़ ली थी । उसने अशोक से पूछा, ''क्या किया जाए ?'' अशोक ने कहा, ''इसमें क्या मुश्किल है ? इसे बाज़ार से हवाई जहाज़ का खिलौना दिला देंगे । बच्चा है, बहल जाएगा ।''

शाम को वे बाज़ार गये और हवाई जहाज़ का गुब्बारानुमा खिलौना आकाश को दिला दिया । आकाश उसे लेकर बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन उसकी खुशी ज़्यादा देर की नहीं थी । उस खिलौने को थोड़ी देर उलटने-पलटने के बाद उसने मम्मी से कहा, ''अब मैं इसमें बैठकर आकाश की सैर करना चाहता हूं ।'' शकुन्तला ने हंसकर कहा, ''ठीक है बेटे, अब ये तुम्हारा विमान है। तुम जो चाहो करो ।'' शकुन्तला ने तो मज़ाक़ किया लेकिन आकाश गंभीर था। उसने कहा, ''मम्मी मुझे इसमें बैठाओ, मुझे आसमान की सैर करनी है ।''

शकुन्तला आकाश की बात से घबरा गयी । अब तक वे लोग घर आ चुके थे । शकुन्तला ने आकाश को लाख बहलाया-फुसलाया, मिठाई खिलाई, कहानी सुनायी...क्या-क्या जतन न किये लेकिन आकाश को न मानना था न वो माना । थोड़ी-थोड़ी देर के बाद वह ज़िद करता कि मुझे इसमें बैठाओ...मैं आकाश की सैर करूंगा । शकुन्तला और अशोक दोनों घबरा गये । आकाश ने खेलना-कूदना बन्द कर दिया था, खाना-पीना छोड़ दिया था । वह बस अपने हवाई

जहाज़ को सीने से लगाये रहता और यही बात दोहराये जाता । मुझे अपने जहाज़ में बैठाओ, मुझे आसमान की सैर करनी है । ये सुनते-सुनते अशोक के कान पक गये । उसने उस हवाई जहाज़ के गुब्बारे से हवा निकाल दी । अब वो पिचक गया था । ये देखते ही आकाश दहाड़ें मार-मारकर रोने लगा..."मेरा जहाज़, मेरा हवाई जहाज़ । पापा अपने ये क्या कर दिया । मुझे अपना जहाज़ वापस चाहिए । मुझे मेरा जहाज़ दे दो ।" अब एक नया हंगामा खड़ा हो गया । अशोक ने गुस्से में आकर आकाश को एक थप्पड़ जड़ दिया । अपने बेटे की ये हालत देखकर उसकी माता शकुंतला मचल पड़ी । वह अशोक से लड़ पड़ी, "आपने बच्चे को क्यों मारा ? आख़िर वह बच्चा है, ज़िद तो करेगा ही । अगर आप इसे बहला नहीं सकते हैं तो छोड़ दीजिए लेकिन अपना हाथ न छोड़िये ।" और फिर वह आकाश के आंसू पोंछने लगी और उसे सीने से लगा लिया । आकाश रो-रोकर यही कहता जाता था, "मेरा हवाई जहाज़ । मुझे मेरा हवाई जहाज़ चाहिए ।"

शकुन्तला ने कहा, "बेटे रो मत, मैं तुझे तेरा हवाई जहाज़ देती हूं ।" यह कहकर उसने जहाज़नुमा गुब्बारे में हवा भरनी शुरू की । जैसे-जैसे वह फूलता जाता, आकाश के चेहरे पर मुस्कान फैलती जाती । वह ख़ुशी से ताली बजाने लगा और अपनी मां के हाथ से खिलौना लेकर अपने सीने से लगा लिया । देर तक वह उसे अपने छाती से चिमटाये रहा, ख़ुश होता रहा और खेलता रहा । अशोक और शकुन्तला भी ख़ुश थे कि आकाश बहल गया । लेकिन उनकी ख़ुशी ज़्यादा देर तक की नहीं थी । थोड़ी देर बाद फिर आकाश के मस्तिष्क में आसमान की सैर करने का विचार आया और उसने फिर ज़िद शुरू कर दी ।

फिर वही कहानी दोहराई गयी । खिलौने का फूलना और फिर पिचकना एक नियम-सा बन गया था । जब आकाश की ज़िद आसमान को छूने लगती तो उसके मां-बाप उस खिलौने से हवा निकाल देते और जब वह लगातार रोने लगता तो उसमें हवा भर देते, उससे वो कुछ देर के लिए बहल जाता । लेकिन फिर वही ज़िद और फिर वही सब कुछ । आकाश का चेहरा मुरझा गया था । उसका स्वास्थ्य प्रभावित होने लगा था । अशोक और शकुन्तला अपने बेटे की ऐसी हालत देखकर बड़े परेशान थे कि अचानक शकुन्तला को मलंग बाबा का ख़याल आया और अशोक को अपनी ओर से देरी करने पर गुस्सा भी आया ।

मलंग बाबा को अपनी समस्या बताने के बाद अशोक बोला, "बाबा, मैं तो इसे समझा न सका । अब आप ही इसे समझाएं ।" आकाश के बारे में सुनकर मलंग बाबा ने कहा, "तुम इसे समझाने में किस तरह कामयाब हो सकते थे ? जबकि तुम ख़ुद अभी तक इस बात को समझे नहीं हो ?"

अशोक यह सुनकर चौंक पड़ा । उसने कहा, "आप कैसी बातें करते हैं गुरुदेव ? क्या आकाश में और मुझमें कोई अन्तर नहीं है ।" बाबा बोले, "हां...मैं तो यही समझता हूं । यह संसार इसी तरह खेलने की वस्तु है...माया है बस माया...इसकी हक़ीक़त यही है । तुम भी आकाश की तरह इसी को सब कुछ समझते हो, इसके सहारे परलोक की सैर करना चाहते हो ।

अशोक ने कहा, "आपने सही फ़रमाया । अब मैं क्या करूं ?" "तुम इस लोक और परलोक में फ़र्क़ करो । इस लोक से खेलो लेकिन इसे अपने जीवन का उद्देश्य न बनाओ । अगर तुमने ऐसा न किया तो आकाश की तरह रोते रहोगे । जीवन का परम् उद्देश्य तो परलोक में मोक्ष की प्राप्ति है । इस लोक का जीवन तो मात्र एक वाहन के समान है जिस पर बैठकर मनुष्य अपने परलोक को सफल बनाता है ।" "मैं समझ गया स्वामी...लेकिन अब आकाश का क्या किया जाए ?" "आकाश के लिए यह करो कि इसके गुब्बारे में इतनी हवा भरो कि वो फट जाए ।"

"इससे क्या होगा ? वह और रोएगा ।"

"हां...रोएगा तो ज़रूर...लेकिन ये जान जाएगा कि गुब्बारे की हक़ीक़त क्या है ? ये फट तो सकता है लेकिन आसमान की सैर नहीं कर सकता । यही आत्मज्ञान आकाश का इलाज है । पहले गुब्बारे के फूट जाने के बाद उसे दूसरा गुब्बारे वाला हवाई जहाज़ दिला देना । तब वह उससे उड़ने की ज़िद नहीं करेगा । इसलिए कि उसे पता चल गया है कि इस ज़िद के कारण गुब्बारा फट जाता है । याद रखो अशोक...संसार में सुख और दुख का मूलाधार मनुष्य की अपनी इच्छा और अपेक्षा पर होता है । जब भी वह किसी वस्तु से अनुचित अपेक्षा करता है तो उसका ऐसा करना उसे निराश और दुखी कर देता है । इसलिए अगर तुम और आकाश ख़ुश रहना चाहते हो तो संसार और गुब्बारे से उसकी क्षमता से अधिक अपेक्षा न करो, वरना तुम दोनों हमेशा रोते ही रहोगे ।"

लाटरी से दूर रहिए

● एम॰ अब्दुल हक़

लाटरी एक एक ऐसा जुआ है जो योजनाबद्ध रूप से सरकार की छत्रछाया में चल रहा है । भारतवर्ष में यह सर्वप्रथम 1966 ई॰ में केरल सरकार के द्वारा प्रचलित किया गया । इसके बाद देश के हर छोटे बड़े नगर में पग-पग पर लाटरी के टिकट बिकते दिखायी देते थे और लोग इनको ख़रीद कर रातों-रात करोड़पती बनने के स्वप्न देखने लगते थे ! लाटरी के टिकट पर इनाम के दो करोड़ बीस लाख की इस कल्पना के साथ ही नहीं मालूम कितने लोग बेवक़ूफ़ों की जन्नत की सैर करने लगते । सच ! बड़ा आनन्द आता होगा । और बस, यही इसकी लोकप्रियता का विशेष कारण रहा ।

देश में लाटरी की लोक प्रियता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि एक ऐसा समाचार पत्र भी प्रकाशित होने लगा जो लोगों को केवल लाटरी के विषय में तमाम जानकारी देता और इस समाचार पत्र का प्रकाशन पन्द्रह हज़ार तक था ।

वास्तव में पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध ने हमें कुछ ऐसा मोह लिया है कि आज हम उसके बिना अपने जीवन में नीरसता का अनुभव करने लगे हैं । कितना गर्व था हमें अपनी सभ्यता पर लेकिन नहीं आज तो पश्चिम की सभ्यता की हर अदा हमें प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ती ।

यह लाटरी भी पाश्चात्य सभ्यता की देन ही तो है जहां इसकी शुरुआत सोलहवीं शताब्दी में हुई थी ।

इंग्लैंड में महारानी एलिजाबेथ ने 1569 ई॰ में राज्य लाटरी की शुरुआत की इसके पूर्व इटली, हालैंड, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी और आस्ट्रिया आदि में यह प्रारम्भ हो चुकी थी । परन्तु इन्हीं देशों में जब लाटरी के कड़वे और कसीले फल जनता के समक्ष आये और समाज की नैतिक एवं आर्थिक गिरावट चरम सीमा तक पहुंच गयी तो वहां की जनता ने लाटरी के प्रति घोर विरोध प्रदर्शन किय परिणामस्वरूप सरकार को राज्रू लाटरियों का समापन करना पड़ा, फलस्वरूप इंग्लैंड ने 1826 ई॰ में, फ्रांस ने 1836 में, अमेरिका ने 1833

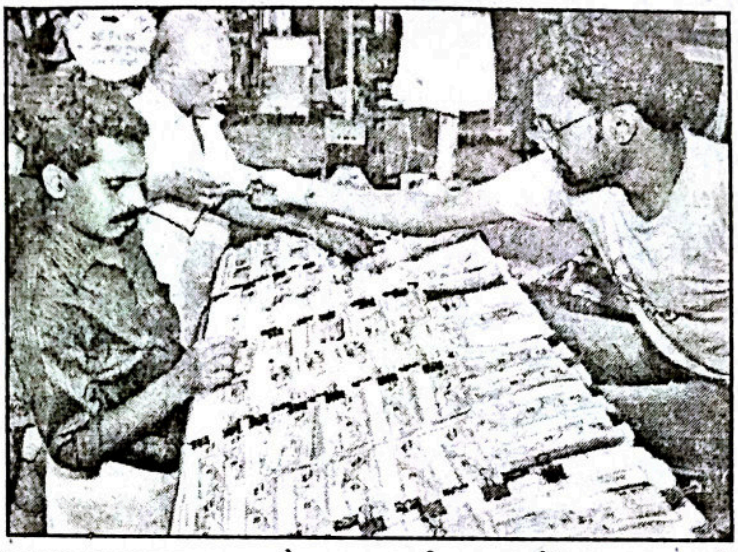

तथा यू॰एस॰एस॰आर॰ ने 24 जुलाई 1913 में हर प्रकार की लाटरियों पर वैधानिक प्रतिबंध लगा दिया ।

इन ऐतिहासिक अनुभवों के होते हुए भी हमारे देश में लाटरी को राज्य की आय का साधन बनाकर जनता की नैतिक भावनाओं से खिलवाड़ किया जाने लगा । निस्सन्देह लाटरी के द्वारा सरकार की आय में वृद्धि तो होती है परन्तु क्या किसी वस्तु का आर्थिक रूप से लाभप्रद होना इस बात की दलील है कि वह नैतिक और वैधानिक रूप से भी जनता के लिए लाभप्रद है वरन् इस दलील से लाभ लेकर जिस्मफ़रोशी के अड्डों का सरकार की ओर से प्रबंध भी ठीक हो सकता है, क्योंकि इससे भी तो सरकार की आय में वृद्धि होगी ।

लाटरी एक विकसित जुए का रूप है । लोग करोड़पति बनने के भाव में इस जुए के आदि होते जा रहे हैं । मेहनत के बिना धन प्राप्त करने का विचार मुफ़्त की दौलत प्राप्त करने और हड़पने की भावना दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । कम समय तथा कम से कम मेहनत में अच्छी आय और सरल उपायों से धन प्राप्त करने का विचार लोगों में संभव उपायों से दूसरों की जेब हल्की करने की भावना पैदा करता है । साथ ही साथ आर्थिक मामलों में योग्यता और परिश्रम पर भरोसा न करके क़िस्मत पर भरोसा करना वह भयानक स्थिति हैं जो लाटरी के द्वारा उत्पन्न हो रही है ।

लाटरी की मोटी-मोटी राशियों को प्राप्त करने के लिए

जालसाज़ और धोखेबाज़ भी अपने पूरे कील कांटे के साथ मैदान में कूद पड़े हैं । अभी कुछ समय पूर्व सी॰बी॰आई॰ की एक जांच में टिकटों के नम्बरों में भारी परिवर्तन की रिपोर्ट प्रकाश में आयी । दिल्ली के एक लाटरी टिकट एजेन्ट कमल सुखेजा के अनुसार दिल्ली में बिकने वाले हर पांच टिकटों में एक टिकट जाली होता है । तथा हाल ही में डी॰डी॰ए॰ की ओर से चलाई जाने वाली लाटरी के बीस हज़ार के रुपयें के दूसरे पुरस्कार के लिए तीन दावेदार सामने आये और तीनों के टिकटों पर वही नम्बर लिखा था जो लाटरी के दूसरे इनाम के लिए घोषित किया गया था । इन तीनों टिकटों में एक दिल्ली का, दूसरा पटना और तीसरा कोलकाता का था जांच करने के बाद दिल्ली वाले टिकट के अतिरिक्त दोनों टिकट जाली थे ।

देश में धड़ाधड़ बिकने वाली यह लाटरी की टिकटें लोगों को निकम्मेपन और अनैतिकता की ओर ले जा रही है । फलस्वरूप चारों ओर भ्रष्टाचार का वातावरण उत्पन्न हो गया है ।

यह बात भी सर्वविदित है कि लाटरी ख़रीदने वालों में एक बड़ी संख्या ऐसे युवकों की होती है जो रोज़गार की खोज में रहते हैं । हर बेरोज़गार युवक यह चाहता है कि उसकी लाटरी निकल आए और भाग्य खुल जाए । इस प्रकार युवा वर्ग की निरुद्देश्य शिक्षा के बाद उसे नैतिक रूप से बिगाड़ने और उन्हें हर समय लाटरी की आशा में बैठाये रखना कितना भयानक खिलवाड़ है, देश के भविष्य के साथ । इसके पूर्व की वे बुराइयां अपनी चरम सीमा पर पहुंच कर समाज की आर्थिक और नैतिक दिशा को खोखला कर दें, नयी पीढ़ी का भ्रष्ट और दिशाविहीन कर दें हमें समय रहते इनके विरोध में उठ खड़े होना चाहिए ।

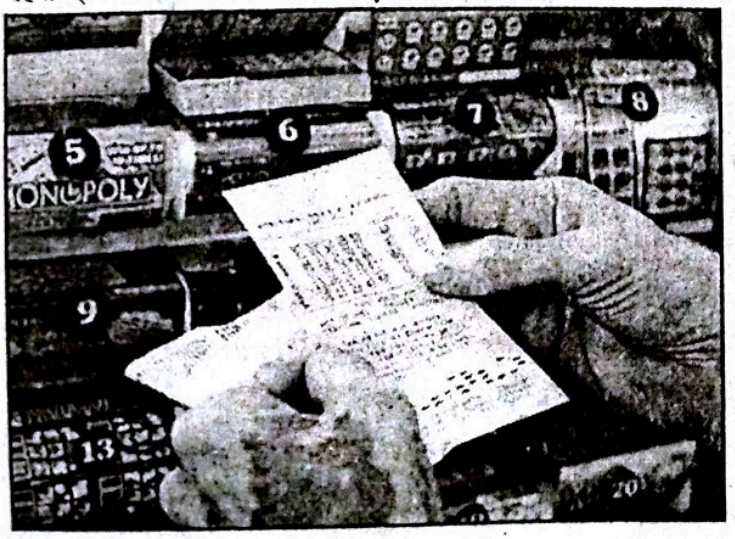

क्षणिकाएं

(1)
भारत की राजनीति
हमारे नेताओं को
गई है भा ।
वे कहते हैं
मैं भी खाऊं
और तू भी खा ।।

(2)
यह बात मुझे
बहुत खलती है
कि कार ड्राइवर से
पर सरकार
भगवान भरोसे
चलती है ।

(3)
हर आयोजक को
केवल नेता
भाता है
इसीलिए कार्यक्रम
कैसा भी हो
मुख्य अतिथि के रूप में
नेता ही
नज़र आता है ।।

(4)
मेरे बच्चे
कुश्ती में ख्याति
पा रहे हैं
वे संसद-समाचार
देखते रहे, इसीलिए आज
भांति-भांति के दांव
आज़मा रहे हैं ।

प्रो॰ (डॉ॰) शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय
मंडला (म॰प्र॰)-481661

मस्तिष्क कोशिकाएं

■ राजेन्द्र कुमार राय

मानव शरीर का अगर कोई रहस्यमय अंग है तो वह मस्तिष्क ही है । मानव व्यवहार के रहस्यों को अपने में समेटने वाले दिमाग़ को समझने के लिए वैज्ञानिक आज तरह-तरह के अध्ययन कर रहे हैं । वैज्ञानिकों को आशा है कि नये शोधों से मस्तिष्क के कई अनसुलझे रहस्यों का खुलासा होगा ।

वह दिन दूर नहीं जब आप अपनी ज़रूरत के लिहाज़ से मस्तिष्क कोशिकाएं (न्यूरॉन) विकसित कर सकेंगे । पिछले दिनों वैज्ञानिकों ने इस बात के प्रमाण पेश किये हैं कि मस्तिष्क में नयी कोशिकाओं (न्यूरॉन) के विकास का काम लगातार चलता रहता है । यही नहीं इनके विकास की गति को भी इच्छानुसार रखा जा सकता है । वैज्ञानिकों की इस महत्वपूर्ण खोज से अब पूर्ण ब्रेन हैमरेज के शिकार व्यक्ति को बचाया जा सकेगा । चूंकि ब्रेन हैमरेज में इन्हीं कोशिकाओं को क्षति हुई होती है और इनकी जगह नयी कोशिकाओं को प्रत्यारोपित करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, इसलिए ब्रेन हैमरेज के शिकार को अक्सर मौत से नहीं बचाया जा पाता है ।

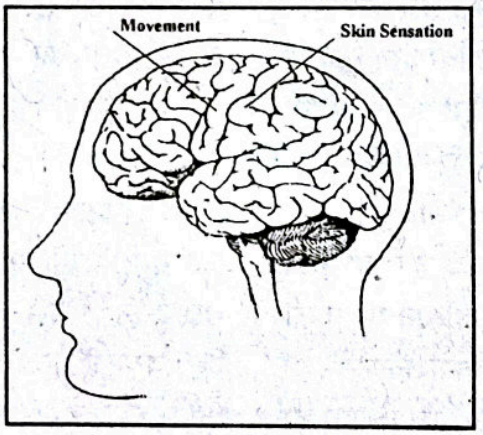

वास्तव में शरीर के सब अंगों में मस्तिष्क की कार्य प्रणाली सर्वाधिक जटिल है । इसमें लगभग दस अरब तंत्रिका कोशिकाएं होती हैं । इनके अलावा कुछ सहायक कोशिकाएं भी होती हैं, जिन्हें 'ग्यला' कहते हैं । हमें सभी आंतरिक व बाहरी घटनाओं की सूचना मंत्रिका तंत्र से मिलती है । जिसे हम बुद्धि कहते हैं, वह मस्तिष्क की क्रियाशीलता का ही नाम है, सभी मनुष्यों के मस्तिष्क की संरचना समान होती है । फिर बुद्धि में इतना अंतर क्यों ? यह बुद्धि क्या है ? वैज्ञानिकों को यह जानना अभी भी शेष है ।

शरीर के हारमोन कई तरह के चमत्कार करते हैं । मस्तिष्क की कार्य प्रणाली और हारमोनों के शरीर में स्राव के बीच एक गहरा रिश्ता है । हम अपने विचारों, मनोभावों को नहीं देख सकते हैं । मस्तिष्क से निकलने वाली विद्युत तरंगों का पहचानना कठिन है । मस्तिष्क के किसी एक भाग में हारमोनों के बढ़ने से हम किसी के प्रति क्रोध, प्रेम, घृणा आदि प्रकट करते हैं । हम वही काम करते हैं, वही भाव प्रकट करते हैं, जिसका निर्देश बुद्धि हमें देती है । हमें कब क्या करना है ? यह निर्णय बुद्धि ही लेती है । यह जन्मजात मिलती है या कृत्रिम रूप से भी पैदा की जा सकती है ? वैज्ञानिकों का एक रोचक विषय है ।

हमारा मस्तिष्क हमेशा क्रियाशील रहता है । विभिन्न दशाओं में इन क्रियाओं का स्वरूप अलग-अलग होता है । इसे विशेष इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा मापा जा सकता है । वैज्ञानिकों ने यह पाया है कि स्वप्नावस्था में मानसिक गतिविधियां बढ़ जाती हैं । कई वैज्ञानिकों का मानना है कि आपके अवचेतन को वह बातें मालूम होती हैं जिन्हें आपका चेतन नहीं जानता । वैज्ञानिक आजकल इन गुत्थियों को भी सुलझा रहे हैं ।

अपने देश में हैदराबाद के वैज्ञानिकों ने एक महत्वपूर्ण सफलता हासिल करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि मस्तिष्क की कोशिकाएं पुनः अपने आप अच्छी (स्वस्थ) हो सकती हैं । यह एक खोज है, जिससे अन्य बातों के अलावा बुढ़ापे से भी लड़ने में सहायता मिलेगी । इसके अतिरिक्त यह खोज कैंसर, पार्किंसन तथा अल्जाइमर जैसी बीमारियों से लड़ने और अन्य अनुवांशिक विषमताओं को सुलझाने में भी मददगार सिद्ध होगी । इस नये निष्कर्ष पर पहुंचने वाले हैदराबाद विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक के०एस० राव के अनुसार लंबे समय तक अनुवांशिक विकारों के संचयन से बुढ़ापा व अन्य बीमारियां होती हैं, क्योंकि कोशिकाएं नष्ट हुए डी०एन०ए० की दोबारा मरम्मत करने की

क्षमता खो देती हैं । डी॰एन॰ए॰ की वंशानुगत गुणों को आगे ले आता है और सभी कोशिकीय प्रक्रियाओं पर नियंत्रण करती हैं ।

कोशिकीय पोषण बुढ़ापे, वंशानुगत विकारों और कैंसर के आक्रमण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । मस्तिष्क शोध से जुड़े एक सम्मेलन में अपनी खोज का ब्योरा प्रस्तुत करने वाले श्री राव ने यह भी बताया कि नष्ट डी॰एन॰ए॰ को कुछ प्रोटीनों द्वारा दुरुस्त करना चाहिए, लेकिन जब वे ऐसा नहीं करते तो बीमारियां और बुढ़ापा हावी होते हैं ।

मनुष्यों में कोशिकाओं की मरम्मत क्षमता 30-35 साल की उम्र से घटनी शुरू हो जाती है । श्री राव के अनुसार उनके शोध परिणाम सिद्धांतत: यह संकेत देते हैं कि मरम्मत के लिए ज़रूरी एंजाइम यदि बाहर से दे दिये जाएं तो बुढ़ापे व इन बीमारियों को रोका जा सकता है । उनके अनुसार, हालांकि यह प्रारंभिक परिणाम है जो कि एकल कोशिका एवं इन विटो परीक्षणों से पुष्टि की अपेक्षा रखता है । बुढ़ापा कोशिका द्वारा क्षतिग्रस्त डी॰एन॰ए॰ ही मरम्मत न कर पाने की स्थिति पर निर्भर करता है और तमाम पर्यावरणीय क़ारणों से यह प्रक्रिया जीवन भर चलती है । युवावस्था में तो डी॰एन॰ए॰ की क्षतिपूर्ति तत्काल हो जाती है, लेकिन उम्र बढ़ने के साथ ही यह क्षमता घटने लगती है ।

श्री राव ने मस्तिष्क कोशिकाओं के तंत्र का अध्ययन किया है और निष्कर्ष निकाला है कि बीटा डी॰एन॰ए॰ पोली मरेज एंजाइम की निष्क्रियता ही मस्तिष्क कोशिकाओं की क्षति की ज़िम्मेदार है । चूहों के वृद्ध मस्तिष्क में एंजाइम या तो संश्लेषित नहीं होते या फिर कम संश्लेषित होते हैं ।

कोशिकाओं में क्षतिपूर्ति होने वाले एंजाइम देने की क्षमता कम होने से ही बुढ़ापा व अन्य रोग होते हैं । उन्होंने कहा कि यदि बीटा एंजाइम की भरपूर मात्रा बाहर से आपूर्ति की जा सके तो डी॰एन॰ए॰ के क्षतिग्रस्त हिस्सों की मरम्मत हो सकती है और मस्तिष्क कोशिकाओं का बुढ़ापा रोका जा सकता है । आस्ट्रेलिया (सिडनी) में कुछ वैज्ञानिक कॉफ़ी की मदद से मस्तिष्क के रहस्यों को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं । आस्ट्रेलियन साइंस एंड टेक्नॉलोजी न्यूजलेटर के अनुसार सेंट विसेंट के हास्पिटल गरवान रिसर्च फाउंडेशन के वैज्ञानिकों को आशा है कि इस अध्ययन से उन्हें मिरगी जैसे दिमाग़ के अनेक रोगों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल करने में सफलता मिलेगी ।

यह बहुत पुरानी मान्यता है कि एक उम्र के बाद मस्तिष्क में नयी कोशिकाएं (न्यूरॉन) बनना बंद हो जाती है । त्वचा, रक्त और शरीर के अधिकतर दूसरे भागों में पुरानी कोशिकाओं के मृत होने और उनकी जगह नयी कोशिकाएं विकसित होने की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है । जबकि इसके विपरीत वयस्क के मस्तिष्क में नयी कोशिकाओं का बनना बन्द हो जाता है । लेकिन वैज्ञानिकों ने पिछले दिनों यह सिद्ध किया है कि यह बात सही नहीं है । इन वैज्ञानिकों का कहना है कि चूहों, पक्षियों व कुछ बन्दरों में वयस्क होने के बाद भी नियमित रूप से मस्तिष्क कोशिकाएं विकसित होती रहती हैं । इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मनुष्य के मस्तिष्क में भी नियमित नयी कोशिकाएं बनती रहती होंगी ।

अब तक यह कहा जाता रहा है कि मानव प्रजाति इनसे बिल्कुल अलग है । मनुष्य को चूंकि पुरानी बातें याद रहती हैं, इसलिए पुरानी कोशिकाओं के मृत होने व नयी कोशिकाओं के बनने का सवाल ही नहीं पैदा होता । लेकिन अब इस अंधविश्वास को उलट दिया गया है ।

नवम्बर 1998 में कैलीफोर्निया स्थित साक इंस्टीट्यूट ऑफ़ बायोलॉजिकल स्टडीज़ के वैज्ञानिक फ्रेड गेज और उनके सहयोगी तीन स्वीडिश वैज्ञानिकों ने इस बात के प्रमाण दिये कि मानव-जाति बाक़ी से अलग नहीं है । इन वैज्ञानिकों ने इस बात के पक्ष में प्रायोगिक साक्ष्य भी दिये कि वयस्क होने के बाद भी मनुष्यों के मस्तिष्क में कोशिकाएं बनती रहती हैं । गेज के इस नतीजे से स्नायु उत्पत्ति (न्यूरोजेनेसिस) संबंधी कई स्थापनाएं उलटती दिखायी दे रही है । कई सारे सवाल उठ रहे हैं जो नये न्यूरॉन पैदा होते हैं, जैसे उनकी भूमिका क्या होती है ? क्या हम नये न्यूरॉनों के विकास की गति तेज़ और उनके मृत होने की गति को धीमा कर सकते हैं ? अनुसंधानों से पता चला है कि न्यूरॉन विकास की गति और क्षरण व्यायाम से लेकर आदमी के मूड तक पर निर्भर करता है । याद्दाश्त कैसे स्वरूप ग्रहण करती है और बनी रहती है, इस दिशा में चल रहे अनुसंधानों को इससे नयी दिशा मिली है । कुछ वैज्ञानिक तो इस दिशा में भी जुट गये हैं कि मस्तिष्क फटने की स्थिति में इस जानकारी के इस्तेमाल से मरीज़ को कैसे बचाया जाए, वैज्ञानिकों को आशा है कि इन नये शोधों से मस्तिष्कों के कई अनसुलझे रहस्यों का खुलासा होगा ।

क्या उमस भी मोटापा लाती है ?

● प्रेमा राय

तपती गर्मी के बाद बरसात का होना कितना अच्छा लगता है । तब गर्मी से निश्चित रूप से राहत मिलती है । लेकिन यह राहत भी अस्थायी ही होती है । वर्षा के कुछ घंटों के बाद जब हवा बंद हो जाती है, जब हम बेचैन हो उठते हैं । तब गर्मी और परेशान करती है । इसे ही हम उमस कहते हैं । क्या इस उमस से मोटापा हो सकता है ? वैज्ञानिक शोधों पर एक नज़र डालते हैं ।

क्या आप जानते हैं कि उमस क्यों होती है ? किसी समय विशेष के तापमान पर हवा की आर्द्रता जब बढ़ जाती है, तब जल कणों को सोखने की क्षमता ख़त्म हो जाती है । इससे हमारा पसीना सूख नहीं पाता और लथपथ होकर हम सुस्त पड़ जाते हैं । वायु की आर्द्रता बढ़ाने में वर्षा का ज़्यादा योगदान होता है । लेकिन कई अन्य कारणों से भी वायु की आर्द्रता बढ़ती रहती है । इन कारणों में एक प्रमुख कारण पेड़-पौधे भी हैं ।

'उमस' टार्च की बैटरियों पर तो जैसे मेहरबान ही रहती है । इससे इन बैटरियों का जीवन काफ़ी कम हो जाता है । अमेरिकी शोधकर्ताओं ने उमस के कारण मनुष्य पर पड़ने वाले शारीरिक तथा मानसिक लक्षणों का भी अध्ययन किया है ।

एक अध्ययन के दौरान अमेरिकी विशेषज्ञों ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे चौंकाने वाले हैं । जब वातावरण की आर्द्रता 80 प्रतिशत या इससे ऊपर होती है, तब कामगारों द्वारा अपने कार्यों में 33 प्रतिशत अधिक ग़लतियां होती हैं ।

मौसम के चलते जब मौसम में आर्द्रता बढ़ जाती है, तब उसकी जल सोखने की क्षमता में भारी कमी आ जाती है । वायु में इतनी क्षमता नहीं होती कि वह पसीने को सोख सके । इससे पसीना हमारी त्वचा पर भर जाता है । एक प्रकार से त्वचा स्वेद छिद्र लबालब भर जाते हैं । जिसके चलते शरीर की गर्मी बाहर नहीं निकल पाती । इससे शरीर का तापमान बढ़ जाता है । जिससे मानव शरीर को तरह-तरह की व्याधियों का सामना करना पड़ता है ।

फिर त्वचा की तैलीय कोशिकाएं बढ़ते तापमान के चलते फट जाती हैं । जिससे हमें लगता है कि हम पसीने के बजाय तेल से नहाये हैं । वातावरण में नमी को सोखकर शरीर के बाल भी अपनी लंबाई में लगभग ढाई प्रतिशत की वृद्धि कर लेते हैं ।

मोटापे के बारे में और अधिक जानकारी देते हुए डॉ॰ बेदी कहते हैं कि वैज्ञानिक अनुसंधानों से सिद्ध हो गया है कि यदि आपके पेट का माप छाती के माप से पन्द्रह प्रतिशत अधिक है तो आपका जीवन पच्चीस प्रतिशत कम हो जाता है । यदि आप स्वस्थ और सुन्दर रहना चाहते हैं तो अपने शरीर और कमर के फैलाव को कम कीजिए । तीस वर्ष की आयु के आसपास यदि वज़न औसत वज़न से अधिक हो तो मृत्यु दर में चालीस प्रतिशत वृद्धि हो जाती है ।

बाल्टीम्योर (मेरीलैंड) के हापकिंस अस्पताल के डॉक्टरों ने उमस द्वारा शरीर पर पड़ने वाले स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों का अध्ययन 1700 व्यक्तियों पर किया । अपने अध्ययन के निष्कर्षों में उन्होंने बताया कि इन दिनों सिर दुखने, पेट दर्द, सीने में दर्द, ऐंठन तथा धुंधला दिखायी देने जैसी शिकायतें बढ़ जाती हैं ।

बाल्टीम्योर के हापकिंस अस्पताल द्वारा ज्ञात किये गये शोध अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि उमस शरीर पर मोटापा भी बढ़ा देती है । हापकिंस अस्पताल के डॉक्टरों के अनुसार उमस भरे दिनों में आंत पानी ख़ूब सोखती है । जिससे शरीर ढाई सेंटीमीटर तक फूल जाता है । इससे लगता है कि शरीर मोटा हो गया ।

उमस के उपद्रवों से बचने के लिए डॉक्टरों की सलाह है कि सूती कपड़े पहनना, कैफीन या मीठे पदार्थों के सेवन से बचना और कम समय में पच सकने वाले भोज्य पदार्थों

का सेवन करना लाभप्रद होता है ।

वैसे मोटापा एक ऐसी महामारी है, जिसने पूरी दुनिया को परेशान कर रखा है । दरअस्ल आरामपस्त महानगरी जीवनशैली और खान-पान की ग़लत प्रवृत्ति के कारण दिनोदिन मोटापा एक समस्या बनता जा रहा है । यह मोटापा रोगों का पिटारा भी बन सकता है । मोटापे के कारण कई बीमारियां शरीर को घेर लेती हैं । लेकिन जीवनशैली में थोड़ा-सा परिवर्तन लाकर और हर्बल ट्रीटमेंट लेकर इसे स्थायी रूप से कम किया जा सकता है ।

आज पूरी दुनिया में लगभग चालीस प्रतिशत लोग इससे छुटकारा पाने के लिए जिम से लेकर सर्जरी तक का सहारा ले रहे हैं । देश में महानगरों से लेकर छोटे-छोटे शहरों की गलियों तक में मोटापा कम करने वाले हेल्थ क्लब सेन्टर खुल गये हैं ।

मोटापे का एक बड़ा कारण तनाव भी है । होता यह है कि तनाव में आदमी ज़्यादा खाना खाता है । इसका कारण है कि दरअस्ल भूख पेट को नहीं, दिमाग़ को लगती है । इससे व्यक्ति कितना खा जाता है, उसे पता ही नहीं चलता । वैज्ञानिकों ने इसे साबित कर दिया है ।

मोटापे के बारे में और अधिक जानकारी देते हुए डॉ॰ बेदी कहते हैं कि वैज्ञानिक अनुसंधानों से सिद्ध हो गया है कि यदि आपके पेट का माप छाती के माप से पन्द्रह प्रतिशत अधिक है तो आपका जीवन पच्चीस प्रतिशत कम हो जाता है । यदि आप स्वस्थ और सुन्दर रहना चाहते हैं तो अपने शरीर और कमर के फैलाव को कम कीजिए । तीस वर्ष की आयु के आसपास यदि वज़न औसत वज़न से अधिक हो तो मृत्यु दर में चालीस प्रतिशत वृद्धि हो जाती है ।

अभी हमारे समाज में एक भ्रांति है कि डायटिंग व व्यायाम से मोटापा कम होता है । इसलिए लड़कियां अक्सर डायटिंग करके अपने लिए अनेक रोगों को आमंत्रण दे देती हैं । इस संबंध में डॉ॰ बेदी का कहना है कि पहली बात तो यह है कि डायटिंग शरीर के लिए क्षतिकारक है । बहुत से स्त्री-पुरुषों को यह भ्रम है कि डायटिंग से मोटापा घट जाता है जबकि यह ग़लत है । व्यायाम करने से कुछ हद तक सफलता ज़रूर मिलती है । लेकिन मोटे लोगों को चाहिए कि व्यायाम करने से पूर्व डॉक्टर की सलाह लें । ग़लत व्यायाम करने से वज़न कम होना तो दूर कुछ और भी समस्याएं आ खड़ी होंगी । मोटापे पर विजय पाने के लिए दुनिया भर में तरह-तरह के शोध अध्ययन आज भी जारी हैं ।

दवा के बारे में और अधिक जानकारी देते हुए डॉ॰ बेदी कहते हैं कि हम यह बार-बार कहना चाहेंगे कि इसका कोई साइड इफैक्ट यानी दुरुप्रभाव नहीं है । यह बिल्कुल सुरक्षित, ख़ास प्रक्रिया से बनी और किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव से मुक्त है । इससे झुर्रियां या कमज़ोरी भी नहीं आती, न किसी कसरत की ज़रूरत है न उपवास की और इलाज छोड़ने के पश्चात दुबारा वज़न भी नहीं बढ़ता है क्योंकि यह एक आयुर्वेदिक पूर्ण इलाज है । जिससे शरीर के उस सिस्टम को ही ठीक किया जाता है, जिससे दुबारा वज़न कभी भी नहीं बढ़ता है । डॉ॰ बेदी के अनुसार मोटापा दूर होने पर मोटापे से संबंधित अन्य रोग भी अपने आप ही दूर हो जाते हैं ।

एक बार अगर आप दुबले हो जाएं तो आपको सर्वोत्तम जीवन मिलता है । सही मुद्रा में उठने-बैठने से आपका शरीर और भी आकर्षक दिखता है ।

ग़ज़ल

उनसे शिक्वे-गिले रह गये
यानी कुछ सिलसिले रह गये

उनसे कहना तो चाहा बहुत
होंठ लेकिन सिले रह गये

उनसे हर बार मिलकर लगा
हम कहीं बिन मिले रह गये

पूरे सूबे में बारिश हुई
हम ही सूखे ज़िले रह गये

बादशाहत कहां रह गयी
अब तो ख़ाली क़िले रह गये

सबकी राहें अलग हो गयीं
अब कहां क़ाफ़िले रह गये

रेलगाड़ी हवा हो गयी
हाथ अपने हिले रह गये ।

● उर्मिलेश

भूगर्भशास्त्री मुहम्मद इदरीसी

■ मौलाना सिराजुद्दीन नदवी

मुहम्मद बिन मुहम्मद इदरीसी विश्व के सबसे प्रथम व महान भूगोलशास्त्री हैं । उन्हें बचपन से ही भूगोल से रुचि थी । वे अक्सर श्वेतसागर में नावों को आते-जाते देखते और उनमें दिलचस्पी लेते तथा विभिन्न शहरों और देशों के बारे में जानकारियां प्राप्त करते । मुहम्मद बिन इदरीसी का जन्म उन्दुलिस के एक मशहूर शहर 'सिब्ता' में सन 1099 ई॰ में हुआ । यह शहर चार सौ वर्ष पहले एक फ़ौजी क़िला था । मशहूर सेनानायक मूसा बिन नसीर ने इसे स्पेनियों से जीतकर इस्लामी राज्य में समाहित किया था ।

इदरीसी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा घर पर प्राप्त की । जब वे 16 वर्ष के हुए तो उनके पिता ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उन्हें क़रतबा भेज दिया । क़रतबा पहुंच कर इदरीसी ने इस्लामी धर्मशास्त्रियों से भाष्य, हदीस और धर्मशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ दर्शनशास्त्र, गणितशास्त्र, भूगोल और अंतरिक्ष व नक्षत्रशास्त्र पर भी शिक्षा प्राप्त की ।

शिक्षारत के दौरान इदरीसी को जब भी अवसर मिलता वे उन्दुलिस के शहरों, देहातों, मैदानों, पहाड़ों और नदियों की सैर करते और गहराई से उनका अवलोकन करते । उन्हें उन छात्रों पर बड़ा तरस आता, जो केवल मानचित्रों की सहायता से भूगोल की शिक्षा प्राप्त करते थे ।

इदरीसी सिब्ता में रहकर अब तक के अनुभव व जानकारियों को इकट्ठा करने में व्यस्त थे कि उनका एक निकट संबंधी अब्दुल्लाह 'सक़लिया' से 'सिब्ता' वापस आया । उसने इदरीसी के सामने सक़लिया और वहां के बादशाह राजर्स द्वितीय की बहुत प्रशंसा की । अब्दुल्लाह वापसी में सक़लिया पहुंच कर बादशाह से इदरीसी के प्रतिभा व ज्ञान के बारे में विस्तार से बताया । बादशाह ने इदरीसी को सक़लिया बुला लिया और उन्हें अपने विशेष सभासदों में जगह दी ।

बादशाह चाहता था कि इदरीसी भूगोलशास्त्र की ऐसी किताब लिखा दें, जिसमें पूरे विश्व की जानकारी हो और सारी चीज़ों को मानचित्रों के माध्यम से स्पष्ट किया गया हो । बादशाह की ख़्वाहिश पर इदरीसी ने सबसे पहले 100 विद्वानों का चुनाव किया । ये विद्वान हर देश की यात्रा करते और वहां की भौगोलिक परिस्थितियों के बारे में जानकारियां इकट्ठा करते थे । उनके साथ मानचित्र बनाने वाले भी भेजे जाते थे, जो सारी चीज़ों के मानचित्र तैयार करते थे ।

अत: इदरीसी ने भूगोलशास्त्र पर एक बहुत-ही विस्तृत और उपयोगी किताब तैयार की । विश्व में इस किताब को बहुत प्रसिद्धि मिली । इस किताब का नाम है, 'नुज़्हतुल मुश्ताक़ फ़ी इख़्राक़िल आफ़ाक़'' यूरोप वालों ने इस किताब को आधार बनाकर मानचित्र बनाना शुरू किया । एक लंबी अवधि तक यूरोप में यह किताब भूगोल की सबसे मुख्य किताब समझी जाती रही और यूरोप वाले इसकी रोशनी में भूगोल का ज्ञान प्राप्त करते रहे ।

इस किताब की कुछ विशेषताएं इस तरह हैं–

- यह किताब विश्व में भूगोलशास्त्र की पहली किताब है ।
- इस किताब में इदरीसी ने पूरे विश्व का एक मानचित्र बनाया है ।
- उस समय विश्व सात महाद्वीपों मे बंटा हुआ था । इदरीसी ने हर महाद्वीप का अलग-अलग मानचित्र बनाया है और हर महाद्वीप को दस भागों में विभाजित करके मानचित्र के माध्यम से स्पष्ट किया है ।
- इस किताब में विश्व व महाद्वीपों के अतिरिक्त दूसरे 70 मानचित्र भी बनाए गये हैं ।
- हर देश और हर शहर के पृथ्वी की लंबाई रेखाओं के द्वारा स्पष्ट की गयी है ।
- हर देश की भौगोलिक स्थिति हवा-पानी, मौसम और पैदावार के बारे में भरपूर जानकारी एकत्र की गयी है ।
- विभिन्न देशों के मानचित्र में नदी, पहाड़, जंगल, झील इत्यादि भी बहुत-ही स्पष्ट रूप से दिखाये गये हैं ।

इदरीसी ने इस किताब को पूरे 15 वर्ष में तैयार किया । इदरीसी के कुछ कारनामे इस तरह हैं–

• इदरीसी ने सबसे पहले यह नज़रिया पेश किया कि दुनिया गोल है ।

• दुनिया का एक गोल मॉडल बनाया, जो चांदी से तैयार किया गया था । उस मॉडल में उन्होंने दुनिया के देशों को दिखाया । यह दुनिया का पहला मॉडल था । यह मॉडल शाही महल के बाग़ में स्थापित किया गया था । यह दिन भर सूरज की रोशनी में जगमगाता । रात को चांद और दरबारी चिराग़ों की रोशनीं में चमकता ।

• इदरीसी ने समुद्रों के नक़्शे भी तैयार किये । यद्यपि उस काल में बहुत से अरब मुसलमान नाविक थे, जो दुनिया पर छाये हुए थे ।

• 'नुज़्हतुल मुश्ताक़' के अतिरिक्त इदरीसी ने भूगोल की एक दूसरी किताब भी लिखी, जिसका नाम 'रौजुलउंस व नुज़्हतुल नफ़्स' है । भूगोलशास्त्र के इस महान वैज्ञानिक की मृत्यु सन 1165 ई॰ में हुई ।

साहित्य-समाचार

सम्मानित हुए डॉ॰ यायावर

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कला मंच भारत ने अपना चार दिवसीय वार्षिक आयोजन नेपाल की राजधानी काठमांडू में संपन्न किया । कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, परिचर्चाएं, कवि-गोष्ठी, गीत-ग़ज़ल-गोष्ठी, महाराणा प्रताप जयंती तथा सम्मान समारोह संपन्न हुआ । डॉ॰ रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर' को भी सम्मानित किया गया ।

डॉ॰ यायावर को सुलभ इंटरनेशनल, नयी दिल्ली द्वारा प्रायोजित 'शब्द-साधना सम्मान' प्रदान किया गया । सम्मान में उत्तरीय, मानपत्र, स्मृति चिन्ह, साहित्य और पांच हज़ार की नक़द धनराशि भी प्रदान की गयी । काव्य गोष्ठियों तथा परिचर्चाओं में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही । आयोजन में अमेरिका, कनाडा, नार्वे, नेपाल, भारत और अन्य कई देशों के सैकड़ों हिन्दी विद्वान व रचनाकार उपस्थित हुए ।

दर्पण

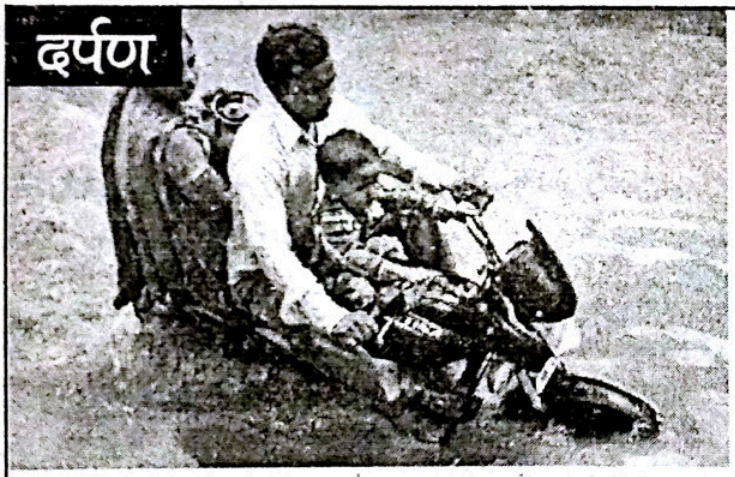

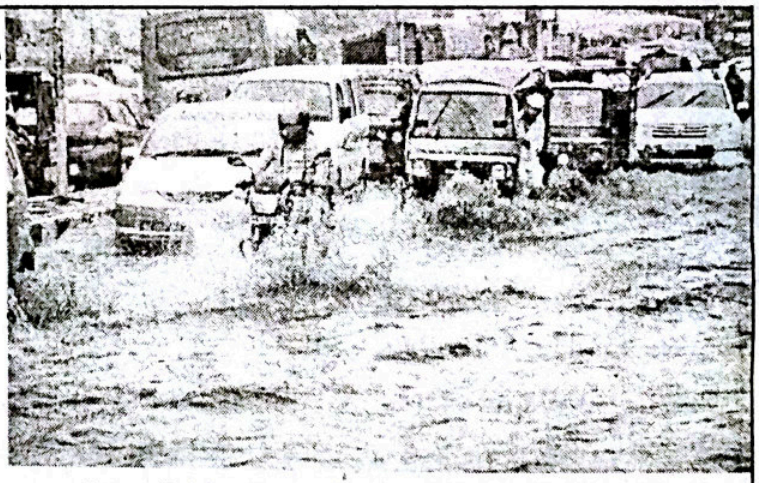

दिल्ली की बरसात : चारों ओर जलभराव



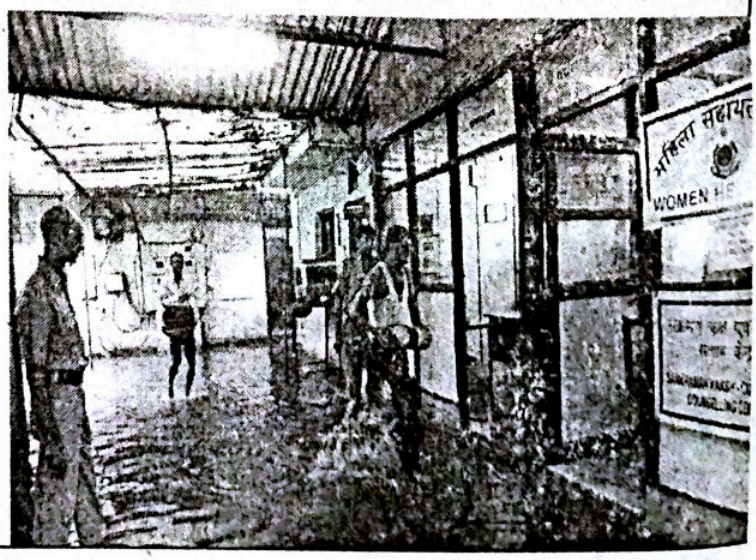

अपनाएं पर्यावरण का क्षेत्र

■ प्रभाष झा

मानव इतिहास के प्रारंभ से ही जीवन के संरक्षण में पर्यावरण की भूमिका के महत्व को समझा जाता रहा है । लेकिन अब आधुनिकीकरण शहरीकरण और तकनीकी विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की मनुष्य को परवाह नहीं रह गयी है । अगर यह सब इसी तरह चलता रहा तो समूची मानव जाति के नष्ट होने का ख़तरा उत्पन्न हो जाएगा । ज़ाहिर है कि ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ न कुछ करे ।

पर्यावरण विज्ञान अथवा पर्यावरण इंजीनियरिंग एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें अपने भविष्य निर्माण के साथ-साथ इस कर्तव्य का निर्वहन भी बख़ूबी किया जा सकता है । पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए पर्यावरण इंजीनियरिंग में बी०ई० अथवा टी०टेक० की डिग्री या फिर पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम०एस०सी०) की डिग्री शुरुआती पायदान है । अगर आपके पास पर्यावरण इंजीनियरिंग में एम०ई० अथवा एम०टेक० की डिग्री है तो फिर और भी अच्छा है । पर्यावरण इंजीनियरिंग के बी०ई० पाठ्यक्रम में दाख़िला के लिए छात्र को बारहवीं विज्ञान संकाय के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है । अगर आपका बारहवीं में गणित, भौतिकी व रसायन के साथ-साथ जीव विज्ञान विषय रहा है, तो यह और भी अच्छा है । इससे पर्यावरण एवं परिस्थिति को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है ।

इसके अलावा अगर आपने सिविल अथवा कैमिकल इंजीनियरिंग में आप एम०ई०, एम०टेक० कर सकते हैं । इंजीनियरिंग के विकल्प से हटकर पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर बनाने का दूसरा रास्ता भी है । भूगर्भशास्त्र अथवा पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर छात्र भी पर्यावरण इंजीनियरिंग के स्नातक के समतुल्य माने जाते हैं । अत: अगर चाहें तो स्नातकोत्तर के बाद छात्र रोज़गार शुरू कर दें या फिर वे भी एम०ई०, एम०टेक० के पाठ्यक्रम के पात्र हैं । इसके अलावा प्राकृतिक विज्ञान, प्राणी विज्ञान और कृषि विज्ञान के स्नातक छात्र भी पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में स्नातकोत्तर (एम०एस०सी०) पाठ्यक्रम के पात्र हैं ।

पर्यावरणविद के लिए निजी एवं सरकारी दोनों क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं । बिगड़ते हुए पर्यावरण और प्रदूषण बढ़ने के साथ-साथ कुछ नये क्षेत्रों का विकास तेज़ी से हो रहा है । ऐसा ही एक क्षेत्र है प्रदूषणरोधी यंत्र बनाने वाली कंपनियां । ज़ाहिर है कि जिस अनुपात में प्रदूषण बढ़ रहा है उसी अनुपात में इन कंपनियों का भी विकास हो रहा है ।

लिहाज़ा आने वाले समय में इस क्षेत्र में रोज़गार की संभावनाओं में तीव्र वृद्धि होगी । आजकल दिल्ली सहित कई राज्यों में कचड़े से विद्युत उत्पादन की प्रक्रिया विचाराधीन है । विदेशों में तो यह प्रयोग काफ़ी समय से



सफलतापूर्वक चल रहा है । चूंकि दिनोंदिन बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ अनुपयोगी कूड़ा-कर्कट बढ़ता ही जा रहा है, अत: वह दिन दूर नहीं जब हर शहर में इस तरह के विकल्प की तलाश होगी । ज़ाहिर है इस क्षेत्र में भी निकट भविष्य में प्रशिक्षितों की मांग बढ़ेगी ।

इसके अलावा कुछ अन्य पारंपरिक क्षेत्रों में भी रोज़गार की असीम संभावनाएं हैं–

- पर्यावरण के क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संगठनों में ।
- रासायनिक सामग्री निर्माण में संलग्न प्रतिष्ठानों में ।
- ऊर्जा एवं तेल उत्पादन के क्षेत्र में ।
- निजी क्षेत्र की कंपनियों में जैसे, टिस्को, टेल्को, रिलायंस आदि में ।
- अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत निजी एवं सरकारी संस्थानों में, जैसे, नेशनल एनवॉयरमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट इंडियन हॉक्सिक्लोजिक रिसर्च इंस्टीट्यूट आदि में ।

संस्थानों की सूची

1. पर्यावरण इंजीनियरिंग में बी०ई०, बी०टेक० का पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने वाले संस्थान–

- दिल्ली कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग, बवाना रोड दिल्ली-110042
- कोल्हापूर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कोल्हापुर-416234

2. एम०ई०, एम०टेक० का पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने वाले संस्थान–

- फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
- जी०एस० इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, 23 पार्क रोड, इन्दौर-452003
- इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, सीतापुर रोड़, लखनऊ-226021
- मौलाना आज़ाद कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल-462003

3. स्नातकोत्तर (एम०एस०सी०) का पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने वाले संस्थान–

- विक्रम विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय रोड़, उज्जैन ।
- अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा-486003
- बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली लखनऊ ।

दोहे

रिश्तों में है रिक्तता

चाहे घर में दो जने, चाहे हों दस-पांच ।
रिश्तों में दिखती नहीं, पहले जैसी आंच ।।

रिश्ते सब 'इन लॉ' हुए, क्या साला, क्या सास ।
पड़ी गांठ-पर-गांठ है, ग़ायब हुई मिठास ।।

हर रिश्तों की नींव की, दरकी आज ज़मीन ।
पति-पत्नी भी अब लगें, जैसे भारत-चीन ।।

न ही युद्ध की घोषणा, और न युद्ध-विराम ।
शीत-युद्ध के दौर-से, रिश्ते हुए तमाम ।।

रिश्तों में है रिक्तता, सांसों में सन्त्रास ।
घर में भी अब भोगते, लोग यहां वनवास ।।

'स्वारथ' जी जब से हुए, रिश्तों के मध्यस्त ।
रिश्ते तब से हो गये, घावों के अभ्यस्त ।।

अब ऐसे कुछ हो गये, शहरों में परिवार ।
बाबूजी चाकर हुए, अम्मा चौकीदार ।।

मां मूरत थी नेह की, बापू आशीर्वाद ।
बातें ये इतिहास की, नहीं किसी को याद ।।

समकालिक सन्दर्भ में, मुख्य हुआ बाज़ार ।
स्वार्थपरता बनी तभी, रिश्तों का आधार ।।

क्यों रिश्ते पत्थर हुए, गया कहां सब ताप ।
पूछ रही संवेदना, आज आपसे आप ।।

दो कमरे, काग़ज़-क़लम, तीन जनों का प्यार ।
काफ़ी है मेरे लिए, छोटा-सा संसार ।।

डॉ० रामनिवास 'मानव'
'अनुकृति', 706, सेक्टर-13,
हिसार-125005 (हरि०)

ग़ैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के विकास की आवश्यकता

■ विद्या प्रकाश

ऊर्जा उत्पादन की अनेक परियोजनाओं के बावजूद स्वदेश गंभीर ऊर्जा संकट के दौर से गुज़र रहा है । अधिकतर नगरों, क़स्बों, बाज़ारों तथा गांवों को आवश्यकतानुसार पर्याप्त बिजली नहीं मिल पा रही है । ग्रीष्म ऋतु में प्रति वर्ष बिजली की समस्या बढ़ जाती है । विद्युतापूर्ति में घोषित अघोषित कटौती तथा अनिश्चित आपूर्ति से जनसाधारण पेय जलापूर्ति तो प्रभावित हो रही रहा है, प्रिंटिंग, कंप्यूटर, वेल्डिंग, आपरेशन, फोटोग्राफी आदि से संबंधित कार्य करने वालों का बुरा हाल है । इसके लिए विद्युत चोरी के साथ विद्युत गृहों में व्याप्त दुर्व्यवस्था तथा सरकारी उदासीनता मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है ।

ग़ैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों में सौर ऊर्जा एक महत्वपूर्ण तथा शाश्वत स्रोत है । यदि सौर ऊर्जा के मांध्यम से विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में प्रयास किये जाएं तो हम शीघ्र ही इस दिशा में नया मक़ाम हासिल कर सकते हैं । हालांकि देश के अनेक स्थानों पर सूर्य रश्मियों को तापीय तथा फोटोवोल्टिक विधि से ऊर्जा में रूपांतरित किया जा रहा है और इस क्षेत्र में अपार संभावना है मगर शासन की ढुलमुल नीतियों तथा जनसामान्य की उदासीनता के कारण यह बहुत लोकप्रिय नहीं हो पायी है । जम्मू, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, असम, मेघालय, त्रिपुरा, नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, अंडमान निकोबार, लक्षद्वीप समूह आदि के सुदूरवर्ती इलाक़ों में सौर लालटेन बिजली की कमी को काफ़ी हद तक पूरा करने में कामयाब है ।

पवन ऊर्जा भी एक महत्वपूर्ण ग़ैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोत है । पवन ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में वैश्विक धरातल पर भारत का पंचम स्थान है । यदि सरकार इससे संबंधित परियोजनाओं पर पर्याप्त और रुचिपूर्वक ध्यान दे तो बड़ा मक़ाम हासिल किया जा सकता है । भारत में पवन ऊर्जा का व्यावसायिक प्रयोग अत्यंत सफल रहा है । उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में भौगोलिक कारणों से पवन ऊर्जा से उत्पादित विद्युत का उपयोग अधिक हो रहा है । पवन ऊर्जा संबंधी परियोजनाएं मुख्यत: दक्षिण भारत के सागर तटवर्ती प्रांतों में ही हैं क्योंकि यहां वायुमंडलीय दबाव अपेक्षाकृत अनुकूल रहता है । अभी देश में पवन ऊर्जा की तकनीकी संभावना का अनुमान 13000 मेगावाट है । यदि ग्रिड क्षमता को सुधारा जाए तो इसे और भी बढ़ाया जा सकता है । देश में 13 राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में ऐसे स्थलों को चिन्हित कर लिया गया है जहां पवन ऊर्जा व्यावहारिक रूप से लाभकारी हो सकती है ।

बायोगैस तथा बायोमास जैसे ग़ैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों से भी ऊर्जा संकट का काफ़ी हद तक समाधान संभव है । ये स्रोत मुख्यत: ग्रामीणांचलों में विद्युत उपलब्ध करा सकने में मददगार तथा फ़ायदेमंद हैं । अनेक ग्रामीण इलाक़ों में बायोगैस के माध्यम से गेहूं और मसाला पीसने की चक्की चलाने, सिंचाई पम्प चलाने, चारा काटने, विद्युतापूर्ति भोजन पकाने, मिक्सर और वाशिंग मशीन चलाने जैसे अनेक काम किये जा रहे हैं हालांकि उपयोगी होने के बावजूद यह परियोजना भी अपेक्षानुकूल लोकप्रिय नहीं हो पायी । बायोगैस संयंत्रों की स्थापना वर्ष 1981-82 में चलाये गये राष्ट्रीय बायोगैस विकास कार्यक्रम के अंतर्गत की गयी थी ।

गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु तथा केरल के अनेक गांवों में वो सामुदायिक बायोगैस संयत्रों की स्थापना में सहकारी क्षेत्रों ने भी उत्साहपूर्वक भागीदारी निभायी । इस दिशा में गुजरात के मोतीपुरा गांव को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति और पहचान मिल चुकी है । हमारे देश में फ़िलहाल एक अरब 35 करोड़ टन गोबर तथा पशु अवशिष्ट होता है जिससे बायोगैस पैदा कर 75 प्रतिशत से भी अधिक वैद्युतिक आवश्यकता की पूर्ति आसानी से की ज़ा सकती है ।

यह सत्य है कि परंपरागत ऊर्जा स्रोत अधिक समय तक हमारा साथ नहीं निभा सकते । इसलिए समय रहते और पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)
महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना



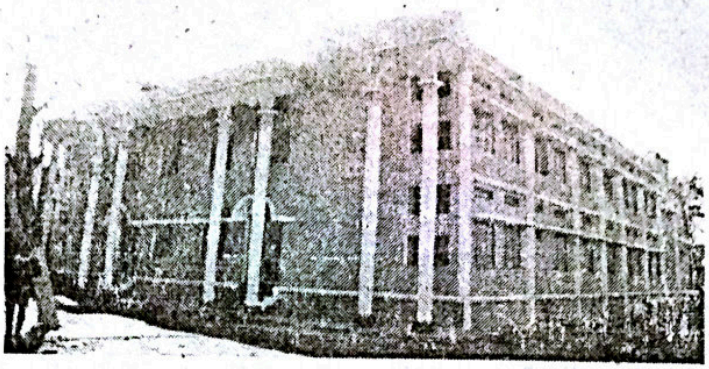

हजारीबाग के प्राकुतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माड़र्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू0 अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू0 का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो0 09431530878, Website : munammission.org
E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस0एम0 नईम
डायरेक्टर
एम0ए0, बी0एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी0एस0सी0, बी0एड

क्या प्रधानमंत्री बनने लायक़ हैं नरेन्द्र मोदी ?

■ अबरार अहमद

हमारे देश में अगले साल आम चुनाव होने हैं । ऐसे में भाजपा ने अपने प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी का नाम प्रोजेक्ट किया है । ये वही नरेन्द्र मोदी हैं जिनके चेहरे पर गुजरात दंगों की कालिख पुती है ।

प्रधानमंत्री पद के लिए नरेन्द्र मोदी का नाम सामने आने पर भाजपा के पुराने सहयोगी जदयू ने भाजपा से गठबंधन तोड़ लिया है ।

नरेन्द्र मोदी का नाम प्रधानमंत्री के लिए सामने आने पर एन॰डी॰ए॰ में दरार आ गयी है । उनकी स्वयं की पार्टी भाजपा के कई वरिष्ठ नेता उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में प्रोजेक्ट करने के ख़िलाफ़ हैं जिनमें सबसे प्रमुख नाम लालकृष्ण आडवाणी का है ।

कुछ विद्वानों का तो यहां तक कहना है कि जो ग़लती जर्मनी के लोगों ने हिटलर के साथ की, वैसी ग़लती भारतीय जनता नरेन्द्र मोदी के साथ न करे तो ही अच्छा होगा ।

नरेन्द्र मोदी एक साम्प्रदायिक व्यक्ति हैं । उनका कहना है कि वे हिन्दू के घर में पैदा हुए, अत: वे हिन्दू हैं तथा राष्ट्र से प्रेम करते हैं, अत: राष्ट्रवादी हैं । इस प्रकार कुल मिलाकर वे हिन्दू राष्ट्रवादी हैं । वे सीना ठोक कर यह ऐलान करते हैं । उनके भाषणों को सुनकर लगता है कि सिर्फ़ वही देश से प्रेम करते हैं, बाक़ी लोग, ख़ासतौर से मुसलमान जिन्हें वे मियां कहकर संबोधित करते हैं, अपने देश से प्रेम नहीं करते हैं ।

गुजरात के दंगों में सैकड़ों लोग मारे गये, जिनमें से अधिकतर मुसलमान थे । इन दंगों के लिए नरेन्द्र मोदी को पूरे देश से माफ़ी मांगनी चाहिए थी परन्तु माफ़ी मांगना तो दूर नरेन्द्र मोदी से जब तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राज धर्म का पालन करने के लिए कहा तोउन्होंने बड़ी ढिठाई के साथ उत्तर दिया कि हम यही तो कर रहे हैं । उनके लिए राज धर्म की परिभाषा क्या है ।

गुजरात में पिछले कुछ वर्षों में कई फ़र्ज़ी इन्काउंटर करवाये गये तथा यह कहा गया कि जिनका इन्काउंटर किया गया, वे गुजरात में नरेन्द्र मोदी की हत्या की साज़िश कर रहे थे । दरअस्ल ये इन्काउंटर नरेन्द्र मोदी को ख़ुश करने तथा दंगा पीड़ित लोगों की ओर से देशवासियों का ध्यान हटाने के लिए किये गये थे ।

नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के लालच में सद्भावना उपवास किये । लेकिन उनके सद्भावनावादी होने की पोल तब खुल गयी जब उन्होंने एक व्यक्ति से शाल तो ले लिया, लेकिन टोपी पहनने बल्कि टोपी लेने तक से इन्कार कर दिया ।

जो व्यक्ति किसी धर्म-विशेष के प्रतीक पर आपत्तिजनक बयान देता है तथा जो एक धर्म-विशेष के लोगों की तुलना कुत्ते के बच्चे से करता है, ऐसे व्यक्ति का एक धर्मनिरपेक्ष देश का प्रधानमंत्री बनना देश के लिए अत्यधिक चिंताजनक बात होगी ।

नरेन्द्र मोदी अपने आपको विकास पुरुष के रूप में प्रचारित कर रहे हैं । उनकी दृष्टि में कुपोषण का कारण है फ़ैशनपरस्ती, अर्थात उनके अनुसार फ़ैशनपरस्ती के चलते महिलाएं कुपोषण का शिकार हो रही हैं । अपनी नाकामी छुपाने के लिए यह एक अच्छा बहाना है । नरेन्द्र मोदी के विकास मॉडल की आलोचना कई विद्वान कर चुके हैं । हाल ही में अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने कहा है कि वे नहीं चाहते कि नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनें । इसका सीधा-सा कारण यह है कि अमर्त्य सेन, नरेन्द्र मोदी के विकास मॉडल से सहमत नहीं हैं ।

गुजरात दंगों को भड़काने के कारण अमेरिका ने नरेन्द्र मोदी को वीज़ा देने से इन्कार कर दिया । अमेरिका से भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण हैं । ऐसे में कितनी हास्यस्पद बात होगी कि एक देश का प्रधानमंत्री अपने राष्ट्र में जाना चाहे, परंतु उसे वीज़ा ही न मिले ।

उपरोक्त बातों से यह पता चलता है कि नरेन्द्र मोदी इस देश के प्रधानमंत्री बनाए जाने के लायक़ नहीं हैं । कुछ विद्वानों का तो यहां तक कहना है कि जो ग़लती जर्मनी के लोगों ने हिटलर के साथ की, वैसी ग़लती भारतीय जनता नरेन्द्र मोदी के साथ न करे तो ही अच्छा होगा ।

خطبات

مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ

موجودہ عہد کے لسانی وفکری مزاج کو سامنے رکھتے ہوئے اسلام کے بنیادی ارکان کی اہمیت وضرورت پر دل نشیں اور آسان انداز میں یقین آفریں کتاب۔

اردو

اول	[حقیقتِ ایمان]	16.00
دوم	[حقیقتِ اسلام]	16.00
سوم	[حقیقتِ صوم وصلوٰۃ]	22.00
چہارم	[حقیقتِ زکوٰۃ]	18.00
پنجم	[حقیقتِ حج و جہاد]	24.00
خطبات مکمل		125.00 [HB] 100.00 [PB]

ہندی

اول	[ایمان کی حقیقت]	19.00
دوم	[اسلام کی حقیقت]	18.00
سوم	[نماز، روزہ کی حقیقت]	23.00
چہارم	[زکوٰۃ کی حقیقت]	18.00
پنجم	[حج کی حقیقت]	17.00
خطبات مکمل		95.00

انگریزی

Fundamentals of Islam - I	28.00
Fundamentals of Islam - II	30.00
Fundamentals of Islam - III	28.00
Fundamentals of Islam - IV	26.00
Fundamentals of Islam - V	30.00
Fundamentals of Islam	30.00 PB 160.00HB

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS
NEW DELHI
مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

मीठा-मीठा कूल-कूल आइसक्रीम

❖ विद्या प्रकाश

चिलचिलाती गर्मी में रंग-रंग की ठंडी-ठंडी और मीठी-मीठी आइसक्रीम खाने का किसका मन नहीं करता। छोटे बच्चों से लेकर बड़े बुज़ुर्गों तक यह सबको समान रूप से लुभाती है। आइए प्रस्तुत है आइसक्रीम के संबंध में कुछ रोचक जानकारी।

पूरे देश में कुल आइसक्रीम की 35 प्रतिशत खपत देश के पश्चिमी क्षेत्रों गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र और गोवा में होती है। संपूर्ण देश में केवल दिल्ली और गुजरात में ही कुल आइसक्रीम की 30 प्रतिशत खपत होती है। देश में अमूल, क्वालिटी, वाडीलाल और मदर डेयरी कुछ चर्चित आइसक्रीम ब्रांडों के नाम हैं। कुल्फी और मटका कुल्फी देशी आइसक्रीम उत्पाद है जो छोटे शहरों, क़स्बों और ग्रामीण बाज़ारों में बेहद लोकप्रिय हैं तथा लोगों द्वारा काफ़ी पसन्द किये जाते हैं।



आइसक्रीम का इतिहास लगभग 2200 वर्ष पुराना माना जाता है। 200 ईसा पूर्व के आसपास चीन में चावल और दुग्ध के मिश्रण को जमाकर खाने की परंपरा का उल्लेख मिलता है। रोम का शासक नीरो (37-68 ई०) पहाड़ों पर जमी बर्फ़ को मंगाता था तथा उसमें फलों के ऊपरी हिस्से को मिलाकर चाव से खाता था। संभवत: अरबवासियों ने सर्वप्रथम आइसक्रीम के उत्पादन में बड़े पैमाने पर दूध का इस्तेमाल शुरू किया। वे फलों के बजाय चीनी का मिश्रण कर इसको मीठा करते थे।

फ़ालूदा आइसक्रीम की शुरुआत ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान से मानी जाती है। यह मुग़लों के शासनकाल में भारत आयी। 18वीं शताब्दी में ब्रिटेन और अमेरिका की रेसिपी में आइसक्रीम बनाने की आधुनिक विधि का उल्लेख मिलता है। आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार वर्ष 1744 में प्रथम बार आइसक्रीम शब्द का प्रयोग किया गया। विश्व में सर्वप्रथम आइसक्रीम पार्लर की शुरुआत वर्ष 1776 में अमेरिका में हुई। बीसवीं शताब्दी आते-आते ब्रिटेन में आइसक्रीम बनाने के आसान तरीक़े विकसित होने के कारण इसकी खपत में बढ़ोत्तरी हुई। रेफ्रिजरेटर के अस्तित्व में आने के उपरांत इसको घरों में सुरक्षित रखने का कार्य शुरू हुआ। साइकिल से लेकर इसे बेचने का चलन लंदन में सन 1923 से शुरू हुआ। जिसमें बेचने वाले डिब्बे पर अंग्रेज़ी भाषा में स्टाप मी एंड बाइ वन' लिखा होता था।

अमेरिका विश्व में आइसक्रीम का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। दूसरे स्थान पर आस्ट्रेलिया का नाम आता है। दुनिया भर में लोगों के बीच आइसक्रीम का पसन्दीदा फ्लेवर वैनिला है। एक गैलन आइसक्रीम बनाने में 12 गैलन दूध की आवश्यकता पड़ती है। अमेरिका में प्रतिवर्ष 80 करोड़ गैलन आइसक्रीम का उत्पादन होता है।

एसोचैम की रिपोर्ट के अनुसार हाल के कुछ वर्षों में आइसक्रीम बाज़ार में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि 60 प्रतिशत बिजनेस संगठित क्षेत्रों द्वारा ही होता है। इंडियन आइसक्रीम मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन के अनुसार इस क्षेत्र में सबसे ज़्यादा मांग आइसक्रीम के 500 मिली तथा एक लीटर के पैकेट की है। विभिन्न चाकलेट आइसक्रीम के अलावा अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फ्लेवर की मांग भी उपभोक्ताओं के बीच बढ़ती जा रही है।

अरहर के दाने

एक महिला उस दिन किचेन की सफ़ाई कर रही थी। पालीथीन की थैली में अरहर की दाल के पचीस-तीस खड़े दाने कब से नीचे दबे पड़े रह गये थे। इन्हें बेकार की वस्तु समझकर उसने सब्ज़ी की छीलन, आटे के चोकर तथा हरी मटर के छिलकों के साथ गली के डस्टबिन में फेंक दिया।

कबाड़ बीनने का काम करने वाली वृद्धा उधर से गुज़र रही थी। उसकी निगाह पालीथीन की थैली पर पड़ी और कूड़े में से निकाल कर उसे ले लिया। घर जाकर उसने अपनी झोपड़ी के पिछवाड़े ख़ाली पड़ी भूमि पर दानों को बो दिया। वह मन लगाकर पौधों की देखभाल करती, गोबर की खाद डालती तथा सरकारी हैंड पम्प से पानी लाकर सिंचाई करती।

समय बीतता गया। समय पर पौधे बढ़कर बड़े हो गये। उनकी कड़ी टहनियों में दानेदार फलियों के गुच्छे लद गये। जब वे मस्त हवा के झोंकों में झूमते, सूरज की धूप में पकी फलियों से संगीत का सरसराहट भरा स्वर वायुमंडल में गूंज उठता। पावेरुओं के मधुर गान से परिवेश प्रमुदित हो जाता।

वृद्धा ने फलियों को तोड़कर घर में रख लिया। फलियों में से अरहर के कई किलो दाने निकल आये थे। वह सोचने लगी–'दुनिया में कोई भी वस्तु बेकार नहीं है। जो वस्तु एक के लिए व्यर्थ है, वहीं दूसरों के लिए उपयोगी और फ़ायदेमंद है। यदि वह डस्टबिन में से उठाकर दोनों को न लाती तो वे कूड़े में पड़े-पड़े सड़कर नष्ट हो गये होते। हमें हर वस्तु के सदुपयोग का ढंग सीखना और जानना चाहिए। यह हम पर निर्भर करता है कि हम किसी वस्तु का इस्तेमाल कैसे और किस रूप में करते हैं।

● वि०प्र०



खजूर

पेड़ों में यह पेड़ है, ऊंचा पेड़ खजूर।
चढ़ना इस पर है कठिन, फल भी लगते दूर॥
ऊंचा पेड़ खजूर का, ऊंचा इसका नाम।
पोषक तत्वों से भरा, करे दवा का काम॥
रुतब, छुहारा भी कहें, कहते खजूर लोग।
खूर्मा भी कहते इसे, सब करते हैं भोग॥
सूखा मेवा बन गया, फल खजूर तू जान।
करना भोग खजूर का, चीज़ बहुत अनमोल॥
शीतकाल में मीत तुम, करना भोग खजूर।
बलदायक यह ख़ास है, गात बढ़ाये नूर॥
गुठली मीत खजूर की, औषधीय है ख़ास।
रोहित इसके चूर्ण से, हो हिचकी का नाश॥
लकड़ी मीत खजूर की, आये ईंधन काम।
बनते पंखे पात से, बने चटाई आम॥
करो छुहारा भोग तुम, मीत दूध के संग।
आये ताक़त गात में, खिज जाएं सब अंग॥
सेवन करो खजूर का, हरे गात की पीर।
बहुत शक्तिदायक सखे, ठंडी है तासीर॥

● रोहित यादव

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

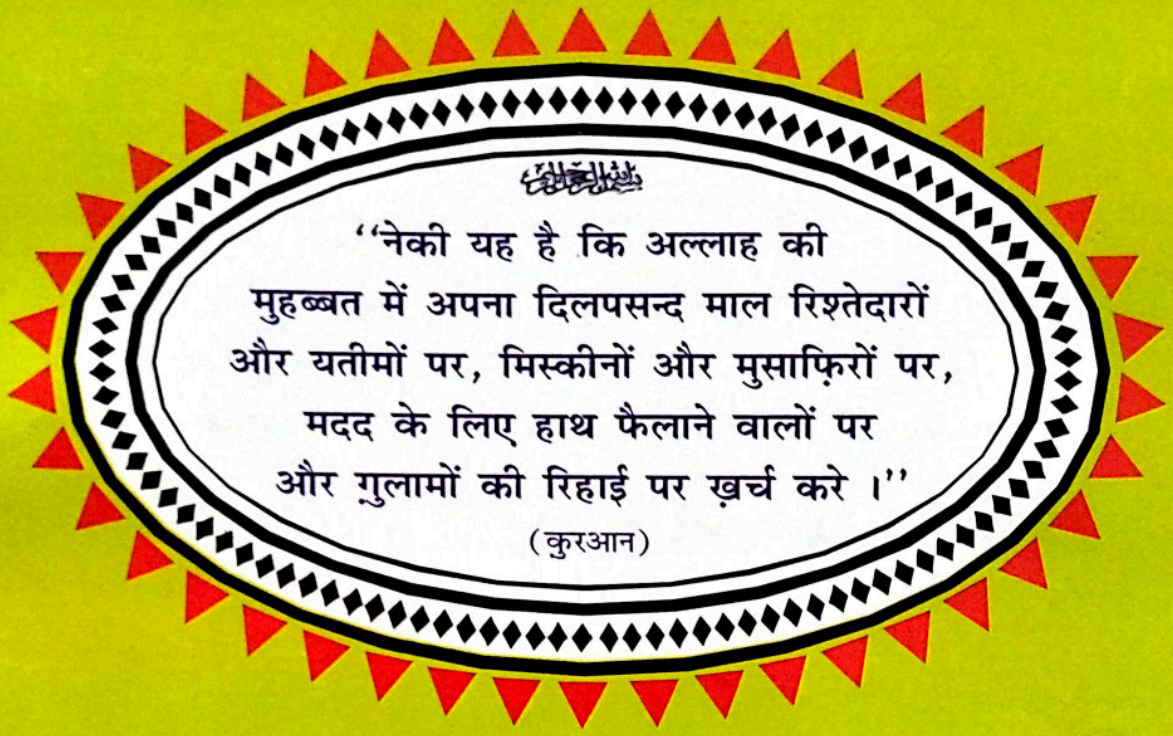

M/s SHAMA ENTERPRISES

- ✡ Industrial Civil Works
- ✡ Trading in Metal Scrap/Steel
- ✡ Manoeaoture of Plastic Granuces

Office: 3133 Aziz Manzil Chandrawaddo Fatorda Margao

Works : (Master Plast)

Plot 15/A, Sancoale Industrial Estate, Vasco

Posted on 20-21 August 2013
September 2013
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.8.2013

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

TABREZ
Cell : 9890183311

ZARINA ENTERPRISES





COMMUNICATION CENTRE

Recharge Vouchers, Mobiles, Xerox, Fax,
Computer Typing, Stationery, SIM Cards

ELECTRICAL GOODS

We Undertake all Types of Electrical Wiring Works

Next to Bandekar Petrol Pump, NH17, Karaswada,
Mapusa-GOA, Tele-Fax : (0832) 2258393